प्रकाशक : भोला प्रकाशन, वाराणसी

प्रथम संस्करण : २२०० जनवरी '६६

मूल्य : १०-००

मुद्रक : भोला प्रिंटिंग वर्क्स,

पियरी कलाँ, वाराणसी।



उच्चतम व्यक्तित्व वाले, निरंतर सजग और कठोर श्रमशील व्यक्ति का नाम है लाल बहादुर शास्त्री ।

—पण्डित जवाहर लाल नेहरू

शास्त्री जी में कठिन समस्याओं का समाधान करने तथा घोर विवाद में संलग्न परस्पर प्रतिरोधी पक्षों के बीच समन्वय का सेतु बनकर उसका अंत कराने की अद्भुत क्षमता विद्यमान है । राजनीतिक, सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में समन्वयवादी आदर्श के वे मूर्तिमान प्रतीक हैं ।

—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

०



श्रीमती ललिता देवी शास्त्री

को

सादर

निवेदन

जिन पुष्पों में गंध नहीं होती वे भले ही अपने सौंदर्य से आकर्षित कर लें लेकिन उनकी कोई उपयोगिता नहीं होती। फूल कमरे में खिलते हैं, बगीचों में मुस्कराते हैं और जंगल में फूलते हैं। फूल को खिलना ही पड़ता है। वह गंध बिखेर उठा तो सबके लिए आकर्षण का कारण बनता है। कमरे का फूल केवल आकर्षण में पलकर कमरे की शोभा बढ़ाता है। बगीचे के फूल की रक्षा माली करता है। जंगल का फूल खिलने से लेकर टूटकर बिखर जाने तक अपने पांव पर खड़ा मुस्कराता रहता है। जंगल के फूल पर लोगों की नजर कम पड़ती है। बगीचे का फूल सभी देखते हैं, कमरे का केवल कुछ लोग। बगीचे के फूल की गंध सामान्य होती है, कमरे की गंधहीन। जंगल के फूल की सुरभि रंध्र-रंध्र में व्याप्त हो जाती है। लालबहादुर शास्त्री जंगल के फूल थे।

जवाहरलाल जी ने उन्हे एक दिन जंगल का फूल कहा था। शास्त्री जी ने जवाब दिया था, 'जंगल बगीचे से अच्छा होता है। वहाँ ज्यादा आजादी है। हवा भी ज्यादा साफ रहती है। वहाँ कोई माली जिस्म को कलम करने नहीं आता और खिले फूल को कोई तोड़ता भी नहीं। "बगीचे में सैकड़ों हाथ फूल को तोड़ने के लिए झपटते हैं।'

नेहरू जी ने कहा था, 'मगर पूजा तो बगीचे के फूल से ही होती है। देवता के शीश या चरण पर फूल तो बगीचे का ही चढ़ता है और सभी को वही बगीचे का फूल मयस्सर होता है।'

शास्त्री जी ने अपने स्वभाविक हास-परिहास के साथ तार्किक उत्तर दिया था, "क्या देवता के सिर पर चढ़ाना ही सब कुछ है? केवल सुगंध बिखेरना क्या कुछ कम है? सुगंध फैलाते फैलाते फूल झर जायं, हमें तो फूल की सार्थकता यही लगती है। फूल देवताओं के लिए ही क्यों खिलें? क्या और जीव तुच्छ हैं?'

भारतीय जनजीवन के कानन में चारो ओर सुगंध बिखरनेवाला पुष्प लाल-बहादुर शास्त्री के रूप में देश के रंध्र-रंध्र में अपनी गंध बिखेर रहा था, वह अभी पूरी तरह खिल भी न पाया था। असमय अकस्मात उनका पार्थिव शरीर हमसे छिन लिया गया। यह अवसाद की वेला है। कुछ भी कहना उनकी महानता को झुठलाना है। वे इतने सहज संत और इतने विराट थे कि उनका विरोधी मित्र हो गया, मित्र आत्मीय हो गये। आत्मीय स्वजन-सखा हो गया। स्वजन के बिछुड़ने पर हृदय का बोझ सहना असंभव है। वे चले गये। उनके दिखाये गये मार्ग

पर चलकर सारी दुनियाँ में हम भारतीय राष्ट्रीयता का जयघोष भले ही कर लें परंतु उनकी दृढ़ता और निर्णय की क्षमता का अभाव देश के लिये बराबर खटकेगा। शास्त्री जी को श्रद्धांजलि देने के लिये लेखनी में शक्ति चाहिए। लेखनी की शक्ति इतिहासकार के पास होती है। भविष्य में वह शास्त्री जी के कार्यों का मूल्यांकन करेगा।

मैं तो केवल यही चाहूँगा कि उनकी स्मृति का प्रकाश मेरे पथ को प्रकाशित करता रहे। किस गली में कब जिन्दगी की शाम हो जाये, ठीक मालूम नहीं।

इतिहास लिखने और शास्त्री जी में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिये इस छोटी सी पुस्तक में देश विदेश के महापुरुषों के शोकोद्गार, पत्रों की श्रद्धांजलियाँ, शास्त्री जी के संबंध में शेष स्मृतियाँ, उनके भाषणों के प्रमुख अंश जिससे उनकी विचार धारा का पता चलता है आदि संकलित किया गया है।

इस पोथी का प्रकाशन अत्यंत शीघ्र हुआ है। इसके लिये मेरे कर्मठ शुभेच्छु सर्व श्री श्रीपतलाल दास, रामनाथ वर्मा, राजाराम श्रीवास्तव, चन्द्रशेखर मिश्र, चारुचंद्र त्रिपाठी, बैजनाथ वर्मा, श्रीनाथ सिंह, विष्णुचंद शर्मा, रमाशंकर वर्मा, बैकुण्ठ नाथ उपाध्याय, राजाराम त्रिपाठी, हरिकरण सिंह, रामजीदास अग्रवाल, रामनगीना शर्मा, विश्वंभरनाथ श्रीवास्तव, उदयशंकर दूबे शील, ललित मोहन पाण्डेय, विश्वनाथन् अय्यर, मुरलीधर, लक्ष्मण शर्मा, किशोरी रमण मिश्र, भुल्लूराम यादव आदि ने जो सहयोग दिया है उसके कारण ही यह पुस्तक इतनी शीघ्र प्रकाशित हो सकी। देश-विदेश में प्राप्त शास्त्रीजी सम्बन्धी सामग्री से मैंने उन्मुक्त सहायता ली है। सभी का मैं अत्यंत आभारी हूँ। पुस्तक में जो त्रुटियाँ हैं उन सब का दोषी मैं हूँ यदि कोई गुण है तो वह शास्त्री जी की स्मृति को चिर स्थायी रखेगा। इसी भावना से इस पोथी का प्रणयन हुआ है।

शास्त्री-अस्थि विसर्जन दिवस
२७ जनवरी १९६६ ई०

गोला दीनानाथ, —विनम्र
वाराणसी रत्नाकर पाण्डेय

अनुक्रमणिका

डा० एस० राधाकृष्णन, गुलजारी लाल नन्दा, एन० वी० पोदगोर्नी, कोसीजिन, लिण्डन बी० जानसन, ह्यूबर्ट हम्फ्री, महारानी एलिजाबेथ, हेराल्ड विल्सन, लार्ड माउन्ट बेटन, जार्ज ब्राउन, मार्शल टीटो, जनरल देगाल, कर्नल नासिर, तुंकू अब्दुल रहमान, ने विन, हिरोहितो, सातो, नाका फुनादा, महाराजा महेन्द्र, सूर्य बहादुर थापा, डडले सेनानायक, मोहम्मद अयूब खाँ, गुलाम फारूख, अलेंडर, मालवंडवाल, हबीबबोरगीबा, जाकोब वलेजविक, राष्ट्रपति दक्षिण वियतनाम, बर्नहम, जोमोकेनियाटा, पीटर स्ताम्बोलिक, उपप्रधानमंत्री यूगोस्लविया, अब्दुल मुनीम खाँ, डीन रस्क, फ्रेडरिक ल्युबके, ओरीजूने, फार्डेनेन्ड मार्कोस, सैगस्टर, शेखसावा अल सलीम अलसावा, पोल मार्टिन, जे० एन० सिंह, शाहनशाह अलहुसेन, सुलतान नासर बिन अब्दुल्ला, लार्ड एटली, ग्रिमंड, आर्नल्ड स्मिथ, आर्थरगोल्डबर्ग, राबर्ट मैंजीज, काओ, चिनचेय, सुकर्ण, हो ची मिन्ह, फर्नेंडो टेरी, गुस्तावो ओर्ड्डज, स्माइल अल अजाहरी, अब्दुल उस्मान, शर्मन कूपर, सोनसान, प्रतिनिधि पश्चिमी जर्मनी, चाओ एन लाई, सलीम अहमद सलीम, डगलस एन्समिंगर, जार्ज डब्ल्यू० एम० काम्बा, राजदूत यूगोस्लाविया, राजदूत संयुक्त अरबगणराज्य, ऊथांत, ओस्वाल्डो तोर्दो, एन्क्रूमा, सिगनोर आल्डोमोरो, जकारिया मोहिउद्दीन, जॉन फ्रीमैन, छेदी जगन, शाह रज़ा पहलवी, मकबूद हुसैन अलसफी, वेनी मोर्स, पोदरिक मैकफर्कहर, बर्नहर्ड कोएशर, चेस्टर बोल्स, राजदूत स्विटजरलैण्ड, राजदूत पोलैण्ड, पोप पाल, शाहहसन, अब्दुल रहमान, हौगी बुमेदी, सवंग वत्थन, कौंडाने, लार्ड केसी, कार्यकारी प्रधानमंत्री उगांडा, गवर्नर न्यूजीलैण्ड, जाकिर हुसैन, के० कामराज नाडार, श्रीमती इंदिरा गांधी, राजगोपालाचारी, विनोबा भावे, सम्पूर्णानन्द, गजेन्द्र गडकर, मोरार जी देसाई, जे० बी० कृपलानी, हुकुमसिंह, श्री प्रकाश, राममनोहर लोहिया, उ० न० ढेबर, जयप्रकाशनारायण, यशवन्तराव चह्वाण, सत्यनारायण सिंह, संजीव रेड्डी, जगजीवन राम, कृष्णदत्त पालीवाल, अटलबिहारी बाजपेयी त्रिभुवन नारायण सिंह, टी० टी० कृष्णामचारी, हुमायूँ कबीर, मनुभाई शाह, ओ० वी० अलग सेन, हरे कृष्ण मेहताब, भारतीय सेनाओं के अध्यक्ष, अजित प्रसाद जैन, अयोध्यानाथ खोसला, पी० वी० चेरियन, अनन्त शयनम् आयंगर, विष्णु सहाय, हाफिज मुहम्मद इब्राहिम, कर्णसिंह, सुचेता कृपलानी, विजयलक्ष्मी पण्डित, कैलाश नाथ काटजू, कमलापति त्रिपाठी, शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र', गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, सुधाकर पाण्डेय, रामसुभग सिंह, बीरबल सिंह, कृष्ण वल्लभ सहाय, द्वारिका प्रसाद मिश्र, यशवंत सिंह परमार, त्रिलोकी सिंह, गेंदा सिंह, अलगूराय शास्त्री, रामकिशन,

बसंतराव नायक, भक्तवत्सलम् , विमला प्रसाद चालिहा, प्रफुल्ल चन्द्रसेन, सदाशिव त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द रेड्डी, हितेन्द्र देसाई, निजलिङ्गप्पा, जी० एम० सादिक, दयानन्द बन्दोदकर, चरन सिंह, गोविन्द सहाय, दुर्गादास खन्ना, माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर, सिद्धराज ढड्ढा, कामाख्या नारायण सिंह, लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु', एस० एम० जोशी, नारायण गणेश गोरे, दीनदयाल उपाध्याय, डाह्या भाई पटेल, मीनू मसानी, एस० एल० किर्लोस्कर, बाबू भाई चिनाय, ई० एम० एस० नम्बूदरीपाद, प्रकाशवीर शास्त्री, नित्यनारायण बनर्जी, रामधारी सिंह दिनकर, ख्वाजा अहमद अब्बास, एन० एच० भगवती, सुरतिनारायण मणि त्रिपाठी, एम० वी० माथुर, दरबारा सिंह, कुम्भाराम आर्य, चन्द्रभानु गुप्त, विभूतिनारायण सिंह, एस० आर० दास, सी० एम० अन्नादुराई, पद्मपत सिंहानिया, सीताराम जयपुरिया, फादर वेब्रन, वी० वी० द्रविण, एल० एम० सिंघवी, फखरुद्दीन, कालिदास भट्टाचार्य, काजीलेहण्ड दोरजी, बी० पी० मौर्य, रामकृष्ण हाजे, प्रेमनाथ डोगरा, के० जी० श्रीवास्तव, सुधा राय, इन्दर सिंह, नूरुद्दीन, नानाजी देशमुख, गिरीश तिवारी, मण्डन मिश्र, सांवल दास गुप्त, देवशरण सिंह, अब्दुल कयूम अंसारी, हिरेन मुखर्जी, सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी, ब्रजमोहन, आर० के० मालवीय, वी० सी० भगवती, अली जहीर, नवल किशोर, प्रभुनारायण सिंह, कन्हैयालाल मिश्र, स्वामीराम तीर्थ, ए० सी० आइस, नाथपाई, मुल्कराज आनन्द, भुवनेश्वर प्रसाद सिनहा, जगतनारायण दूबे, जीवराज मेहता, प्रभातशास्त्री, रामनाथ, चिन्तामणि देशमुख, राजाराम श्रीवास्तव, रघुनाथ सिंह।

न्यूयार्क टाइम्स, वाशिंगटनपोस्ट, इजवेस्तिया, डेलीमेल, वाशिंगटन इवनिंग स्टार, जनरल एन्जीगर, डी वेल्ट, अल अहराम, क्रिश्चियन साइन्स मानिटर, पोर्टलैण्ड औरेगोनियन, डेनवर पोस्ट, न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून, शिकागो सन, सेण्ट लुई पोस्ट डिस्पैच, वाशिंगटन डेली न्यूज, दि टाइम्स आफ इण्डिया, पैट्रियाट, इजिप्सियन गजट, दिडेली ग्राफिक, बोरबा, स्टेट गार्टर, दि हांगकांग टाइगर स्टैण्डर्ड, दि साउथ चाइना मार्निंगपोस्ट, वकिंग पीपुल्स डेली, पोलिटिका, सद्युत्श जाइतुंग, दि घानाइयन टाइम्स, बगदाद न्यूज, दि इण्डो नेशियन हेराल्ड, डान, डेली न्यूज, स्टेट्स टाइम्स, बाल्टी मोर सन, दि नेशन, Bomer Rundscnan, Handels Blatt, जनरल एन्जीइगर, आज, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, स्वतंत्रभारत, प्रदीप, दिनमान, ब्लिट्ज, साप्ताहिक हिंदुस्तान, जनयुग, प्रविदा।

एस० वेग्लोव, वी० आर्दातोवस्की, प्रकाशवीर शास्त्री, वेनीप्रसाद गुप्त, अलगूराय शास्त्री, अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार, रामकुमार वर्मा, अक्षयकुमार जैन, सादिक अली, हेमवतीनंदन बहुगुना, त्रिभुवन नारायण सिंह, कैफी आजमी, चन्द्रशेखर मिश्र, परिपूर्णानन्द वर्मा।

शान्ति के अमर शहीद
श्री शास्त्री

हा ! हन्त !!

ग्यारह जनवरी की रात आधी बीत चुकी थी। भिनसहरा हो रहा था। संसार निद्रालीन था। लगभग ३॥ बजे फोन की घंटी टनटना उठी। पी० टी० आई० से फोन था, 'शास्त्री जी नहीं रहे।' मन में अविश्वसनीय भावना उठी। शास्त्री नाम के अनेक परिचित नगर में हैं और उन्हीं में से कोई चल बसा, परंतु सत्य पल भर में सम्मुख आ गया। रेडियो ने प्रातःकाल की वेला में घोर अंधकार फैला देने वाला समाचार दिया, 'भारत के प्रधान मंत्री शास्त्री जी ताशकंद में रात्रि में तीन बजकर पन्द्रह मिनट पर चल बसे।'

नेहरू जी का निधन हुआ था तब देश का विवेक लालबहादुर शास्त्री के रूप में उनकी कमी पूरा करने के लिये प्रधान मंत्री बनकर हमारे सामने आया। शास्त्री जी के न रहने पर इंदिरा जी भारत की प्रधानमंत्री हुईं। कोई स्थान कभी खाली नहीं रहता। उसकी पूर्ति होती रहती है। शास्त्री जी ने कठिनाई की इन घड़ियों में जिस राष्ट्रीय भावना से सारे देश का नेतृत्व किया वह इतिहास में अमर रहेगा। इतिहास दरवाजे पर बार-बार नहीं खड़ा होता। शास्त्री जी के प्रधानमंत्रित्व काल में उत्तर से होने वाले आक्रमणों का पहली बार प्रतिरोध किया गया। जिस शौर्य और त्याग से सारा राष्ट्र संमान की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध हो गया था, आवश्यकता पड़ने पर उसी भाँति हृदय और विवेक की आवाज से प्रेरित होकर शान्ति की वार्ता करने के लिये भी भारत शास्त्री जी के नेतृत्व में तैयार हुआ। ताशकंद जाने के पूर्व शास्त्री जी ने जिस उद्देश्य-पूर्ति की घोषणा की थी उसे कोसीज़िन की मध्यस्थता में राष्ट्रपति अयूब खाँ के संयुक्त हस्ताक्षर से उन्होंने पूरा कर दिया। ताशकंद दुनिया के इतिहास में शान्ति का स्वर्ग माना जायगा। वहाँ की वार्ता का क्या परिणाम होगा यह राजनीतिज्ञ लोग जानें, लेकिन इतना निश्चित है कि जिस महान प्रेरणा से यह कार्य किया गया, उससे बहुत दिनों तक शान्ति का वातावरण संसार में कायम रहेगा। हमारे राष्ट्र की जो हानि हुई उससे सभी परिचित हैं। शास्त्री जी ने जिस भाँति सारे देश के हृदय में प्रवेश पा लिया था उस तरह गहराई में पैठ पाना औरों के लिये बहुत कठिन होगा। ताशकंद-घोषणा में 'बल का प्रयोग न करने' की शर्त शास्त्री जी की सबसे बड़ी विजय है। सचमुच यदि दोनों देश अपनी राजनीतिक कुंठा को ताख पर रख कर सोचें तो ईमानदारी की बात है कि हम शान्ति चाहते हैं। ताशकंद घोषणा का शब्द-बद्ध विवरण यह है—

"भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति ताशकंद सम्मेलन में भारत और पाकिस्तान के वर्तमान सम्बन्धों पर विचार-विमर्श के बाद दोनों देशों के बीच सामान्य तथा शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को फिर से स्थापित करने तथा दोनों जनगण के बीच सद्भावना तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बढ़ाने के अपने दृढ़ निश्चय की घोषणा करते हैं। वे भारत और पाकिस्तान की ६० करोड़ जनता के कल्याण के लिए इन उद्देश्यों की प्राप्ति को बहुत ही महत्वपूर्ण समझते हैं।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हैं कि राष्ट्र संघ के घोषणापत्र के अनुकूल दोनों पक्ष भारत और पाकिस्तान के बीच अच्छे पड़ोसियों जैसा सम्बन्ध बनाने के लिए सभी प्रयास करेंगे। वे उक्त घोषणापत्र के प्रति अपने दायित्व की फिर से पुष्टि करते हुए यह ऐलान करते हैं कि विवादों के हल के लिए शक्ति का प्रयोग न करके उन्हें शान्तिपूर्ण ढंग से हल करेंगे। उन्होंने यह विचार किया कि दोनों देशों के बीच तनाव जारी रहने से उनके क्षेत्र में, खासकर भारत-पाकिस्तान उपमहादेश में शान्ति के हितों को और निस्सन्देह रूप से भारत और-पाकिस्तान के जनगण के हितों को कोई लाभ नहीं पहुंचता। इसी पृष्ठभूमि में जम्मू तथा कश्मीर के प्रश्न पर विचार-विमर्श हुआ और दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी स्थिति स्पष्ट की।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हुए कि दोनों देशों की सशस्त्र सेनाएं २५ फरवरी १९६६ तक ५ अगस्त १९६५ के पहले की स्थिति पर वापस चली जायेंगी तथा दोनों पक्ष युद्ध-विराम रेखा पर युद्ध-विराम की शर्तों का पालन करेंगे।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हुए हैं कि भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध एक-दूसरे के अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप न करने के सिद्धान्त पर आधारित होंगे।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हुए हैं कि दोनों पक्ष एक-दूसरे के देशों के विरुद्ध प्रचार बंद करेंगे तथा ऐसे प्रचार को बढ़ावा देंगे जिससे दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का विकास हो।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हुए हैं कि पाकिस्तान-स्थित भारत के हाई कमिश्नर तथा भारत-स्थित पाकिस्तान के हाई कमिश्नर अपने-अपने पदों पर वापस जायेंगे तथा दोनों देशों के राजनयिक दूतावास फिर से अपने सामान्य काम करने लगेंगे। राजनयिक सम्बन्धों के मामलों में दोनों सरकारें १९६१ के वियना समझौते का पालन करेंगी।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हुए हैं कि भारत तथा पाकिस्तान के बीच आर्थिक, व्यापारिक संचार सम्बन्धों को फिर से स्थापित करने की दिशा में कदम उठाने, साथ ही भारत और पाकिस्तान के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की तथा भारत और पाकिस्तान के बीच वर्तमान समझौतों पर अमल करने के लिए पग उठाने पर विचार किया जायेगा।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हुए हैं कि वे अपने सम्बन्धित अधिकारियों को युद्धबन्दियों की अदला-बदली के सिलसिले में आदेश जारी करेंगे।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हुए हैं कि दोनों पक्ष विस्थापितों की समस्या, तथा अवैध रूप से बसे हुए लोगों को निकाल बाहर करने की समस्याओं से सम्बन्धित प्रश्नों पर विचार-विमर्श जारी रखेंगे। वे इस पर सहमत हुए कि दोनों पक्ष ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करेंगे ताकि लोगों का देश छोड़ कर चला जाना रुके। वे इस बात पर भी सहमत हुए कि संघर्ष के दौरान दोनों पक्षों द्वारा एक-दूसरे की जब्त की गयी सम्पत्ति की वापसी पर विचार-विमर्श करेंगे।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हुए हैं कि दोनों देशों के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्धों के प्रश्न पर उच्चतम तथा अन्य स्तरों पर वार्ता का क्रम जारी रहेगा। दोनों पक्षों ने इस बात की आवश्यकता महसूस की कि ऐसी संयुक्त भारत पाकिस्तान कमेटियाँ बनायी जायें जो अपनी सरकारों को रिपोर्ट देंगी जिससे कि वे आगे कदम उठाने के सम्बन्ध में निर्णय कर सकें।

भारत के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति सोवियत संघ के नेताओं, सोवियत सरकार और व्यक्तिगत रूप से सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद् के अध्यक्ष के प्रति इस सम्मेलन के आयोजन में उनकी रचनात्मक, मैत्रीपूर्ण तथा उदात्त भूमिका के लिए अत्यधिक सराहना करते हैं और हार्दिक आभार प्रकट करते हैं, जिसके नतीजों से दोनों पक्षों के लिए संतोषप्रद परिणाम प्राप्त हुए। वे उजबेकिस्तान की सरकार तथा उसकी मैत्रीपूर्ण जनता के महान स्वागत और उदारतापूर्ण आतिथ्य के लिए उनका दिल से शुक्रिया अदा करते हैं।

वे सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष को इस घोषणा के साक्ष्य के लिए आमंत्रित करते हैं।

भारत के प्रधानमंत्री	पाकिस्तान के राष्ट्रपति
लाल बहादुर शास्त्री	**मुहम्मद अयूब खाँ**

शास्त्री जी का जन्म २ अक्टूबर १९०४ को मुगलसराय की एक कालनी में हुआ था। उनके पिता श्री शारदा प्रसाद श्रीवास्तव सामान्य वर्ग के प्राणी थे, परंतु जाति में उनका अत्यधिक सम्मान था। वे एक अध्यापक थे। फिर उत्तरप्रदेश के राजस्व विभाग में क्लर्क का काम करते रहे। शास्त्री जी जब १॥ वर्ष के अबोध शिशु थे तभी उनके सिर से पिता की छाया उठ गई। संरक्षक का अभाव नवयुवकों को पथभ्रष्ट कर देता है, परंतु जिनमें अपने पैरों पर खड़े होने की ताकत होती है वे स्वयं अपना रास्ता चुन लेते हैं। शास्त्री जी की मां रामदुलारी देवी अपने जीवन की दोपहरी में विधवा हो गईं। वे पूजा-पाठ में अपना अत्यधिक समय लगाती थीं। इसके अतिरिक्त वे लालबहादुर का जिन्हें 'नन्हें' नाम से बचपन में पुकारा जाता था, भरण पोषण भी करती रहीं। उनका अधिकांश समय अपने पिता के घर बीता। बचपन से ही शास्त्री जी में आत्मविश्वास जागृत हो गया था। उनके बचपन की कई कहानियां बड़ी प्रसिद्ध हैं। एक बार इलाहाबाद के मेले में उनकी मां स्नान करने गईं। उस समय शास्त्री जी दो वर्ष के बच्चे थे। गंगा पार करते समय बच्चा गंगा की धारा में गिर पड़ा, परंतु वह दूसरे नाव के एक किसान की टोकरी में गिरा। मां बच्चे के लिए बेहाल थी और किसान अकस्मात शिशु पाने से आह्लादित। चार दिन के बाद वह बच्चा वापस मिला। दूसरी किंवदन्ती यह है कि शास्त्री जी की मां बच्चे के साथ घाट पर नहा रही थीं। भीड़ का झोंका आया और बच्चा सीढ़ी पर रखी किसी किसान की टोकरी में गिर पड़ा। चार दिन के बाद किसी प्रकार वह वापस मिला।

शास्त्री जी का बचपन और सारा जीवन अत्यंत सादा और संघर्षपूर्ण था। वे कभी-कभी बनारस में पढ़ते समय गंगा में तैरकर आया जाया करते थे। उनकी शिक्षा हरिश्चन्द्र विद्यालय, काशी नागरी प्रचारिणी सभा और काशी विद्यापीठ में हुई थी। वे शुरू से ही अत्यंत सहज, सीधे, संकोची, दृढ़, तेजस्वी और संवेदनशील स्वभाव के व्यक्ति थे। पढ़ते समय शास्त्री जी अपने ननिहाल में ही रहते थे। भरा पूरा मध्यमवर्गीय परिवार था। उन्हें घर भर का अमित स्नेह भी मिला था। वे दस वर्षों तक अपने नाना श्री हजारी लाल के घर पर रहकर छठी कक्षा उत्तीर्ण हुए। फिर वे वाराणसी में अपने मौसा रघुनाथ प्रसाद के यहां रहकर हाई स्कूल में प्रविष्ट हुए। रघुनाथ प्रसाद एक आदर्श गृहस्थ थे। मौसा के घर के संस्कार-शील प्रभाव, अपने मित्रों के संसर्ग, गुरुजनों की कृपा तथा स्वाध्याय और चिंतन की उद्दाम आकांक्षा के कारण सीधे सादे से प्रतीत होनेवाले शास्त्री जी का मनोबल अत्यंत उच्च और निश्चय करने की शक्ति बचपन से ही अलौकिक थी। उन्होंने बचपन में हरिश्चन्द्र कालेज में अध्ययन के साथ साथ अभिनय भी किया था।

माधव शुक्ल के प्रसिद्ध नाटक 'महाभारत' में उन्होंने लोहार की भूमिका की थी। उनके सहपाठियों मे त्रिभुवननारायण सिंह, बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर, अलगू राय शास्त्री आदि प्रमुख है। उन्होंने बचपन से ही राष्ट्र की गुलामी का अनुभव किया था और उसके निवारण के लिए गांधी जी के नेतृत्व में जिन लोगों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष किया है; उनमें लालबहादुर जी भी प्रमुख थे। काशी विद्यापीठ केवल शिक्षालय ही नहीं अपितु वर्तमान नेताओं के बौद्धिक सृजन का भी केंद्र विगत कई दशाब्दियों से रहा है। लालबहादुर जी के गुरुजनों मे डा० संपूर्णानंद, प्रेमचंद, डा० भगवानदास जी, श्री प्रकाश एवं आचार्य वीरबल सिंह प्रमुख है। पं० निष्कामेश्वर मिश्र जैसे सफल अध्यापकों ने अपनी मंत्र शक्ति से लालबहादुर जी और उनके मित्रों का संस्कार किया था। गुरुजनों के संसर्ग के कारण ही शास्त्री जी अपने अदम्य नीतिवत्ता और धैर्य के साथ उस शीर्ष स्थान पर पहुँचे जहां पहुँचने की कल्पना उन्होंने अपने प्रारंभिक जीवन में कदापि भी न की थी। वे कौन से गुण थे जिनके कारण शास्त्री जी जीवन भर पं० जवाहर लाल नेहरू और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन के समान प्रियपात्र रहे? दोनों भारत के दो ध्रुव थे। निश्चित रूप से शास्त्री जी सबकी सुनते थे कहते किसी की किसी से नहीं थे। वे अमल करते थे और जब भी जैसा निश्चय कर लेते थे उसी पर अडिग रहते थे। जब देश में स्वराज्य का आन्दोलन चल रहा था, तब देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर लालबहादुर जी ने काशी में लोकमान्य तिलक का दर्शन किया और महात्मा गांधी के आह्वान पर काशी के जिन नवयुवक-नेताओं ने अपने सर्वस्व बलिदान का कार्य प्रारंभ किया था उनमें लालबहादुर जी भी थे। शास्त्री जी ने दर्शन का विशेष अध्ययन किया था। कबीर से वे विशेष प्रभावित थे। उनका जीवन सादा था। विचारों मे वे उच्च थे और आजीवन दिये गये उत्तरदायित्व के प्रति दत्तचित्त लगन से उन्होंने सभी कार्य किया। प्रदर्शन और दिखावा ये दो ऐसे अवगुण है, जिनके लगने पर बरबादी की आदत पड़ जाती है। शास्त्री जी इन दोनों आदतों से बहुत ही दूर थे। सन् १९२१ में उन्होंने ढाई वर्ष की जेल यात्रा की और जेल से छूटने के बाद पुनः विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि प्राप्त किया।

सन् १९२६ में शास्त्री जी ने 'सर्वेन्ट्स आफ पिपुल्स सोसाइटी, की आजीवन सदस्यता स्वीकार कर ली और इलाहाबाद चले आये। यहाँ उन पर लाला लाजपतराय का भी प्रभाव पड़ा। प्रयाग को ही उन्होंने अपना कार्य क्षेत्र बनाया। २३ वर्ष की आयु मे मिर्जापुर में ललिता देवी से उनका पाणिग्रहण हुआ। उनके चार पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। शास्त्री जी इलाहाबाद कार्पोरेशन के सदस्य भी चुने गये थे और सात वर्षो तक प्रयाग की जनसेवा भी उन्होंने की थी। इलाहाबाद इंप्रूमेंट

ट्रस्ट के सदस्य के रूप में तथा सन् ३० से ३६ तक इलाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री के रूप में किया गया उनका कार्य गौरवपूर्ण है। वे दो बार उत्तरप्रदेश कांग्रेस समिति के मंत्री भी चुने गये थे। सन् १९३७ में वे उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गए थे। सन् १९४१ में वे फिर गिरफ्तार हो गये। इस प्रकार भारत की स्वाधीनता प्राप्ति तक उन्होंने आठ बार जेल की यात्रा की और इस दौरान उन्होंने ९ वर्ष का जीवन सीकचों के अन्दर बिता दिया। वहीं उन्हें चिंतन-मनन का पूर्ण अवकाश मिला।

सन् १९४६ में उत्तर प्रदेश विधान सभा में चुने जाने के बाद शास्त्री जी तत्कालीन मुख्यमंत्री पं० गोविंद वल्लभ पंत के संसदीय सचिव भी रहे। सन् १९४७ में उत्तर प्रदेश के पंत-मंत्रिमंडल में उन्हें गृह और यातायात का मंत्री नियुक्त किया गया और चार वर्षों तक उन्होंने उत्तर प्रदेश की अविस्मरणीय सेवायें की। सन् १९५१ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का महामंत्रित्व ग्रहण करने के लिये उन्हें अपने मंत्री पद से त्यागपत्र देना पड़ा। सन् १९५२ के आम चुनाव के बाद वे राज्य सभा में चुने गए। सन् १९५२ में वे केंद्रीय रेल और परिवहन मंत्री नियुक्त किये गये और सन् १९५६ में वे इस पद से विरक्त हो गए। पुनः सन् १९५७ में वे इलाहाबाद से लोकसभा में चुने गये और सन् १९५८ के मार्च तक संचार और परिवहन मंत्री के पद पर बने रहे। आप ने केंद्रीय वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री के पद का भी सफल संचालन किया था। ४ अप्रैल सन् १९६१ को पंत जी के देहान्त के कारण शास्त्री जी को केंद्रीय गृहमंत्री का भार संभालना पड़ा। भारत के गृहमंत्री के पद पर पंत जी के पथ पर चलकर उन्होंने सफलतापूर्वक देश की गृह समस्याओं का सफल निराकरण किया। सन् १९६२ के आम चुनाव में इलाहाबाद निर्वाचन क्षेत्र से वे पुनः लोकसभा में चुने गये। सन् १९६३ के अगस्त में कामराज योजना के अंतर्गत कांग्रेस का कार्य करने के लिये उन्होंने मंत्रिमंडल से स्तीफा दे दिया। नेहरू जी अस्वस्थ रहते थे इसलिये लालबहादुर जी के कंधों पर पुनः बिना किसी विभाग का भार सौंपे उन्हें सीधे सीधे नेहरू जी को हर प्रकार से मदद करने के लिये मंत्रिमंडल में नियुक्त किया गया। वे नेहरू जी के सबसे प्रिय विश्वासपात्र सहयोगियों और सहायकों में थे। उनके साथ रहकर शास्त्री जी ने विश्व राजनीति की अनेक समस्याओं का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त किया था और उन्होंने अपने को इस योग्य साबित किया था कि प्रधान मंत्री के रूप में उन्हें चुनकर देश की जनता उनको अपना विश्वासभाजन बना सके।

नेहरू जी की मृत्यु के बाद भारत का प्रधानमंत्री कौन होगा इस समस्या का हल सारे देश ने शास्त्रीजी के रूप में प्राप्त किया। उन्हें भारत का प्रधानमंत्री

९ जून १९६४ को चुना गया। उसी दिन उन्होंने मंत्रिपद की शपथ ली। उनका व्यक्तित्व महान था। उनमें अगणित विशेषताएँ थीं। वे शुद्ध आचरण वाले, दृढ़ संकल्प शक्ति के सीधे साधे अध्यवसायी महामानव थे। अपना संतुलन वे कभी नहीं खोते थे। कभी किसी ने शास्त्री जी को क्रोधित होते हुए भी देखा ऐसा नहीं सुना गया। वे कठिन परिस्थितियों में विवेक से काम लेनेवाले थे और सत्य के लिये पीछे हटने और आगे बढ़ने में उन्हें जरा भी संकोच नहीं था। वे अध्यनप्रिय व्यक्तियों में थे। सहृदयता उनका आभूषण था। घोर गरीबी और अभाव में पलकर भी उन्होंने कभी दरिद्रता का साथ नहीं किया था। वे गरीबों के सच्चे हमदर्द और पिछुड़े हुए लोगों को आगे लाने की ताकत रखते थे। अपने १९ महीने के भारत के प्रधानमंत्रित्व काल में उन्होंने अपनी अग्नि-परीक्षा सारी दुनिया के सामने दिया। वे सवा सोलह आना खरे उतरे। 'गाली का जवाब गोली से देने वाला' यह नन्हा-आदमी मानवता की अलौकिक सिद्धि था। वह राष्ट्र की वास्तविक शक्ति और एकता का प्रतीक था। संसद में या जनता में कहीं भी उसका सम्मान लोगों के हृदय में सुरक्षित था। विरोधियों की बात सुनने में शास्त्री जी कभी भी नहीं घबड़ाते थे। विरोधियों का आह्वान कर उनकी बातों को अमल में लाना और उनमें जो काम की बातें हो उन्हें कार्यान्वित करना शास्त्री जी के लिये अत्यंत सहज कार्य था। वे जानते थे कि गरीबी किसे कहते हैं। गरीबी की जिन्दगी जीने वालों ने शास्त्री जी ने के रूप में अपना सच्चा नेता प्राप्त किया था। शास्त्री जी कुशल और दृढ़प्रतिज्ञ थे। उन्होंने यह उपाय ढूंढ़ निकाला कि देश के प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रश्न पर चाहे वह खाद्य समस्या हो या कच्छ या कश्मीर सब पर सारे देश की राय जानी जाय। जब पाकिस्तान से युद्ध ठन गया तो उनकी असाधारण योग्यता, धैर्य, साहस और दृढ़ता का परिचय सारे संसार ने पाया। ताशकंद वार्ता में उन्होंने दिखा दिया कि सारी दुनियां में शांति कायम हो इसके लिये वे अपने प्राणों का उत्सर्ग कर सकते हैं। जिस लगन और त्याग के साथ उन्होंने भारत की निःस्वार्थ सेवा की है वह कभी भी धुंधली नहीं की जा सकती। जब तक भारत रहेगा, यहां के रहनेवाले सदा अपनी स्मृति में उनके अल्पकालिक प्रधानमंत्रित्व की ऐतिसासिक याद संजाये रहेंगे। उनके प्रधानमंत्रित्व काल भी कुछ प्रमुख तिथिवद्ध घटनायें यह हैं—

१९६४

२ जून : श्री लालबहादुर शास्त्री कांग्रेस संसदीय दल के नेता निर्वाचित। श्री नेहरू की घरेलू और विदेश-नीति का अनुगमन करने की इच्छा व्यक्त की।

९ जून : प्रधान मन्त्री के पद की शपथ ली।
१५ अक्तूबर : लाल किले में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। अपने भाषण में देश में अनाज की उपज बढ़ाने का आन्दोलन चलाने पर जोर दिया।
२ अक्टूबर : जन्म-दिन पर हजारों देशवासियों द्वारा शुभ-कामनाएँ।
४ अक्तूबर : शास्त्री-टीटो वार्ता।
६ अक्तूबर : शास्त्री-नासिर संयुक्त विज्ञप्ति।
८ अक्तूबर : तटस्थ सम्मेलन में भाषण। शांति के लिए पांच-सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत।
१२ अक्तूबर : कराची में श्री अयूब से बातचीत।
२६ अक्तूबर : मुख्य मन्त्रियों के सम्मेलन में भाषण। मुनाफाखोरों के लिए कठोर व्यवस्था पर जोर।
२७ अक्तूबर : राष्ट्रीय विकास परिषद की २१वीं बैठक का उद्घाटन।
३ दिसम्बर : लंदन में ब्रिटिश प्रधान मन्त्री से बातचीत।

१९६५

२२ जनवरी : ट्राम्बे में प्लूटोनियम संयंत्र का उद्घाटन।
२४ जनवरी : शरावती योजना की पहली बिजली इकाई का उद्घाटन।
११ फरवरी : शास्त्री-नेविन संयुक्त विज्ञप्ति।
१८ फरवरी : अफगानिस्तान के प्रधान मन्त्री से दिल्ली में वार्ता।
२३ अप्रैल : नेपाल की सद्भावना यात्रा पर रवाना।
१२ मई : रूस की आठ दीवसीय यात्रा पर मास्को पहुँचे।
१० जून : कनाडा की यात्रा पर ओटावा पहुँचे।
१७ जून : राष्ट्र मन्डल सम्मेलन में भाग लेने लंदन पहुँचे।
२७ जून : श्री नासिर से काहिरा में बातचीत।
८ जुलाई : पाकिस्तान से युद्ध-वर्जन का प्रस्ताव दोहराया।
३० जुलाई : ब्रियानी में श्री टीटो से भेंट।
३ अगस्त : श्री शास्त्री तथा श्री मिल्टन की बातचीत।
१४ अगस्त : राष्ट्र के नाम संदेश में कहा कि ताकत का जवाब ताकत से दिया जायेगा।
१२ सितम्बर : ऊ थांत से बातचीत की।
१८ सितम्बर : चीन के अल्टीमेटम को अस्वीकृत किया।
२४ सितम्बर : रूस के इस आमंत्रण को स्वीकार किया कि श्री शास्त्री और श्री अयूब की शिखर वार्ता हो।

२ अक्तूबर : सादगी से जन्म-दिन मनाया।
११ अक्तूबर : आकाशवाणी से संदेश में किसानों से उपज बढ़ाने की अपील की।
१३ अक्तूबर : अग्रिम मोर्चों तथा हवाई अड्डों पर गये।
१५ अक्तूबर : स्यालकोट क्षेत्र तथा कुछ हवाई अड्डों का निरीक्षण किया।
१९ अक्तूबर : औरंगाबाद में श्री शास्त्री ने कहा कि भारत की नीति परमाणु बम बनाने की नहीं है।
२४ अक्तूबर : जोधपुर में जेल अस्पताल देखा।
२३ नवम्बर : राज्य-सभा में बताया कि ताशकंद में श्री अयूब से बातचीत करने को तैयार हैं।
२७ नवम्बर : नेपाल के महाराजा से बातचीत का आरम्भ।
१० दिसम्बर : लोकसभा में आगामी विदेश-यात्रा के कार्यक्रम की घोषणा। २० दिसम्बर से २३ दिसम्बर तक बर्मा में रहेंगे, ४ जनवरी, १९६६ को ताशकंद-वार्ता में भाग लेंगे और १ फरवरी १९६६ को अमेरिका में श्री जानसन से बात करेंगे।
२० दिसम्बर : रंगून में श्री शास्त्री तथा श्रीमती शास्त्री का भारी स्वागत
२१ दिसम्बर : रंगून में शास्त्री-नेविन बातचीत।

१९६६

३ जनवरी : श्री अयूब खां से बातचीत के लिए ताशकंद रवाना।
१० जनवरी : ऐतिहासिक ताशकन्द समझौते पर हस्ताक्षर किए।
११ जवरी : निधन।

सोमवार की शाम बड़ी सुहावनी थी। सारा देश रात रेडियो पर सुन चुका था कि शास्त्री जी और अयूब खां ने एक समझौता वार्ता पर संयुक्त हस्ताक्षर किया है। इस संधि के बाद भारत और पाकिस्तान आपस में बल का प्रयोग नहीं करेंगे और दोनों आपस में एक अच्छे पड़ोसी की तरह व्यवहार करेंगे। इस मंगल घोषणा के बाद रात्रि में ही शान्ति का कपोत उड़ गया। ताशकन्द में मातम छा गया। कोसीज़िन और अयूब खां ही नहीं सारी दुनियां इस आकस्मिक मौत पर दातों तले अंगुली दबाये मौत के बाद की सारी रस्मअदायगी करती रही। कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि शान्ति के इस अमर सपूत का निधन दूसरी धरती पर हुआ। अपने देश के प्रति उनकी इतनी अधिक ममता थी कि मंगल की सुबह वे जीवित नहीं लौटे, बल्कि उनकी नश्वर काया हवाई अड्डे पर उतरी। हवाई अड्डे के बीच जितने भी रास्ते थे सब पर जनता की भीड़ थी। मोटर बस, स्कूटर, सायकिल,

पैदल खचाखच भीड़ घिरी हुयी थी। शास्त्री जी ने इसी भांति की भीड़ को रास्ते पर चलना सिखाया था, शायद इसीलिए अपने नेता के मातम में शामिल होने के लिए जो जहां भी था वहीं दृष्टि लगाये हवाई जहाज आने की प्रतीक्षा कर रहा था। शास्त्री जी का शव लेकर विमान २ बजकर ४० मिनट पर पालम हवाई अड्डे पर उतरा। सभी महत्वपूर्ण व्यक्ति, पत्रकार और दूर-दूर से आये हुए मुख्यमन्त्री आदि विमान की प्रतिक्षा कर रहे थे। पालम का हवाई अड्डा कभी इतनी भीड़ किसी भी नेता के आगमन पर नहीं जुटा सका था। आज केवल नरमुंड, शोक में डूबी हुई आंखें और मातमी चेहरा सारे वातावरण में दिखाई पड़ रहा था। रूसी ल्यूसिन विमान समय को चीरकर पालम हवाई अड्डे पर स्थिर हो गया। विमान का द्वार खुलने पर शोक में सिर झुकाये स्वर्ण सिंह बाहर आये, फिर प्रतिरक्षा मन्त्री यशवंतराव चाह्वाण और बहुत से अधिकारी और सैनिक अधिकारी लोग भी विमान से निकले। सभी चेहरों से उदासी का धुआँ उड़ रहा था। सभी शोक की गंगा में नहाए हुए थे। शास्त्री जी के सबसे बड़े पुत्र श्री हरिकृष्ण को सहारा देकर विमान में ले जाया गया। वहीं खड़े होकर उन्होंने करुण विलाप किया। रक्षा मन्त्री चाह्वाण उस करुण विलाप से स्वयं विगलित हो गये। जिस क्षण शास्त्री जी का शव स्टेचर पर रखकर बाहर लाया गया उस समय चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ था। अखबार के फोटोग्राफरों के सामने भी दुविधा थी; इस मौन को वे तोड़ने के भागीदार क्यों बनें? शास्त्री जी के निधन का शोक चतुर्दिक एकाग्र होकर पालम हवाई अड्डे पर केंद्रित हो गया था। फौजियों ने उनके शव को सलामी दी। तीनों सेना के अध्यक्षों ने शव की अगवानी करके रश्म अदायगी की। राष्ट्रपति, मन्त्रिमण्डल के सदस्यगण, मुख्य मन्त्रियों और विरोधी दल के कर्णधारों ने आंसू से भीगी आंखों से प्रधान मन्त्री के शव का शान्तिपूर्वक सम्मानपूर्ण अभिवादन किया। फूल मालाओं से सजी फौजी गाड़ी में रखकर शव १०, जनपथ की ओर चला।

सुबह सुबह जन नायक का शव आ रहा था। यह शव ऐसे जन नायक था जो बचपन में गुनगुनाया करता था—

पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार।
और अगर मर जाइये तो, नौहारवाँ कोई न हो।

आज उसके शव के चतुर्दिक जनरव था। प्रश्न ही अकेलेपन का नहीं उठता। मृत्यु की भाषा मरने के बाद ही जानी जा सकती है। प्रधान मन्त्री के निवास स्थान पर जन-समुद्र उमड़ पड़ा था। उसे रोकने का अथक प्रयत्न सैनिक अधिकारी कर रहे थे। सादे लिबास में चारों ओर दिखाई पड़नेवाले चेहरे उल्लासहीन और शोक में तल्लीन

थे। आग पर चलकर शास्त्री जी ने भारत का प्रधानमंत्रित्व किया था। वे गंगा के देश से वोल्गा की नगरी गये थे। वहीं पर विश्व की शान्ति के लिए उन्होंने चिर-शांति का प्रसन्नतापूर्वक आलिंगन किया। ताशकन्द में भारत ने अपने नेतृत्व की पूरी कीमत चुकाई। शास्त्री जी की पत्नी श्रीमती ललिताशास्त्री का चिर प्रतीक्षामत से तप्त शरीर, बेतरतीब बिखरे बाल, अंगारे की धुंधलिका सी मिट रही सिन्दूर रेखा, उदास चूड़ियाँ, और बेसुध आँखें किसी को रुलाने के लिये काफी थीं। उनका सुहाग लुट गया। उनके साथ ही सारे देश का भाग्य-विधाता और नेता सो गया था। आँखों के आँसू आँखों में जमे रह गये। शब्द दुःख की अभिव्यक्ति करने में असफल रहे। ललिता देवी शास्त्री वीर-पत्नी सिद्ध हुईं। अपने पति को उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न होकर विदा किया था। आज अपने अधिकारों का सर्वस्व समर्पण कर वह इष्टदेव के पूजा-सी म्लान वैधव्य का आलिंगन कर रही थीं। विश्व में शांति का पताका फहराने वाला यह नायक स्वयं विदा हो गया और अशांति की झुलसती स्मृतियां हृदय को विदीर्ण करने के लिये छोड़ गया है। अब्दुल गफ्फार खां के भेजे गये नरगिस के फूल शव के पास महक रहे थे। शास्त्री जी का शव उस नरगिस के फूल के स्पर्श से कैसा दर्द दे रहा था। नरगिस रो रही थी—

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

आज वह दीदावर प्राणदाता नहीं रहा। चारों ओर से लोग पार्थिव काया के दर्शन के लिए टूटते चले आ रहे थे। भीषण जय और आर्त्तनाद हो रहा था। दर्शन करने की आकुलता के कारण शोर-शराबा भी कम नहीं था। शान्ति का नेता अपनी अन्तिम निद्रा में सो गया। नेता के दर्शन लिये सभी आँखें तड़प रही थीं। माता विलाप कर रही थीं—'मेरा बेटा मरा नहीं, वह मर नहीं सकता।' सिसकियाँ वातावरण को क्षुब्ध बना रही थीं। आज मिट्टी की काया मिट्टी में मिल गई, लेकिन इस काया का कृतित्व ऐसा था जिसपर जीवित जी गर्व था मरने के बाद वह गर्व चिरस्थायी हो गया है।

जनता ने सम्मान के साथ अपने प्रधान मंत्री की अन्तिम यात्रा के लिये रास्ता दिया। आँसू, खामोशी और शांति तीनों का सम्मिलित स्वरूप पूरे मार्ग पर दिखाई पड़ा। शास्त्री जी के निधन से कानून टूट गया था। एक घंटे में गाड़ी उनके पार्थिव शरीर को लेकर १०, जनपथ पर पहुँची। जहाँ शास्त्री जी मिलनेवालों से बात करते थे वहीं उनके शव को रखा गया। उनके घर के लोगों ने जो आर्तनाद किया उससे आकाश की छाती हिल उठी। कुछ समय के बाद शव पोर्टिको में सर्वसाधारण के

दर्शनार्थ रखा गया। मृत्यु के अन्तिम क्षणों में शास्त्री जी ने—'हरे राम ! हरे बाप' कहकर अन्तिम श्वांस लिया था। उस अन्तिम शब्द की छाया उनके मृत मुख पर कहीं भी नहीं झलक रही थी। असीम शांति में वह स्वप्नवेत्ता सो गया था। लेकिन यह नींद ऐसी थी जो शास्त्री जी को जगा न सकी। वे सोये के सोये रह गये और जिस स्थान पर वे सोये वह स्थान विश्व के तीर्थ स्थलों में बन गया। वहाँ मस्तक टेकने में हम गौरव का अनुभव करेंगे। शास्त्री जी के जीवित जी यह स्थान राजनीतिज्ञों और बड़े लोगों से घिरा रहता था। अब शास्त्री जी को देश के अपार प्रेमी जनता यहाँ पुण्य-पर्व मनाने के लिए जुटेगी और इस धाम पर पवित्रता का सूत्रपात होगा।

शास्त्री जी की अन्तिम यात्रा के लिए लोग जहाँ भी स्थान पाये खड़े थे। १२ जनवरी प्रातः ६॥ बजे शास्त्री जी की महायात्रा का प्रारंभ हुआ। गृह के सभी लोग इस तरह मिल रहे थे कि वेदना को आँसू पोंछने के लिए कहीं आंचल तक नहीं मिल रहा था। ताशकन्द मे उन्होंने कोसिजिन और अयूब के कन्धों पर पार्थिव यात्रा की। अपने देश मे उन्हें हजारों कंधे मिले। कितने सबल थे वे कंधे जो आपस में छिलकर भी इस पार्थिव शरीर का आलिंगन करते रहे। बैंड से वातावरण करुण हो उठा था। शास्त्री जी के शव को कंधा उनके पुत्र, दामाद और तीनों सेना के अध्यक्षों ने दिया। उनके शव यान के पीछे मोटरों की लम्बी कतार में देश-विदेश के राजनीतिज्ञ और जननायक शोक में मस्तक झुकाये न जाने क्या सोच रहे थे।

जनपथ से शव यात्रा जब इंडिया गेट के पास पहुँची तो लगा कि गणतन्त्र दिवस के लिए जुटाये गये बेंचों पर केवल नरमुंड उग आये हैं। जिसे पेड़ पर जगह मिली वह डालो पर चढ़ गया। शास्त्री जी को देखने की लालसा कोई ऐसा जीवित प्राणी नहीं था जिसमें न रही हो। बार-बार दर्शन पाने के लिए दौड़ सी मच गई। लाखों लोगों का चलता फिरता जुलूस शव के चारो ओर था। एक दूसरे के कन्धों पर सवार हजारों लोग अपने प्रिय नेता का अंतिम दर्शन कर रहे थे। चारो ओर हृदय विदारक दृश्य था। छतों, दिवारों, गुंबदों, दुकानों और कोई भी ऐसी जगह नहीं थी जहाँ आँखें शव यान पर रखे अपने प्रिय नेता की ओर न लगी हों।

शोक में डूबा शांति वन महामृत्यु की नगरी बन गया था। चारो ओर 'लालबहादुर अमर रहें, लालबहादुर जिन्दाबाद' की गूँज थी और उसकी प्रतिध्वनि से शांति वन का वातावरण गुंजायमान हो गया था। इसी स्थान पर १॥ साल पहले २८ मई सन् '६४ को छाती पर पत्थर रखकर हमने नेहरू जी की चिता सजाई थी और आज उसी शांति वन में १५० गज की दूरी पर नेहरू जी के सच्चे प्रतीक की चिता सजानी पड़ी। विधि की विडंबना १२ बजकर ३२॥ मिनट पर शास्त्री जी के जेष्ठ पुत्र श्री हरीकृष्ण ने

अग्नि प्रज्वलित की। लाखों लोगों के बहते हुए आँसुओं से इस चिता की अग्नि का कोई सरोकार नहीं था। बिलखते हुए लोगों ने देखा कि जो शरीर आत्मा के रहते हुए कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक ही नहीं बल्कि वोल्गा की नगरी तक शांति का ध्वज फहराने का सफल प्रयत्न कर चुका था वही आज परमतत्व में विलीन हो गया है। अन्त में दैवी और दानवी संघर्षों ने शास्त्री जी को हमसे छिन लिया। वे नहीं रहे। उनको भस्म का अवशेष भारत की नदियों में मिलकर अनंत की ओर प्रवाहित हो रहा है, लेकिन इस पार्थिव जगत में उनके कार्यों और विचारों पर चलने वालों की एक प्रणाली का निर्माण भी अवश्यंभावी है।

शास्त्री जी की चिता ठीक से बुझ भी न पाई थी। शाम हो गई थी। तमाम दुनियां के नेता रामलीला मैदान में एक मंच पर जुट कर उस महापुरुष को अपनी स्मृति का अश्रुदान दे रहे थे जो गरीबी में पला और 'गाली का जवाब गोली से' देने की ताकत रखता था। रूस के कोसिजिन, अमेरिका के हंफ्री, अरब गणराज्य के हुसेन अल सफी, ब्रिटिश सरकार की ओर से जार्ज ब्राउन, रानी एलिजाबेथ के प्रतिनिधि लार्ड माउंट बेटन, अफगानिस्तान के माईवंदवाल, नेपाल के सूर्य बहादुर थापा, यूगोस्लाविया के जाकोव ब्लेज़निक, कंबोदिया के श्री सोनसांग, पाकिस्तान के गुलाम फारुक, फ्रांस के लुइजोय, पश्चिम जर्मनी के श्री वाल्टर शील, वर्मा के उथीहान्, जापान के श्री नाका फुनादा आदि ने उन्हें सच्चे अर्थों में लोक सेवक, अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना बढ़ानेवाला, ताशकंद समझौते के रूप में शांति की गंगा पृथ्वी पर प्रवाहित करने वाला भगीरथ और न जाने क्या क्या कहकर उस महापुरुष को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शास्त्री जी चले गये। उन्होंने 'बेदरो-दीवार' का एक घर- बसाने की कल्पना को सत्य कर दिखाया। वे शांति के प्रहरी थे। शांति की सुरक्षा करते करते पंचतत्त्व में विलीन हो गये। उनके विचारों और उनके कार्यों का अध्ययन इतिहासकार भविष्य में करेंगे। परंतु शास्त्री जी का मानव-प्रेम, उच्च आत्मानुभूति एवं संसार में व्याप्त कोलाहल के प्रति रचनात्मक निर्माण आदि ऐसी उपलब्धियां हैं जो भविष्य में अध्ययन का विषय बनेंगी। श्री शास्त्री की आत्मगाथा लिखने वाले सदैव यह ध्यान में रखेंगे कि उनके समय में हमने आत्म-संमान की परीक्षा दी और सारे संसार में यह सिद्ध करके दिखा दिया कि सही अर्थों में जनतंत्र की मजबूत नींव भारत में जम चुकी है जो अनादि काल तक स्थायी रूप से विकसित होती रहेगी।

प्रधान मंत्री होने के बाद शास्त्री जी को दो बार निकट से देखने का अवसर मिला। २५ दिसंबर १९६४ को वे काशी नागरीप्रचारिणी सभा के नये भवन का

शिलान्यास करने सभा में पधारे थे। शिलान्यास के पूर्व अधिकारियों और नागरिकों का परिचय कराया गया। उस समय शास्त्री जी देखने में अत्यंत स्वस्थ और गंभीर प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने सभा के मंच से कहा था—'यह संस्था ४० वर्षों से मुझसे संबंधित है। यहां का मैं विद्यार्थी रहा हूं और देश के रचनात्मक निर्माण में सभा का योगदान किसी से कम नहीं है।' उस बार कुछ ही मिनट के सानिध्य ने मुझे यह सोचने को बाध्य किया कि व्यक्ति अपनी ईमानदारी, लगन और दृढ़ता के कारण लालबहादुर शास्त्री से भारत का प्रधान मंत्री हो सकता है और जहां भी उसकी वाणी का उद्घाटन होगा वहां वह लोगों के हृदय में सीधे स्थान पा लेगा। बीती हुई बातें अनेक रंग में आंखों के सामने अनेक चित्र उपस्थित कर देती हैं। पर वे मेरी धरोहर हैं। उन्हें फिर कभी प्रकट करूँगा।

दूसरी बार हिंदी शब्द सागर के उद्घाटन के अवसर पर मैं १८ दिसम्बर ६५ को सांय ८ बजे उनके साथ कुछ क्षण 'अवांछित तत्व' के रूप में बिताने का लोभ संवरण न कर सका। प्रयाग का वह रंगमंच फूल-मालाओं और रोशनी से भव्य विद्वत् मंडप सा प्रतीत हो रहा था। भारत के गणमान्य साहित्यकार और विचारक वहां उपस्थित थे। शास्त्री जी ने शब्द सागर का विधिवत् उद्घाटन किया। लोगों को ताम्र-पत्र दिया और उन्होंने उस दिन जो कुछ कहा उसके एक-एक शब्द कानों में गूंज रहे हैं, "राष्ट्र रक्षा का हमने जो संकल्प लिया है उसे किसी भी स्थिति में पूर्ण किया जायगा तथा जय-पराजय की चिन्ता किये बिना हम विजय के अंतिम लक्ष्य तक बढ़ते जायेंगे। युद्ध में भारत को जो सफलता मिली है उसका श्रेय इस देश की जनता को और फौज के जवानों को है। पाकिस्तान के आक्रमण को विफल बनाने में भारत को जो सफलता मिली है उसका श्रेय करोड़ों भारतीय जनता और फौज को-जवानों को कर्तव्य-निष्ठा, एकता, और दृढ़ता को है। पर इस विजय से हमें संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए क्योंकि पाकिस्तान और चीन दोनों संमिलित रूप से भारत के विरुद्ध षड़यंत्र करते रहे हैं। युद्ध में कभी सफलता मिलती है तो कभी पीछे की ओर हटना पड़ता है किन्तु सफलता मिलने पर न तो हमें अधिक प्रसन्न होना चाहिए और न असफलता मिलने पर दुःखी होना चाहिए। अंतिम विजय के लिए दृढ़ संकल्प होकर युद्ध करते रहना चाहिए। पाकिस्तान ने जब भारत पर तीन बार आक्रमण किया तो हमारे समक्ष युद्ध के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं रह गया। अतः हमें युद्ध का निर्णय लेना पड़ा और जब निर्णय ले लिया गया तो फिर उससे पीछे हटने का कोई प्रश्न नहीं था।' फिर गीता का वह श्लोक साकार हो उठा, न तो शस्त्र किसी को काट सकते हैं और न अग्नि जला सकती है—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।

वर्तमान युग में कोई एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से लंबे समय तक युद्ध नहीं चला सकता क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ तथा बड़े देश तुरंत हस्तक्षेप करते हैं और युद्ध बंद हो जाता है। भारत की नीति शान्ति और अहिंसा की नीति रही है और आज भी हम उसी पर दृढ़ हैं किन्तु कोई देश जब आक्रमण करेगा तो हम पूरी शक्ति से उसका सामना करेंगे। आखिर सहनशीलता की भी सीमा होती है। अतः राष्ट्र रक्षा का हमारा संकल्प दृढ़ है।" शास्त्री जी के भाषण का यह अंश ताशकंद वार्ता से पूर्व की उनकी निश्चित धारणा पर प्रकाश डालता है।

उसी दिन काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष पं० कमलापति त्रिपाठी ने प्रभावपूर्ण शब्दों में प्रधान मंत्री का स्वागत किया था। उन्होंने कहा था,'आप भारतीय जनता की आकांक्षा, भावना, सांस्कृतिक परंपरा और युगचेतना के प्रतीक हैं। आप के नेतृत्व और निर्देशन में भारत ने गौरवपूर्ण सफलताएँ अर्जित की हैं और बहुत सी भ्रांतियों का निराकरण हुआ है। कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुन को जो मोह हुआ था वह भगवान श्री कृष्ण के उपदेश के पश्चात् दूर हुआ और वह धर्म तथा कर्तव्य पालन के लिए तत्पर हुआ—

ध्यायतो विषयात् पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते॥

क्रोधाद् भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति॥

आज पुनः वर्षों की भ्रांतियों के पश्चात् भारत मोह से मुक्त और जागृत हुआ है। आपके रूप में क्षितिज पर नये नक्षत्र का उदय हुआ है।' उसी दिन पं० सुमित्रा-नंदन पंत ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में सरस्वती वंदना की थी।

इतिहास के पुरोधा डा० रामप्रसाद त्रिपाठी ने धन्यवाद दिया था। उस दिन प्रधान मंत्री ने सभा को केवल आध घंटे का समय दिया था किन्तु उनका वह अंतिम कार्यक्रम सवा घंटे तक निर्विघ्न चलता रहा। त्रिपाठी जी ने लगभग २५ मिनट तक धन्यवाद प्रकाशन के माध्यम से कुछ ऐसी सत्य और कठोर बातें कहीं जिनको सुनने के लिए शास्त्री जी गुरुकुल के शिष्य की भांति मंच पर बिना किसी आकुलता के विराजमान रहे। कौन जानता था कि प्रधान मंत्री के जीवन के लिए यह इतिहासकार की अंतिम ओजस्वी वाणी है। सत्य सिर पर चढ़ कर बोलता है।

उस दिन उन्होंने कहा, 'इतिहास लिखने वाला सत्य लिखता है। शास्त्री जी ने प्रधान मंत्री पद पर आने की कभी कल्पना भी न की होगी परंतु वे इस पद पर अपने गुणों के कारण आये। श्री लालबहादुर दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले व्यक्ति हैं और विदेशों में भी उनका बड़ा सम्मान है। वे भारतीय संस्कृति और परंपरा के प्रतीक बन गये हैं। रामायण और महाभारत से यही प्रेरणा मिलती है कि वास्तविक शक्ति शस्त्रास्त्रों और भौतिक समृद्धि में नहीं बल्कि इच्छा-शक्ति और कर्मनिष्ठा में है।' उन्होने कहा था, 'शास्त्री जी को प्रसन्न करने के लिये यह सब मैं नहीं कह रहा हूँ। मैं इतिहास लिखता हूँ। समय के सत्य को पहचानता हूँ।

शास्त्री जी ताशकंद जा रहे हैं। वहाँ विश्व के कूटनीतिज्ञों से उनका सामना होगा। वहां वह जो कुछ करेंगे वह भारत के इतिहास में लिखा जायगा।' वहाँ कूटनीतिज्ञ लोग उनसे अवश्य मिले होंगे लेकिन मृत्यु नटी स्वयं ऐसी राजनीति खेल गई कि अब हमारा वह प्रधानमंत्री जीवित होने वाला नहीं है। इतिहासकार के लिखे लेख वह न देख सकेगा। शास्त्री जी ने अपने भाषण में हिंदी और नागरी की श्री संपन्नता का उद्घोष करते हुए कहा था, 'इस संस्था के कार्यों में कभी कोई बाधा नहीं आएगी और जिस सेवा भाव से यह रचनात्मक कार्य कर रही है वह अवश्य सफल होगा। इसके द्वारा राष्ट्र की बौद्धिक शक्ति का निर्माण हो रहा है और समाज सेवी संस्थाओं में नागरीप्रचारिणी सभा का मुकाबला कोई संस्था कर सकती है मैं नहीं जानता।,

सभा के प्रधानमंत्री श्री शिवप्रसाद मिश्र रुद्र ने कार्य-क्रम का सफल संचालन किया। साहित्य मंत्री पं० करुणापति त्रिपाठी ने कोश की विशेषताएँ बताई थीं और प्रकाशन मंत्री श्री सुधाकर पाण्डेय द्वारा समर्पित हिंदी शब्द सागर पाकर शास्त्रीजी की प्रसन्न मुख छवि देखने का सौभाग्य इन आँखों को अब कहाँ नसीब होगा?

सभा की कार्यवाही समाप्त होने पर मंच से उतरते समय महादेवी जी ने शास्त्री जी से पूछा, 'क्या इतनी सर्दी में भी आपको ठंडक नहीं लगती?' शास्त्री जी के पैरों में मोजे नहीं थे। उसी ओर महादेवी जी ने संकेत किया था। शास्त्री जी ने कहा था, 'दो विलायती (साक्स) मोजे मेरे पास हैं। उन्हें जब विदेश जाता हूँ तब पहन लिया करता हूँ।' उस समय यह सब मुस्कान के बीच डूब गया था। सभा मंडप में प्रवेश करते ही मंच के निकट शास्त्री जी को लाकर पं० कमलापति जी ने कहा था, 'देखिए शास्त्री जी! सारा बनारस चला आया है।' कइ दर्जन काशी के अग्रगण्य विद्वान् उनके स्वागत में सामने खड़े थे। शास्त्री जी ने सबकी ओर नजर फेरकर

श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ को देखते ही कहा, 'कहिए गौड़ जी।' और एक गंभीर मुस्कान शास्त्री जी के चेहरे पर खिल उठी। बगल में डा० मंगलदेव शास्त्री थे। उन्हे भी संकेत से शास्त्री जी ने प्रणाम किया। यह सब इतनी जल्दी और अकस्मात हो गया कि लगता है शास्त्री जी मरे नहीं हैं बल्कि अपने शुभेच्छुओं को न सहने वाला दर्द देकर कहीं दूर क्षितिज के पार चले गये हैं।

वे गृहस्थ होकर भी महान त्याग करने में आगे रहे। वे काल को भी जीत सकते थे। विष पीकर भी दोस्ती निभा सकते थे। उनकी लघु काया में विराट व्यक्तित्व छिपा था। वे फूल से कोमल हृदय वाले व्यक्ति थे परंतु नैतिकता के प्रश्न पर वज्र से भी कठोर थे। उन्होंने देश को नई शक्ति, नई दिशा तथा नया संकल्प दिया। कांग्रेस का शासन था। वे कांग्रेस संगठन के प्रिय थे। दूसरी पार्टियाँ भी उनके लिए रो रही हैं। जनता का व्यक्ति किसी खास पार्टी का व्यक्ति नहीं होता। ऐसा व्यक्तित्व शास्त्री जी का था। उनके पास अपना दर्शन था अपनी विचारधारा थी। पुराने गुणों को ग्रहण करने की अति अधुनातन क्षमता शास्त्री जी की खास विशेषताओं में माना जायगा। शास्त्री जी जब प्रधान मंत्री हुए तो देश ने नई करवट ली। जिन अवांछित शक्तियों ने भारत के सम्मान पर आक्रमण करने की जुर्रत् की उनका जवाब सारे देश ने शास्त्री जी के नेतृत्व में जिस वीरता, अदम्य त्याग और साहस के साथ दिया वह भारतीय इतिहास के नूतन पृष्ठों का सृजन करेगा।

शास्त्री जी का मोहक व्यक्तित्व इतना सहज था कि उनकी निकटता प्राप्त कर लेना किसी भी मनस्वी के लिये आसान था। वे नवयुवकों के प्रेरणा स्रोत थे। उन्होंने अपने विश्वास का लोहा भारत के महान से महान कूटनितिज्ञ की बुद्धि से मनवा लिया था। शास्त्री जी का व्यक्तित्व आतंकवादी नहीं था। वे भारत के प्रधान मंत्री जैसे उत्तरदायित्व के पद पर प्रतिष्ठित होकर भी निराभिमानी, धैर्य के आगार और जनता के आदमी बनकर देश के सामने आये। वे शान्ति के पथ पर चलने वाले थे। मनुष्य के रूप में वे शांति के देवता थे। जैसी शानदार मौत उन्होंने पाई उससे कहीं अधिक शानदार संघर्ष भरा जीवन भी उन्होंने पाया था। वे गरीब घर में पैदा हुए थे। जीवन भर व्यक्तिगत संघर्षों के लिए जूझते रहे और मरने पर उनके पास अपने नाम का मकान नहीं था, हाँ कर्ज का अंबार अवश्य था।

स्वर्गीय शास्त्री जी हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन उन्होंने स्वाभिमान पूर्वक चलने के लिए पथ का निर्माण कर दिया है। उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर उनके व्यावहारिक संदेशों का पालन करते हुए चलना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होने कई शताब्दियों से देश की सोई हुई चेतना को मूर्त जीवन दिया है। उन्होंने ईमानदारी के साथ शांति को वचनवद्ध किया है।

सत्य, ईमान और अटल निश्चय की प्रधानता भारतीय जीवन दर्शन में रही है। इनके पालन के लिए त्याग का आलिंगन करना पड़ता है। मोह के जाल तंतुओं का विघटन करना पड़ता है और भौतिक आकांक्षाओं की चिता सजाकर समाज और जीवन के प्रति कर्मयोगी-सा निर्लिप्त रहना पड़ता है। शास्त्री जी भारत के राजनीतिज्ञों में कर्मयोगी थे। छोटे थे दैदिप्यमान सितारा थे। जिस देश में शास्त्री जी जैसे त्यागियों का सम्मान होता है वह देश बहुत दिनों तक उन्नति, सुख और यश प्राप्त करता रहता है।

शरीर नश्वर है। काया पंचतत्व में विलीन हो जाती है। कहानी क्षण भंगुर संसार में सुनी सुनाई जाती रहती है। परंतु स्वप्न भी सत्य होते हैं। यह ऐहसास उनके निधन के पूर्व हुआ। सभा के प्रांगण में एक स्वप्न सुना गया। सभा के नये बन गये भवन का उद्घाटन शास्त्री जी कर रहे हैं। दूसरा स्वप्न था जिला कांग्रेस के अध्यक्ष का। उन्होंने देखा उनका पौत्र असार संसार से विदा हो चुका है। तभी भिनसहरा उनके कानों में सूचना पड़ी कि शास्त्री जी चल बसे। सचमुच शास्त्री जी चले गये। ऐसा लगता है कि केवल ललिता देवी शास्त्री की मांग सूनी नहीं हो गई है बल्कि भारत माँ की गोद सूनी हो गई है। सारे वातावरण में एक विशाद की लहर है। एक करुण दर्द हर इन्सान के दिल में है। जिस विवेक और भावना का संयोग शास्त्री जी के रूप में हमें मिला था वह अलौकिक प्रेरणा का प्रतीक है। श्री शास्त्री को जब पहली बार दिल का दौरा पड़ा था तब शास्त्री जी की पत्नी ने शिवमूर्ति के सामने बैठकर अपने पति की प्राण रक्षा की भीख मांगी थी। उस बार इष्ट देव ने शास्त्री जी की रक्षा की थी। काहिरा और राष्ट्रमंडलीय संमेलन को छोड़ कर जब भी वे विदेश गये उनको चिरसंगिनी सदैव उनके साथ रहती थीं। वह उनके प्राणों की रक्षक थीं। सोवियत सरकार ने श्रीमती शास्त्री को भी आमंत्रित किया था, परंतु शास्त्री जी ने सर्दी, राजनीतिक व्यस्तता आदि का बहाना बनाकर उन्हें साथ न लिया। 'जिय बिनु देह नदिय बिनु बारी' वही स्थिति श्रीमती ललिता शास्त्री की आज अपने पति के अभाव में है। अपना दर्द वही सह रही हैं। काल ने ताशकंद में श्रीमती शास्त्री की उपस्थिति भी गंवारा न की। शायद वे पति के साथ होतीं तो पुनः अपने अनादि शक्ति का वे आह्वान करतीं और भारतीय नारी की सबसे बड़ी विजय उनके मांग की सिंदूर रेखा न मिट पाती। यह सब अत्यन्त दुःख देने वाली सच्चाइयाँ हैं जिनको झेलने के लिए उनकी नश्वर काया मातृ-मंदिर बन गई है।

जब शास्त्री जी प्रधान मंत्री हुए थे तब देश में एक उदासीनता और अकर्मण्यता का वातावरण था। देश के शासन के प्रति जनमानस में असंतोष की लहर दौड़ रही थी। लेकिन शास्त्री जी ने देश के मनोबल को दृढ़ किया। उनका व्यापक प्रभाव मानव जाति की आशा, विश्वास, शान्ति और प्रगति का नूतन मापदंड स्थिर करेगा। उनके जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि ताशकंद घोषणा है। सौहार्द्र और मित्रता की भावना से नवीन संधिकर्मी के रूप में भारतीय इतिहास के ज्वलंत नक्षत्रों में शास्त्री जी का नाम लिया जायगा। भारत उनके प्रधान मंत्रित्व काल में विजयी हुआ। शान्ति के लिए उसने विजय का सर्वस्व बलिदान अशोक आदि से भी आगे बढ़कर कर दिखाया। उसका परिणाम ताशकंद की घोषणा है। अशोक के कलिंग विजय को हम भले ही भूल जायँ लेकिन ताशकंद घोषणा सदैव हमारे सामने रहेगी।

कन्हैयालाल माणिक लाल मुंशी के शब्दों में, "किसी राष्ट्र के नेता को इससे बड़ी श्रद्धांजलि नहीं दी जा सकती जितना इस व्यक्ति को मिली जिसके निधन के कारण स्तब्ध सारे संसार की सरकारों के प्रतिनिधि उनके शव-दाह संस्कार में भाग लेने के लिए दिल्ली आये।

गत वर्ष जनवरी में भवन के बंगलौर केंद्र की स्थापना के अवसर पर जो कुछ उन्होंने कहा था वह आज भी हमारे कानों में गूँज रहा है। उन्होंने कहा था—

"यह बहुत ही महत्त्व की बात है कि भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्पराओं और विशेषताओं का हमें ज्ञान और अनुभूति हो। इसकी परम्पराएँ बड़ी महान हैं। इसका दर्शन अद्वितीय है—यह दर्शन एकता का है, अनेकता में एकता इसका वैशिष्ट्य है। आज भारत की ये विचार नये लग रहे हैं, यद्यपि अन्य देशों ने इसे अपना लिया है लेकिन बुनियादी तौर पर यह दर्शन, यह विचारधारा भारतीय है। मैं नहीं कह सकता कि अन्य देश के लोगों में भी यह उतना ही गहराई के साथ प्रविष्ट हुई है। लेकिन भारत में तो घर घर में हर व्यक्ति यह मानता है कि सार्वभौम शांति होनी चाहिये, परस्पर प्रेम, सद्भाव और सहिष्णुता होनी चाहिये, आज सहअस्तित्व की बड़ी चर्चा है। औरों के लिए यह विचार नया हो सकता है परन्तु हम तो युगों से इसमें विश्वास करते रहे हैं। यहां नाना धर्मों का, नाना संस्कृतियों का विकास हुआ है फिर भी हम आपस में प्रेम के साथ और परस्पर सहिष्णु बनकर रहे हैं। इससे बढ़कर और उपलब्धि क्या हो सकती है? जब सहअस्तित्व और शांति होती तो हमें किसी देश से या अपने किसी पड़ोसी से लड़ने झगड़ने की न आवश्यकता होगी और न यह चाहिये ही।"

ठीक यही, उनके जीवन का संदेश था।

चाहे जो भी उनका उत्तराधिकारी हो, उसके लिए उन्होंने संयुक्त राष्ट्र, ओजस्वी परराष्ट्रनीति तथा भ्रष्टता विहीन नेतृत्व की विरासत छोड़ी है।"

शास्त्री जी ने ४ जनवरी १९६६ को ताशकंद संमेलन में कहा था, "लड़ाई से समस्याएं नहीं सुलझती, और पैदा होती है। इससे सुलह समझौते में बाधा पड़ती है। शांति के वातावरण में ही आपस के मतभेद दूर किए जा सकते हैं। एक दूसरे से लड़ने के बजाय, आइए हम गरीबी, बीमारी और अभाव से लड़ें। भारत और पाक दोनो देशों के मामूली लोग यही चाहते हैं कि उनको शांति से तरक्की करने का मौका मिले। वे लड़ाई-झगड़ा नहीं चाहते। उनकी जरूरत गोला—बारूद और अस्त्रशस्त्र की नहीं, खाने कपड़े और मकान की है।"

यह मूल समस्याएं हैं जो शास्त्री जी ने देश के लिए और संसार के लिए छोड़ दी हैं। इन बातों पर अमल करके शास्त्री जी के प्रति प्रत्येक व्यक्ति अपनी भावना को संतुष्ट कर सकता है। भारत धरती वीर प्रशू है। यहाँ जब जब संकट आता है तब तब कोई न कोई शक्ति उदित होकर देश का शासन अपने हाथ में लेती है। शास्त्री जी मरने के बाद भारतरत्न हुए। न जाने कितनी युनिवर्सिटियों ने उन्हें डाक्टर की उपाधि से विभूषित किया, परंतु यह सब शास्त्री जी का सच्चा और वास्तविक आभूषण नहीं हैं। शास्त्री जी के लिए कोई विश्वविद्यालय या स्मारक न जाने बनेगा या नहीं परंतु वे प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में अपना स्थायी स्मारक छोड़ चुके हैं। वे हमारे मन, वचन, कर्म और संकल्प के वाहक हैं। उनकी आत्मा का प्रकाश भारतीय कर्मनिष्ठा का नया अध्याय शुरू करेगा। वे भारत मां की कोख खाली कर चले गये। देश ने नेहरू और श्रीमती इन्दिरा गांधी के बीच जो सेतु निर्मित किया था वह देश को असहायावस्था में छोड़कर टूट गया है। शास्त्री जी अमर हैं। उनकी यश : काया जन-जन का जयघोष हैं।

संपादक

विचार धारा

लड़ाई से समस्याएं सुलझती नहीं, और पैदा होती हैं। इसमें सुलह समझौते में बाधा पड़ती है। शान्ति के वातावरण में ही आपस का मतभेद दूर किया जा सकता है।

एक दूसरे से लड़ने के बजाय, आइए हम गरीबी, बीमारी और अभाव से लड़ें। दोनों देशों के मामूली लोग यही चाहते हैं कि उनको शान्ति से रहने का मौका मिले। वे लड़ाई झगड़ा नहीं चाहते। उनकी जरूरत गोलाबारूद और अस्त्र-शस्त्र की नहीं, खाना, कपड़ा और मकान की है।

× × × ×

हमारा राष्ट्र अपनी सबसे बड़ी परीक्षा से गुजर रहा है। हमारे सामने बड़ा कठिन समय उपस्थित हुआ, लेकिन इससे एक लाभ भी हुआ। सारी दुनिया ने देख लिया कि भारत के हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी और अन्य लोग एक राष्ट्र के रूप में किस प्रकार दृढ़ संकल्प से एक उद्देश्य के लिये मिलकर काम कर सकते हैं। रण-क्षेत्र में देश के सभी सम्प्रदाय के वीरों ने मातृभूमि के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए हैं और दिखला दिया है कि वे सब पहले भारतीय हैं और अन्त में भी भारतीय हैं।

× × × ×

गांधी जी ने हमें स्वदेशी का मंत्र दिया था वह आज भी उतना ही ठीक और सच्चा है, जितना चालीस साल पहले था। स्वदेशी के लिए हमें आज भी पहले जैसी भावना और पहले जैसा जोश पैदा करना है।

× × × ×

वक्त बहुत नाजुक है, खतरा अभी टला नहीं है। संकट के समय में बहादुर जवानों ने जो रास्ता दिखाया है क्या हमारे किसान उससे पीछे रह सकते हैं? जवान अपना खून बहा रहा है, देश के लिए अपनी जान की बाजी लगाए बैठा है। किसान को अपनी मेहनत और अपना पसीना देना है। किसान हमारे देश के प्राण हैं। उन्हें आज लाखों की तादाद से उत्साह और मेहनत से खेती में जुट जाना है। उनके सामने एक ही मंत्र है—अनाज की पैदावार बढ़ाओ। हम दूसरे देश पर निर्भर न रहें। हम अपनी आजादी को संजोये रखें। हम पर जो कुछ भी बीते, देश का सम्मान सदा बना रहे। हमें आत्मनिर्भर, शक्तिशाली देश बनाना है और वह बनकर रहेगा।

× × × ×

भारत का शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव में अडिग विश्वास है। हम सभी से, विशेषतः अपने पड़ोसियों से मित्रता चाहते हैं। हम अपनी शक्ति को अपने देश की आर्थिक अवस्था को सुधारने और अपने लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के बड़े काम में लगाना चाहते हैं। जो धन आज रक्षा के काम में खर्च होता है, हम उसे गरीबी से लड़ने में खर्च करना चाहते, यदि हमारे देश को खतरा न होता। जो हमारे सामने समस्याएँ आएंगी, वे बड़ी चुनौतियाँ होंगी और हम इनका सामना पूरी सावधानी और सतर्कता से करेंगे।

× × × ×

हमारे मन में अपने देश की हिफाजत की बात है लेकिन न्याय के साथ, इन्साफ के साथ हम कहना चाहते हैं। हमें बड़े धीरज और शान्ति के साथ काम लेना है। हम शान्ति बनाये रखते हुए इस बात का भी मन में पक्का इरादा रखेंगे कि हमारे देश पर कोई संकट आए तो हम सब मिलकर, एक आवाज से बोलें, एक साथ खड़े हों। फिर हम जानते हैं हमारे देश का कोई बाल बांका नहीं हो सकता।

× × × ×

हमारे सामने जो समस्याएँ हैं, उनमें दारुण समस्या गरीबी की है। हमारे करोड़ो देशवासी गरीबी में जकड़े हुए हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं किसी प्रकार अपने देशवासियों के गरीबी के बोझ को कुछ हल्का कर सकूँ। खास कर मैं अपने समाज के पिछड़े और दलित लोगों को, अपने अनुसूचित जाति और अनुसूचित आदिम जाति के भाइयों को नहीं भूल सकता, जो सदियों से उपेक्षा और उत्पीड़न के शिकार रहे हैं। मेरे लिए यह सौभाग्य और गर्व का विषय होगा कि मुझे अपने समाज की व्यवस्था को अधिक न्यायपूर्ण बनाने के लिए काम करने का अवसर मिलेगा।

× × × ×

गाँधी जी के देश में किसी को त्याग या बलिदान से नहीं हिचकना चाहिए। समय के अनुसार लोगों को अपने खान-पान की आदतों को बदलना चाहिए। अगर देश में चावल की कमी है, तो हमें गेहूँ खाना चाहिए। हमें विदेशों के आसरे नहीं रहना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो सके, हमें आत्मनिर्भर होना चाहिए।

× × × ×

हम सदा से परिमाणु हथियारों पर नियंत्रण के पक्ष में रहे हैं। हमारा विचार है कि मानवता को विनाश से बचाने के लिए, विश्व के सब राष्ट्रों को मिलकर प्रयत्न करना चाहिए। मेरा ख्याल है कि यूरोप, एशिया और अफ्रीका आदि के जिन देशों के पास परमाणु हथियार नहीं हैं, उन्हें मिलकर दुनिया के लोगों को परमाणु

हथियारों के खतरे को समझना चाहिए और इसके खिलाफ जनमत तैयार करना चाहिए। इसका असर उन देशों पर भी पड़ेगा, जिसके पास परमाणु अस्त्र हैं। मैं जानता हूँ कि हम बड़े कठिन समय से गुजर रहे हैं और हमें बड़ी समझदारी तथा परस्पर सहयोग से काम करना होगा।

× × × ×

नेहरू जी विश्व नागरिक थे। उन्होंने सदा अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज उठाई। अन्याय और शोषण चाहे देश में हो या विदेश में, इससे बड़ा कष्ट होता है। नेहरू जी सदा यह कोशिश करते थे कि विश्व में शान्ति बनी रहे और सोवियत गुटों में तनाव कम किया जाय। इस मैत्री को भारत और रूस दोनों को मिलकर और दृढ़ बनाना चाहिए।

× × × ×

हमने नान-अलाइनमेन्ट या गुटों से अलग रहने की नीति अपने स्वार्थ या मतलब निकलने के लिए नहीं अख्तियार की है। हमने इसे इसलिए अपनाया है कि इससे हमें अपनी राय कायम करने की और उस पर चलने की आजादी मिलती है। इससे दुनिया में शांति का दायरा बढ़ता है और सब मुल्कों में शान्ति से रहने का वातावरण तैयार होता है।

× × × ×

परराष्ट्र नीति में हम सभी देशों से, चाहे उनके विचार और राजनीतिक प्रणाली भिन्न हो, मित्रता रखने और सम्बन्ध बढ़ाने का प्रयत्न करते रहेंगे। हमारी नीति अन्तर्राष्ट्रीय गुटबन्दियों से अलग रहने की रही है और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में हमारा रुख और दूसरे देशों के साथ हमारा सम्बन्ध इसी बुनियादी नीति पर आधारित होगा। अपने पड़ोसी देशों से अपने सम्बन्ध बढ़ाने का हम विशेष प्रयत्न करेंगे। अपने अधिकांश पड़ोसियों से हमारा सम्बन्ध मित्रता और सहयोग का है। कुछ के साथ समस्याएँ हैं। इसे हम शान्ति और मेल से, न्याय और आत्मसम्मान के आधार पर सुलझाने का प्रयत्न करेंगे।

× × × ×

हमने हमेशा संयुक्त राष्ट्र संघ का दृढ़ता से समर्थन किया है। इस महान संस्था के सदस्य के रूप में जो जिम्मेदारियाँ हमारे ऊपर आई हैं, उन्हें भारत ने अपनी शक्ति भर उठाया है। मैं फिर से यह घोषित करता हूँ कि हमारी सरकार संयुक्त राष्ट्र संघ का पूरा समर्थन करती रहेगी।

× × × ×

आज मनुष्य जाति के सामने मूल समस्या शान्ति और निरस्त्रीकरण की है। जाने कितनी पीढ़ियों से मनुष्य जाति शान्ति के लिए व्याकुल रही है। संयुक्त राष्ट्र-संघ के सामने सबसे बड़ा काम यही है कि संसार से युद्ध का नाम-निशान मिट जाए और युद्ध असम्भव हो जाए। जैसा कि प्रेसीडेंट जानसन ने कहा कि जवाहरलाल जी का सबसे अच्छा स्मारक यही होगा कि संसार से युद्ध की काली छाया दूर हो जाए। संसार के अन्य शान्ति प्रेमी राष्ट्रों के साथ मिलकर हम इसी लक्ष्य के लिए काम करने का संकल्प करते हैं।

× × ×

इस शताब्दी के अधिकांश भाग में गांधी और नेहरू के नाम सारे संसार की पराधीन जनता के स्वतंत्रता आन्दोलनों के प्रतीक रहे। हमने अपनी स्वतंत्रता बड़े संघर्ष के बाद पाई है और हम उन सब लोगों से सहानुभूति रखते हैं, जो अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र में और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में हमने सदा पराधीन लोगों का पक्ष लिया है। दुर्भाग्यवश अभी भी संसार में कुछ देश हैं, जहाँ लोग पराधीन हैं और स्वतंत्रता तथा मानव अधिकारों से वंचित हैं। साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद को अन्त करने के आन्दोलन का समर्थन करना हम अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगे, जिसमें सारे संसार में लोगों को अपना भाग्य निर्णय करने का अधिकार मिले।

× × ×

हम एशिया-अफ्रीका की एकता को साध्य नहीं, वरन् कुछ ऊँचे आदर्शों की सिद्धि का साधन मानते हैं। हमारा लक्ष्य है कि एशिया और अफ्रीका की जनता स्वतंत्र हो, जिससे सब राष्ट्रों में मेल और शांति का क्षेत्र बढ़े और पिछड़े हुए देशों का विकास हो और वहाँ के लोगों की दशा सुधरे। हम एशिया और अफ्रीका के अपने साथी देशों के साथ मिलकर विश्व शांति और सब राष्ट्रों की भलाई के लिये नम्रतापूर्वक काम करना चाहते हैं।

× × ×

भारत जैसे देश के लिए जो अपना आर्थिक निर्माण करने में लगा हुआ है, शांति का विशेष महत्व है। गांधी जी और जवाहरलाल जी के देश के सामने दूसरा लक्ष्य हो ही क्या सकता है? अगर सारी मानव जाति की बात सोचें, तो शांति का महत्व और भी बढ़ जाता है। हम सच्चाई को आंखों से ओझल नहीं कर सकते कि अब केवल दो देशों के बीच ही लड़ाई नहीं होगी, अब अगर लड़ाई की आग भड़की, तो वह सारे संसार को लपेट लेगी।

× × ×

मैं आज बहुत दुःख और भारी दिल के साथ आप से कुछ बात करने आया हूँ। मद्रास राज्य में भाषा के प्रश्न पर शायद कुछ डर और आशंकाओं के कारण दुःखद घटनाएँ घटी हैं और लोगों की जानें भी गई हैं। मैं बता नहीं सकता कि मुझे इससे कितना अफसोस हुआ है। जिन लोगों की क्षति हुई है उनसे मुझे पूरी सहानुभूति है।

इतनी तीव्र भावनाएं कैसे भड़क उठीं, जिनसे ऐसी अफसोसनाक घटनाएं घटीं। ऐसा जान पड़ता है, कुछ लोगों का ख्याल है कि भाषा के सवाल पर जिन बातों का भरोसा दिलाया गया था, उन्हें पूरा नहीं किया गया है। संवैधानिक और कानूनी स्थिति और भारत सरकार की नीति संबंधी फैसलों के बारे में भी कुछ गलतफहमी दिखाई देती है। मैं सच्चे दिल से विश्वास करता हूँ कि ये सारे डर, दुर्भाग्य से, हालत को ठीक तरह न समझने के कारण पैदा हुए हैं। इसलिए मैं सारी बातें आपके सामने साफ-साफ करके रखना चाहता हूँ, फिर आपसे आग्रह करूंगा कि उन पर ठंडे दिल से विचार करें।

अगस्त और सितम्बर, १९५९ में श्री जवाहरलाल नेहरू ने संसद में उन लोगों को कुछ आश्वासन दिए थे, जिनकी भाषा हिन्दी नहीं है। इन आश्वासनों से बहुत सन्तोष हुआ था। आश्वासन क्या थे, मैं उन्हीं के दो भाषणों के कुछ हिस्से पढ़कर सुनाता हूँ। नेहरू जी ने कहा था, "कोई भी राज्य सरकार, केन्द्र सरकार अथवा किसी दूसरे राज्य के साथ अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार कर सकती है।" उन्होंने आगे कहा था कि कोई राज्य अपने भीतरी कामों में शायद प्रादेशिक भाषा से काम ले, पर अखिल भारतीय स्तर पर राज्यों के बीच काम काज के लिए अंग्रेजी के इस्तेमाल पर कोई पाबन्दी नहीं होगी। उन्होंने कहा था, "इसके लिए भी समय का कोई बन्धन नहीं होगा, जब तक कि लोग आम तौर पर न चाहें। जिन लोगों की भाषा हिन्दी नहीं है और जिन पर असर पड़ेगा, उनका ही सहमत होना जरूरी है।"

एक और भाषण में उन्होंने कहा था, "मैं दो बातों पर विश्वास रखता हूँ। एक तो किसी पर कुछ जबर्दस्ती नहीं थोपा जाना चाहिए। दूसरे अनिश्चित समय तक, मैं नहीं जानता कब तक, मैं अंग्रेजी को सहायक भाषा के तौर पर रखना चाहूँगा, क्योंकि मेरी यह इच्छा नहीं है कि अहिन्दी भाषी लोग यह महसूस करें कि उन की तरक्की के कुछ दरवाजे बन्द हो गये हैं। इसलिए मैं उसे एक दूसरी भाषा के रूप में रखना चाहूँगा, जब तक लोगों को इसकी जरूरत हो। इसका फैसला मैं हिन्दी बोलने वाले लोगों पर नहीं, बल्कि उन लोगों पर छोड़ना चाहूँगा, जिनकी भाषा हिन्दी नहीं है।" इसकी आगे व्याख्या करते हुए पंडितजी ने कहा था, "हिन्दी

बराबर तरक्की कर रही है, मैं इसके लिए कोशिश करता हूँ। लेकिन मुझे यह अच्छा लगेगा कि जिन लोगों को अंग्रेजी की जरूरत है, वे इसका इस्तेमाल करें। कुछ राज्यों ने ऐसा किया है। वे अंग्रेजी का इस्तेमाल जारी रख सकते हैं और वहाँ उसकी जगह लेने के लिए भाषाओं का धीरे-धीरे विकास हो सकता है।"

ये आश्वासन पंडितजी ने दिए थे और मैं फिर कह देना चाहता हूँ कि हम इन पर सच्चे दिल से और पूरी तरह कायम हैं। इन्हें पूरा किया जाएगा, अक्षरशः पूरा किया जाएगा। किसी को कोई शक न रह जाए इसलिए मैं एक बार फिर सरकार की नीति संबंधी फैसले बताए देता हूँ।

सबसे पहली बात यह है कि हर राज्य को अपनी मर्जी की भाषा में काम काज करने की पूरी आजादी है, यह भाषा चाहे प्रादेशिक हो या अंग्रेजी।

दूसरे, एक राज्य का दूसरे राज्य के साथ जो भी पत्र-व्यवहार होगा, वह या तो अंग्रेजी में होगा या अंग्रेजी का अधिकृत अनुवाद साथ में होगा। यह फैसला सभी मुख्य मन्त्रियों की सम्मति से किया गया था। कोई राज्य या व्यक्ति हिन्दी में केन्द्र के साथ जो पत्र-व्यवहार करेगा, उसका अंग्रेजी अनुवाद भी उपलब्ध होगा।

तीसरे, जिन राज्यों की भाषा हिन्दी नहीं है, उन्हें केन्द्र सरकार के साथ पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में करने की पूरी स्वतंत्रता होगी। यह व्यवस्था तब तक नहीं बदली जाएगी, जब तक ये राज्य खुद नहीं चाहेंगे।

चौथे, केन्द्र सरकार के स्तर पर काम-काज में अंग्रेजी का इस्तेमाल जारी रहेगा।

मैंने जो कुछ अभी कहा है, उससे यह बात साफ हो जानी चाहिए कि अहिन्दी भाषी राज्यों पर हिन्दी को जबर्दस्ती लगाने का कोई सवाल नहीं है। यह भी स्पष्ट है कि अहिन्दी भाषी राज्य, जब तक वहाँ के लोग यह जरूरी समझें, अंग्रेजी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

अब मैं सरकारी नौकरियों की भर्ती के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। विद्यार्थियों के मन में इसी सवाल पर गम्भीर आशंकाएँ और डर हैं। अब तक यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षाओं में बैठने के लिए केवल अंग्रेजी ही माध्यम रहा है। आगे भी अंग्रेजी माध्यम रहेगा और इससे तब तक नहीं हटाया जाएगा, जब तक अहिन्दी भाषी इलाकों के लोग खुद नहीं कहेंगे।

यह सच है कि हमारे संविधान के अनुसार, जो सन् १९५० में पास हुआ था, हिन्दी इस वर्ष २६ जनवरी से संघ की सरकारी भाषा बन गई है। साधारण तौर पर उस दिन से अंग्रेजी का कोई सरकारी दर्जा न रहता; पर इस तारीख से दो वर्ष पहले

कानून पास किया गया जिसके अनुसार साथ में अंग्रेजी में काम-काज करने की भी व्यवस्था कर दी गई। इस प्रकार कानूनी तौर पर अंग्रेजी सहायक भाषा और परीक्षाओं के माध्यम के रूप में बनी रहेगी। सन् १९६० में यह तय किया गया कि हिन्दी को भी कुछ समय बाद परीक्षाओं का दूसरा माध्यम बना दिया जाए। यह मामला सभी राज्यों के मुख्य मंत्रियों के सामने रखा गया और उनसे सलाह करके यह फैसला किया गया कि हिन्दी को दूसरा माध्यम बनाने से पहले परीक्षाओं में बैठने वालों की योग्यता को समान रूप से आंकने का उचित आधार बना लिया जाए। हिन्दी माध्यम की इजाजत तभी दी जाएगी, जब इस दृष्टि से कोई ठीक योजना बन जायगी। भारत सरकार इस उद्देश्य से सभी मुख्य मंत्रियों और देश के अलग-अलग इलाकों के प्रमुख शिक्षा-शास्त्रियों से सलाह लेगी। इस पर समय लग सकता है। हमें पूरी तसल्ली करनी होगी कि जो तरीका अपनाया जाए, उसे मुख्य मंत्री ठीक समझते हों। योग्यता को समान रूप से आंकने की योजना ऐसी होगी जिससे किसी को भी डर न रहे कि किसी एक वर्ग के उम्मीदवारों को फायदा या नुकसान होगा। मैं विद्यार्थियों को विश्वास दिलाता हूं कि इस बात की पूरी कोशिश की जाएगी कि उन्हें नौकरी मिलने के उचित अवसर मिलते रहें।

मुझे आशा है कि मैंने सरकार के फैसलों और नीतियों के बारे में जो कुछ कहा है, उससे यह बात साफ हो गई होगी कि हम अहिन्दी भाषी लोगों के हितों की पूरी तरह रक्षा करना चाहते हैं और हमारी जरा भी इच्छा नहीं है कि अहिन्दी भाषी राज्यों को कोई परेशानी या असुविधा हो। ये बातें सदा हमारे सामने रहेंगी। हम मुख्य मंत्रियों से सलाह करके यह सोचेंगे कि इन आश्वासनों को पूरा करने के लिए किन उपायों पर चला जाए।

मुझे दुःख है कि सारे मामले पर बातचीत करने की कोशिश नहीं की गई है, बल्कि एक आन्दोलन चलाया जा रहा है। मैं बड़ी नम्रता से कहूंगा कि हमारे जैसे महान लोकतंत्र में शिकायतें पेश करने या मतभेद, विचारों का फर्क, जाहिर करने का यह उचित तरीका नहीं। हमारा देश बहुत बड़ा है। यहाँ के लोगों का धर्म, भाषाएं, रहन-सहन के तरीके और रस्म-रिवाज अलग-अलग हैं। लेकिन यह सब होने पर भी हम एक राष्ट्र हैं। हम सबने मिलकर आजादी की लड़ाई लड़ी है और सबको विश्वास है कि हमारा देश बहुत उन्नति करेगा।

मैं आपसे अपील करता हूँ कि आप रुक कर सारी हालत पर ठंडे दिल से विचार करें। यह सवाल देश की एकता का है। हम चाहे किसी इलाके के रहने वाले हों और कोई भी जबान बोलते हों, हमें यह सोचना है कि सारे देश की भलाई

किस चीज में है। महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, हमारे दूसरे राष्ट्रीय नेता और हमारा संविधान बनाने वाले, सभी बुद्धिमान लोग थे और दूर की बात सोचते थे। उन सब का यह फैसला था कि एक महान भाषा होनी चाहिए जिससे देश के सभी लोग एक सुगठित राष्ट्र के रूप में एक सूत्र में बंध जाएं। इसमें किसी को सन्देह नहीं हो सकता कि यह एक शानदार, एक महान उद्देश्य है। लेकिन हमें ऐसे तरीकों से यह उद्देश्य पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए जिससे सबमें भरोसा पैदा हो। मैं सभी देशवासियों से अनुरोध करता हूँ कि आप इस सवाल को छोटी-मोटी बातों से ऊपर उठकर सोचें, सूझबूझ और तर्क के साथ इस पर विचार करें। अगर आप में से कुछ लोग अब भी यह समझते हैं कि उनकी कोई मुनासिब शिकायतें हैं या कोई ऐसी सरकारी कार्रवाई की गई है जो नहीं की जानी चाहिए थी, तो मैं और मेरे साथी फौरन ही आपकी बात सुनने और उस पर विचार करने को तैयार हैं। ऐसा करते समय हम आपकी सभी उचित आशंकाओं को दूर करने की कोशिश करेंगे। मुझे आशा है, मेरी आज की इस बातचीत से आपको इतना आश्वासन मिल गया होगा कि आप इस आन्दोलन को समाप्त कर सकें।

×			×			×			×

यह कहना ठीक नहीं है कि देश में अनाज की उपज नहीं बढ़ सकती अथवा हम खाद्य-समस्या पर काबू नहीं पा सकते। हमें इस पहलू पर गम्भीरता के साथ विचार करना होगा।

खाद्य की समस्या को हल करने के लिए हमें दफ्तरों के सुखद वातावरण के बाहर निकलकर खेतों में काम करना होगा। अब समय आ गया है कि हम खेतों में जाकर काम करें। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं स्वयं गांवों में जाकर बिना किसी दिखावे के कार्य करूँगा। मैं चाहता हूँ खास तौर से बड़े-बड़े अधिकारी गांवों में जायं, खेतों में जाएं, लोगों की दिक्कतें, तकलीफें सुनें और वहीं उनका कोई हल ढूंढें।

हम यह निश्चय कर लेना चाहिए कि चाहे कुछ भी क्यों न हो, हमें अनाज की उपज को बढ़ाना होगा। इसके लिए किसानों की व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने में प्रत्येक मंत्री और अधिकारी को भरसक प्रयत्न करना होगा।

देश में इस समय एकता की सबसे अधिक आवश्यकता है। धर्म, भाषा, जाति या क्षेत्र के नाम पर संघर्ष नहीं होना चाहिए। जनता के उत्साह को गरीबी तथा बेरोजगारी को दूर करने में लगाना चाहिए।

महात्मा गान्धी ने देश में दीपक जलाया और उसका प्रकाश पंडित नेहरू ने फैलाया। अब यह जनता का काम है कि उस दीपक को जलाये रखें। आत्म-विश्वास और दृढ संकल्प के सहारे छोटे-से-छोटा आदमी भी देश को मजबूत बनाने में बहुत कुछ योगदान कर सकता है।

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे पुरुषों मे चरित्र निर्माण हो, उत्तरदायित्व की भावना पैदा हो, तथा देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकें।

× × × ×

जिन लोगों के हाथों मे शासन का संचालन है, उन्हे सदैव जनता की प्रतिक्रिया से अवगत रहना चाहिए। उन्हें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि जनता के हाथों मे शासन की बागडोर है।

जहां तक भ्रष्टाचार को समाप्त करने का प्रश्न है यह मुश्किल काम है। पर मैं पूर्ण गम्भीरता के साथ यह कहना चाहता हूं कि अगर हमने पूर्ण दृढ़ता और निश्चय से इस समस्या को नहीं सुलझाया तो हम अपने कर्तव्य से तो विमुख होंगे ही, देश का बहुत बड़ा अहित करेंगे और इसके लिए इतिहास हम कभी क्षमा नहीं करेगा।

सबसे पहला और महत्वपूर्ण कार्य शासन के कार्यों मे देरी को रोकना है। हम लोगों के अन्दर यह भावना विकसित होनी चाहिए कि हम अपना काम जल्दी पूरा करना है। देर लगाने से कार्य कुशलता समाप्त हो जाती है। इसलिए हम तेजी से छोटे-बड़े सब काम करने की नई भावना दिखानी चाहिए। यदि शिथिलता रहती है, तो इससे असंतोष पैदा होता है और भ्रष्टाचार भी होता है।

हम पर भविष्य की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, यदि हम अपने देश की सुरक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं करते, तो हम कठिन स्थिति का मुकाबला करना पड़ सकता है, क्योंकि चीन हमारी सीमाओं पर बड़े पैमाने पर फोज जमाकर रहा है। हमे आशा है कि संकट के मुकाबले के लिये हम अपने आपको मानसिक, मनोवैज्ञानिक और सम्भव तरीके से पूरी तरह से तैयार रखेंगे। लोगों के अंदर कष्ट झेलने और बड़ी जिम्मेदारियों को निभाने की शक्ति पैदा होनी चाहिए। हम देश तथा देश के लोगों के सामने अपने छोटे हितों को भुला देना चाहिए। सारे देश को एक होकर कार्य करना है कि हमारे नेता और सरकार ने हमें जो कार्य सौंपा है, हम उसे पूरा करेंगे।

हम संसार के हर देश से मित्रता चाहते है। न तो हम युद्ध चाहते हैं और न ही अन्य देशों मे क्रांति को प्रेरित करना चाहते हैं।

हम किसी भी देश की एक इन्च भूमि पर अधिकार नहीं करना चाहते। हम

शांतिपूर्वक और अच्छे पड़ोसी की तरह रहना चाहते हैं, लेकिन अगर हम पर हमला हुआ तो हम पूरी शक्ति के साथ उसका मुकाबला करेंगे।

देश की संकट की घड़ी में लोगों को सैनिकों की तरह कदम से कदम मिलाकर चलना है। यह गलत होगा कि जब संकट हमारे सिर पर मंडरा रहा हो, हम तभी जागें। हमारे देश को हर दिशा में सदा जागरूक रहना है। केवल चीन के कारण ही हमें अपनी कमर नहीं कसनी है। हो सकता है कि फिलहाल चीन कुछ करे या न करे, पर इसका मतलब यह नहीं है कि हमें पूरी तरह अनुशासित और कृत संकल्प नहीं रहना चाहिए। हमें सबमें आत्मविश्वास और काम करने की धुन पैदा करने का प्रयत्न करना चाहिये। हम एक क्षण के लिए भी यह न भूलें कि निरन्तर सतर्कता से ही आजादी को कायम रखा जा सकता है।

अपनी भारी जिम्मेदारियों को निभाते हुए और हर स्थिति के मुकाबले के लिये तैयारी करते समय जबकि देश आजादी के लिये अपना सब कुछ बलिदान करने को तैयार है, हमें अपनी न्यायप्रियता तथा मानसिक शांति को नहीं खोना चाहिए।

× × × ×

सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के प्रश्न पर हमें बिना किसी पूर्वाग्रह के और रचनात्मक दृष्टिकोण से विचार करना होगा। समाजवादी कल्याणकारी समाज की रचना करना हमारा लक्ष्य है, इसलिए हमें सार्वजनिक क्षेत्र और बुनियादी उद्योगों के स्पष्टीकरण के बारे में सोचना होगा। मुझे यह डर नहीं है कि भारत में कुछ स्वार्थी लोग अपनी जड़ें जमा लेंगे और अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक शक्ति संपन्न हो जाएंगे। ४६ करोड़ जनसंख्या वाले देश में कोई कितना ही धन संपन्न क्यों न हो, वह अपनी मनमानी कर सके, यह नहीं हो सकता। उसे जनमत का आदर ही नहीं करना होगा, बल्कि उसके सामने झुकना होगा।

मुझे इस बात का गर्व है और बड़ी प्रसन्नता है कि हमारे देश की जनता न्यायप्रिय है, और मुझे विश्वास है कि देश का कोई भी वर्ग एक निश्चित मर्यादा में रहकर कार्य करेगा। देश के हर वर्ग की निष्ठा और सहयोग ही देश को आगे बढ़ायेगा।

× × × ×

हिन्दी भाषा बोलनेवाले प्रदेश हिन्दी में अपना सारा काम-काज करें, यहां तक कि केन्द्रीय सरकार से भी अपना पत्र व्यवहार हिन्दी में करें, सरकार की यह नीति आज की नहीं बल्कि पहले से ही रही है। प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू भी

यही चाहते थे। अतः जो भी हिन्दी भाषी राज्य हिन्दी में कार्य करना चाहेंगे, भारत सरकार उन्हें इस कार्य में पूरी मदद देगी।

हमारा देश एक बहुत बड़ा देश है, ऐसे मुल्क में अपने अपने ढंग की रीतियां हैं और कई बातों में फर्क है, लेकिन सबसे नीचे एक लहर है एकता की। उस एकता को हम कायम रखना चाहते हैं। क्योंकि आजादी के बाद राष्ट्रीयता की उमंग जब देश में आई, तो हर एक को अपनी अच्छी चीज अच्छी लगी और हर एक व्यक्ति अपनी भाषा की तरक्की चाहने लगा। हम उस उमंग को दबाना नहीं चाहते। इसीलिए हमने अगर जरा-सा भी ढीलापन दिखाया तो इसलिए कि हम देश को जोड़े रखना चाहते हैं। उसमें हमें सफलता मिली है।

कोई ऐसा सूबा नहीं, जहां हिन्दी के प्रति जागृति न हो। गुजरात सरकार और वहां की प्रदेश कांग्रेस दोनों ही की यह इच्छा है कि उस प्रदेश में सातवीं कक्षा के बजाय पांचवी कक्षा से हिन्दी को अनिवार्य विषय बना दिया जाए। दक्षिण भारत में लाखों छात्र हिन्दी भाषा की विभिन्न परीक्षाओं में शामिल होते हैं। खास तौर से दक्षिण भारत की महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा अच्छी हिन्दी जानती हैं। अतः स्थिति 'निराशा जनक' कत्तई नहीं है। हां, इतना जरूर है कि हिन्दी भाषी प्रदेशों को जितनी तेजी से आगे जाना चाहिए; उतनी तेजी से वे आगे नहीं गए।

हिन्दी को बढ़ाने का बोझ हिन्दी भाषी प्रदेशों को अपने ऊपर लेना चाहिए। किन्तु हिन्दी भाषी प्रदेशों के लोगों को एक मिनट भी ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए, जिससे हिन्दी न जानने वाले प्रदेशों के लोगों के दिल को ठेस पहुंचे।

हिन्दी-सेवी यह देखें कि हिन्दी में कहां कमी है और वे उस कमी को पूरा करें। इस दृष्टि से हिन्दी भाषी राज्यों की विशेष जिम्मेदारी है।

अगर देश की एकता के सूत्र में जोड़े रखना है तो देश के लिये एक भाषा बहुत जरूरी है और वह भाषा हिन्दी ही हो सकती है।

भाषाओं की अपनी विशेषताएँ भी हैं। सरकार की नीति उन भाषाओं को प्रोत्साहन देने की है। हिन्दी उन भाषाओं के बीच एकता की कड़ी होगी। जैसे रूसी भाषा सोवियत संघ की जनता की सामान्य भाषा है।

× × × ×

व्यर्थ का जोश-खरोश दिखाए बिना समस्याओं का धैर्यपूर्वक सामना करते हुए आप लोग नया समाज बनाने की दिशा में सहयोग करें।

मुझे यह देख कर और भी आश्चर्य होता है कि कांग्रेस जन भी स्वयं जोश में बहकने लगते हैं और गांधी जी के सिद्धांतों को भूल जाते हैं। जोश में आने से

हम लक्ष्य से भटक जायेंगे। उचित यही है कि लक्ष्य पर दृढ़ रहकर ही नया राष्ट्र बनाएँ।

गांधी जी ने आधारभूत सिद्धांतों का पाठ पढ़ाया था। सत्य-अहिंसा के वे सिद्धांत सदैव मान्य रहेंगे परन्तु समय के साथ, संसार की प्रगति के साथ उनमें कुछ परिवर्तन भी हो जाते हैं। जीवन स्तर की उन्नति के साथ भविष्य में यदि चरखे वाली खादी को एक लघु उद्योग का बड़ा रूप दिया जाए तो भी अनुचित नहीं होगा।

मार्क्स और उनके बाद लेनिन जो कह गए वह ४०-५० बरस बाद भी बिल्कुल सोलहों आने सही हो, यह नहीं हो सकता। उस समय और आज की स्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया है। फिर यह दिमागी गुलामी नहीं चलनी चाहिए।

हमें उपेक्षित और निम्न समझे जाने वाले समाज में नई जान पैदा करनी चाहिए, तभी हम नया समाज बना सकेंगे।

× × × ×

राजनैतिक क्षेत्रों में पिछले वर्षों के जमाने से आज का जमाना मेरे खयाल से ज्यादा कठिन है। हम मिनिस्टरी तो करते हैं, लेकिन गवर्नमेंट में भी हैं, शान-शौकत भी है, लेकिन आज की राजनीति, मेरी राय में ज्यादा उलझी हुई है, ज्यादा कठिन है और ज्यादा अटपटी बन गई है। एक काम करो, दूसरी बात उलझती है। उसे संभालो तो फिर कहीं एक गुत्थी पड़ जाती है और नतीजा यह है कि चारो तरफ से आदमी गुत्थियो से उलझा हुआ है।

हमें और आप को यह अनुभव करना है कि आज जिन कठिनाइयों से हम निकल रहे हैं, वह ऐसी है जिनमें कि आज हमारे देश के रहनेवालों को बहुत गम्भीरता से, बड़े संचय से देश की बातों को समझना होगा और उसको ठीक रास्ते पर लाये जाने का प्रयत्न करना होगा।

केवल जोश मुल्क को बनानेवाला नहीं है। जितना इस्तेमाल हो, करना चाहिए। यह एक अच्छी बात है। लड़ाई के मैदान में उतरेंगे तब और कुछ नहीं चाहिए। लेकिन हर वक्त एक टेंशन, एक बेचैनी, एक परेशानी पैदा करना जन-मानस को गलत रास्ते पर ले जाता है। मेरा खयाल है यह पहलू आवश्यक है।

यह दुनिया तो नहीं बदलती, रंगत कुछ बदलती जाती है। मैं कभी-कभी आजकल महसूस करता हूँ कि जो लोग जाते हैं, उनकी जगह हम भर नहीं पाते। यह दुनिया तो चलेगी, लेकिन क्या हम रिलेशंस को कायम रख सकेंगे?

मैं समझता हूँ, उससे हमारा भी भला होगा, समाज का भी भला होगा और हमारे देश का भी भला होगा।

× × × ×

प्रत्येक स्त्री और पुरुष अपना थोड़ा कर्तव्य निभाये और राष्ट्र-निर्माण के कामों में हाथ बटाये।

मुझे जो भारी बोझा सौंपा गया है, उसे आज मैंने औपचारिक तौर पर वहन किया है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि जनता में अपार सद्भावना है और वह चाहती है कि हम सफल हों।

कलह और छिद्रान्वेषण के वातावरण का अंत होना चाहिए। हमारे सामने जो कठिन समस्याएँ उपस्थित हैं, उन्हें एकता, लगन और साहस के साथ हल करने में रचनात्मक प्रयास होना चाहिए।

जवाहरलाल जी हम लोगों के बीच नहीं रहे, पर सदैव स्मरण रहेगा कि हमें आगे बढ़ना है और पूरी शक्ति भर राष्ट्र की सेवा करना है।

हमारा देश महान है। उसकी विरासत शानदार है और हमें अपने को उसके अनुरूप सिद्ध करना है।

हमारे सामने जो भी समस्याएँ हैं, उनमें गरीबी जैसी भयावह समस्या और कोई नहीं है। इस गरीबी से हमारे देश के करोड़ों लोग पीड़ित हैं। मैं चाहता हूँ कि किसी तरह से हम लोगों की गरीबी के बोझ को कैसे हल्का करूँ? मैं अनुसूचित जातियों और अनुसूचित वर्गों जैसे अत्यन्त पिछड़े लोगों के कष्टों को भूल नहीं सकता, जो शताब्दियों से उपेक्षित और पीड़ित रहे हैं। मैं सामाजिक न्याय और समानता स्थापित कर सकूं, यह मेरे लिये अत्यन्त गौरवपूर्ण बात होगी।

× × × ×

हमारे सामने कई मुख्य कार्य हैं। उनमें लोगों की एकता और संगठन का सवाल हमारी शक्ति और स्थायित्व की दृष्टि से सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। हमारा देश सामान्य खतरे के सामने कठोर चट्टान की तरह अडिग रहा है और हमारे अन्तराल में गहरी एकता है, जो प्रत्यक्षतः दिखाई देनेवाली विभिन्नता के बीच सोने के धागे की तरह है, जो उसे एक सूत्र में पिरोये रखती है।

लेकिन हमारी राष्ट्रीय एकता और संगठन शाश्वत है, ऐसा हम स्वीकार नहीं कर सकते या उस पर आश्वस्त नहीं रह सकते क्योंकि कई ऐसे अवसर आए हैं, जब दुर्भाग्यपूर्ण और एकता को भंग करनेवाले विभाजन हुए हैं।

कई अवसरों पर दंगा-फिसाद हुआ है और हमारे समाज की शांति भंग हुई है। मैं जानता हूँ कि इन झगड़ों से जवाहरलाल जी को गहरा धक्का पहुँचा और उन्हें कई अवसरों पर भारी आक्रोश हुआ। वे जीवन भर साम्प्रदायिक एकता और पारस्परिक सहिष्णुता के लिये सतत प्रयत्नशील रहे हैं। देश के विभिन्न भागों के सभी व्यक्तियों को, यह नहीं भूलना चाहिए कि वे पहले भारतीय हैं चाहे किन्हीं खास मामलों में उनके विचार जोश भरे क्यों न रहे हों। हमारे मतभेद इस मूलाधार पर दूर होने चाहिए कि हम एक राष्ट्र हैं और सब एक ही देश के निवासी हैं। हमें एकता की भावना उत्पन्न करने के लिये हर तरह से कोशिश करनी चाहिए और राष्ट्रीय एकीकरण के काम को पूरा करना चाहिए जो हम लोगों को जल्दी ही आरंभ करना चाहिए।

हमारे सामने सबसे बड़ी जटिल समस्या हमारी योजनाओं और नीतियों को क्रियान्वित करने की है। हमें यह विचार करना है कि उसके लिये हम किस तरह से आवश्यक शक्ति और क्षमता उत्पन्न कर सकते हैं

इस पर विचार करते समय सहज ही प्रशासन की योग्यता और दक्षता की समस्या मेरे सामने उपस्थित होती है। हमारी सार्वजनिक सेवाओं ने स्वतंत्रता के बाद जब भी आवश्यकता पड़ी, अपना फर्ज पूरा अदा किया। लेकिन यह आम धारणा है और मैं भी यह आवश्यक समझता हूँ कि प्रशासन में व्यापक सुधार होना चाहिये। और तभी आर्थिक विकास और सामाजिक पुनर्रचना के महान कार्य पूर्ण हो सकेंगे।

× ×

इसके अलावा, लोकतंत्र में यह आवश्यक है कि लोक सेवाएं आम नागरिकों की भावनाओं और विचारों की कद्र करें। वे हर परिस्थितियों में न केवल औपचारिक ढंग से वल्कि सेवा, सहानुभूति और मानवता की दृष्टि से काम करें।

प्रशासकीय संगठन, उसके तौर तरीकों और प्रणालियों को, आर्थिक परिवर्तनों को, प्रभावशाली ढंग से पूरा करना है, तो आधुनिक बनना पड़ेगा।

मैं जानता हूँ हम लोगों में उत्साह है और हम राष्ट्र के गौरव, शक्ति और उसके स्थायित्व के लिये कुछ त्याग कर सकते हैं। लेकिन कभी कभी हमारे धैर्य का बांध टूट जाता है और दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हो जाती हैं, जिससे हर शख्स को दुःख होता है।

× ×

पाकिस्तान और चीन के प्रति नीति के मामले में ऐसा कुछ भी मैं नहीं करूंगा, जो राष्ट्र के हित और सम्मान के विपरीत होगा।

मैं काम करने के कुछ और तरीकों पर विश्वास करता हूं। नीति में मेरी आस्था है लेकिन मैं राष्ट्र के हित और सम्मान के विपरीत कुछ नहीं कर सकता।

× ×

जहां तक चीन का संबंध है, कोलम्बो प्रस्ताव स्वीकार करके भारत चरम सीमा तक आगे बढ़ चुका है। अब आगे जाने की गुंजाइश नहीं है। चीन यदि कोई प्रस्ताव करता है, हमें उस पर विचार करने के लिये तैयार रहना चाहिए। सम्भव है वह प्रस्ताव स्वीकार करने योग्य न हो और देश को अपनी शक्ति बढ़ाने का काम जारी रखना पड़े।

× ×

भारत में समाजवाद का उद्देश्य सिद्ध करने में मैं निरन्तर जुटा रहूंगा जिससे खेतिहरों, श्रमिकों और मध्यवर्गी लोगों का जीवन पहले से अधिक सुखमय हो। लोकतंत्र में विचार की स्वतंत्रता होती है, यह कम्युनिस्ट नहीं मानते। नेता वही होता है, जो लीक लीक नहीं चलता, अपितु बदलती हुई परिस्थितियों का सामना करता है।

मैं अलग अलग रहने का तरीका पसंद नहीं करता। हमने विचार-भेद को हमेशा बर्दाश्त किया है। आज कुछ आलोचकों को असहिष्णुता देखकर मुझे दुःख होता है। शांतिपूर्वक बात करके मामला निपटाने की नीति पर चलने की कोशिश कमजोरी की निशानी समझी जाती है। जो शांति की बात करते हैं, वे दिल के मजबूत होते हैं। जहां तक बातचीत के नतीजे का सवाल है यह कैसे सम्भव है कि भारत के लिए नुकसान पहुंचाने वाला हो, तो भी मान लिया जाय।

मैं अपने प्रधान मंत्री चुने जाने के पहले दिन ही कह चुका हूं कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हम नेहरू की नीतियों को तथा देश में लोकतंत्रीय समाजवाद को अपनाते रहेंगे।

गांधी जी के सब विचारों से सहमत न होते हुए भी श्री नेहरू गांधी जी के प्रति वफादारी और श्रद्धा में सबसे आगे रहे। वह गांधी जी के भक्त थे और उसके प्रति पूर्ण श्रद्धालु, पर उनका अपना सोचने का तरीका स्वतंत्र तरीका था। जब उन्होंने सरकार बनाई, तो वे गांधी जी के प्रत्येक विचार को कार्य रूप नहीं दे सके। पर इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने गांधी जी के प्रति अश्रद्धा दिखाई या कोई गलत काम किया। रूस में लेनिन की नीति को उनके उत्तराधिकारी स्टालिन ने बदल दिया और स्टालिन की नीति में क्रुश्चेव ने परिस्थिति

के अनुसार परिवर्तन कर लिया। क्या परिस्थिति के अनुसार नीतियों में परिवर्तन नहीं होना चाहिए ? जहाँ तक अन्तर्राष्ट्रीय नीति का प्रश्न है, गुटों से अलग रहने की नेहरू जी की नीति पर ही हम चलते रहेंगे, आंतरिक नीति भी हमारी वही होगी, लेकिन परिस्थितियाँ जब भी परिवर्तन की मांग करेंगी, हमें वह करना होगा।

× × × ×

मैं यह मानता हूँ कि सरकार के विभिन्न विभागों में तालमेल की जबरदस्त कमी है, अनेक विभाग कई बातों पर उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहते।

कांग्रेसियों में नहीं, साम्यवादी-दल में जबरदस्त फूट है। जब चीन ने भारत पर हमला किया तब साम्यवादी दल को सदैव यही था कि चीन ने आक्रमण ही नहीं किया। इस दल ने चीन और भारत को एक समान स्तर पर ही रख दिया। दर असल उनके दिमाग में एक बात साफ नहीं हो सकी कि किसने आक्रमण किया है। मुझे समझ में नहीं आता कि यदि कहीं साम्यवादी दल को शासन करने का मौका मिल गया, तो वे कैसा प्रशासन करेंगे।

भ्रष्टाचार समाप्त करने का मेरे दिमाग में एक उपाय है कि ज्यों ही प्रधान-मंत्री अपने मंत्रिमण्डल के किसी मंत्री को कहेंगे कि उनके विरुद्ध आरोपों की पहली नजर में जाँच से मालूम होता है कि भ्रष्टाचार के आरोपों में कुछ तथ्य है, त्यों ही उन्हें त्यागपत्र दे देना चाहिए। लेकिन इसके साथ ही मैं यह भी कहूँगा कि भारत में चरित्र की महानता आज भी और देशों से बड़ी समझी जाती है।

सरकारी अफसरों तथा ग्रामीणों के बीच अच्छा सम्पर्क बढ़ाना आवश्यक है। विकास खंड के अफसरों को गांवों में पैदल जाना चाहिए, जीपें वहाँ से ले लेनी चाहिए। जीप होने से अफसर गांवों में कम जाते हैं और जब जाते हैं, तो जल्दी लोट आते हैं। जब पैदल जायेंगे, तो कुछ समय गांवों में ठहरेंगे और लोगों से सम्पर्क बढ़ाएंगे।

मंत्रियों को भी जहाँ तक सम्भव हो, दौरे के समय डाक बंगले में न ठहरकर गांवों में ही ठहरना चाहिए। जब हम सरकारी अफसरों का गांवों में सम्पर्क बढ़वाना चाहते हैं, तब मंत्रियों को भी वैसा ही करना होगा।

भारत में समाजवाद का अर्थ होना चाहिए कृषि में लगी हमारी जनता की विशाल संख्या का, कारखानों में काम कर रहे मजदूरों की और अत्यधिक कष्टों में से गुजरे मध्यवर्गीय की बेहतरी। यही लोग हमारे देश के साधारण जन हैं। मेरी यह कोशिश रहेगी कि यह उद्देश्य पूरे हों और एक ऐसी सामाजिक और आर्थिक समता कायम हो, जिसमें हमारी जनता का कल्याण सुनिश्चित हो सके।

शोकोद्गार

श्री लालबहादुर शास्त्री के अचानक देहान्त की खबर सुनकर जैसे आप सब लोगों को गहरा धक्का लगा है, वैसे ही मुझे भी लगा। उन्होंने बड़े कठिन समय में अठारह महीने तक प्रधान मंत्री की हैसियत से देश की सेवा की। जवाहरलाल नेहरु की मृत्यु से जो स्थान खाली हुआ, उसे भरना कठिन था। कांग्रेस संसदीय दल ने लालबहादुरजी को अपना नेता चुना और उन्होने प्रधान मंत्री का पद ग्रहण किया।

स्वतन्त्रता संग्राम में और उत्तरप्रदेश के मंत्री की हैसियत से तथा बाद में भारत सरकार के मंत्रिमण्डल के सदस्य के रूप में उन्होंने जो काम किए, वे सर्वविदित हैं। स्वतन्त्रता के बाद के दिनों में श्री लालबहादुर शास्त्री ने कांग्रेस दल के संगठन का काम किया। वह शान्त, सौम्य, पर दृढ़ सकंल्प देशभक्त थे।

हमारे सामने खाद्य और वित्त आदि की कठिनाइयां तो थीं ही, इसके अलावा कच्छ के रण में और जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान से युद्ध का भी संकट हमें झेलना पड़ा। इस आक्रमण का सामना करने में श्री लालबहादुर शास्त्री ने देश का नेतृत्व किया। पाकिस्तान से समझौते की बातचीत करने के लिए वह ताशकन्द गए। वहां पर उन्होंने जो कठिन परिश्रम किया और उन पर जो तनाव पड़ा, उससे उनके जीवन का अन्त हो गया। वह शान्ति का प्रयत्न करते हुए, पिछली कटुता को भूलकर दोनों देशों में मित्रता और शान्ति का समझौता करते हुए मरे। मुझे आशा है कि इस बातचीत से दोनों देशों के रुख में नर्मी आई है। हमारी समस्याएं सेना के द्वारा हल नहीं हो सकती। दोनों देशों को यह समझना चाहिए कि यदि हम अपने विरोधी को फौजी ताकत से हराने का प्रयत्न करते हैं तो इससे शत्रुता और द्वेष और बढ़ता है और यदि हम अपने शत्रु को सद्भाव से जीतने का प्रयत्न करते हैं तो इससे मित्रता और शान्ति कायम होती है। बल और भय के ऊपर जो शान्ति स्थापित होती है, वह स्थायी नहीं हो सकती, वह तभी स्थायी हो सकती है जब वह न्याय और सत्य पर आधारित हो।

आज हमारा राष्ट्र अपने प्रधान मंत्री के प्रति आभारी है और उनके लिए गहरा शोक मना रहा है। हम यही कर सकते हैं कि अपने पड़ोसियों के साथ मित्रता और मेल से मिलजुलकर रहने का अपनी पूरी शक्ति से प्रयत्न करें।

मैंने दो-एक बार लालबहादुरजी से कहा था कि हम जो सबसे बड़ा सम्मान दे सकते हैं, वह भारत-रत्न का अलंकार है और मैंने निश्चय किया था कि गणराज्य

दिवस पर उनको यह अलंकार देने की घोषणा करूं। अब मैं शोक के साथ उनकी मृत्यु के बाद उनको भारत—रत्न का सम्मान प्रदान करने की घोषणा करता हूं।

देहिनोस्मिन यथा देहे कौमारम् यौवनम् जरा
तथा देहान्तरप्राप्तिः धीरस्तत्र न मुह्यति।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।

श्री लालबहादुर शास्त्री भारतीय लोकतन्त्र की दृढ़ता के ज्वलन्त उदाहरण थे। उनका जन्म किसी प्रभावशाली या धनी परिवार में नहीं हुआ था। उन्हें जन्म से ही प्रभावशाली स्थिति या धन के लाभ प्राप्त नहीं थे, फिर भी उन्होंने अपनी मामूली स्थिति से उन्नति कर देश की सरकार के सर्वोच्च पद पर काम किया है। यह उनकी चारित्रिक शक्ति और ईमानदारी से ही सम्भव हुआ। इन्हीं के बल पर वे उन्नति कर प्रधान मंत्री के उच्च पद पर पहुँचे। यदि लोकतंत्रीय परम्परा, हमारी चेतना, हमारे मन और हमारे हृदय में इतनी गहराई में न पैठी होती तो यह बात सम्भव नहीं थी। इसके अलावा श्री लालबहादुर शास्त्री किसी भी नाजायज या अन्यायपूर्ण बात को सहन नहीं करते थे और न वे लोकतन्त्र को इस प्रकार चलने देने को तैयार थे, जिससे लोगों को गरीबी का जीवन बिताना पड़े।

हमने अपने देशवासियों के रहन-सहन को ऊंचा करने के लिए हर सम्भव कोशिश की, इसका अभिप्राय यह है कि हमने अपने लोकतंत्र को समाजवादी लोकतंत्र बनाया। यदि आर्थिक और सामाजिक असमानता के रहने राजनीतिक समानता हो भी जाए तो उसका कोई अर्थ नहीं है। यदि राजनीतिक समानता को महत्वपूर्ण या उपयोगी बनाना है तो हमें आर्थिक समानता भी लानी होगी। अवसर की समानता और सामाजिक समानता भी आवश्यक हैं।

श्री लालबहादुर ताशकन्द गए। भौगोलिक दृष्टि से भारत एक विशिष्ट स्थान पर स्थित है और उसको केवल प्राचीन धर्मग्रन्थों की ही विरासत नहीं मिली, बल्कि हमारे आधुनिक नेताओं महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू से भी स्वस्थ परम्पराएं मिलीं। यही कारण है कि श्री लालबहादुर शास्त्री शान्ति को सर्वोपरि महत्व देते थे और जब लड़ाई शुरू हो गई तो उन्हें बहुत कष्ट और आघात पहुँचा। ताशकन्द में इस लड़ाई के घावों पर मरहम लगा। ताशकन्द घोषणा क्या है? मेरे मित्र श्री कोसीजिन ने इस घोषणा का मसौदा तैयार कराने में प्रमुख और प्रशंसनीय हिस्सा लिया। यह घोषणा कोई क़ानूनी दस्तावेज, कोई राजनीतिक

समझौता या नैतिक उपदेश नहीं है। यह तो हृदय-परिवर्तन की पुकार है। हमने सदा कहा है कि राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के निपटारे में शक्ति का प्रयोग नहीं होना चाहिए। हर स्थिति में हम इस आदर्श का पालन करना चाहते हैं। हमें बाध्य हो बल प्रयोग करना पड़ा। हमें इस बात का खेद रहा कि हमें बाध्य हो यह कार्य करना पड़ा। हमको इस दुविधा में डाल दिया गया था। अतः श्री लालबहादुर शास्त्री ने ताशकन्द वार्ता में सबसे अधिक जोर इस बात पर दिया कि झगड़ों के निपटारे में बलप्रयोग किसी भी स्थिति में नहीं होना चाहिए। शुरू से अन्त तक वे इसी बात पर जोर देते रहे और अन्ततः उन्होंने इस बात को मनवा लिया। यदि आप इस घोषणा पर गहराई से विचार करेंगे, तो पाएंगे कि यह सबसे अधिक हृदय-परिवर्तन पर जोर देता है।

यदि आज के संसार में अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को सुलझाने में बलप्रयोग को ही हम एकमात्र रास्ता मान लें, तो हमारे सामने सम्पूर्ण विनाश या परिवर्तन दो ही विकल्प रह जाते हैं। ताशकन्द की घोषणा में यही बात ध्वनित हुई है। यह केवल हमारे लिए ही एक सलाह नहीं है, बल्कि संसार के उन सब देशों के लिए सलाह है, जो यह जानते हुए कि हथियार बन्दी का अन्तिम परिणाम मानव-सभ्यता का विनाश होगा, यह कार्य कर रहे हैं।

ताशकन्द घोषणा ने हमारा आह्वान किया है कि हम सब मामलों पर एक नई भावना से विचार करें। यदि हम बदलते नहीं तो अनेक अन्य जातियों की तरह हमारा भी नाश हो जाएगा। अतः ताशकन्द घोषणा हमें बताती है कि जहां तक सम्भव हो बलप्रयोग से बचो और इसे पूरी तरह समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहो और यदि हम ऐसा करेंगे, तो संसार में स्थायी शान्ति कायम होगी।

हमें श्री लालबहादुर शास्त्री के जीवन से यही सबक मिलता है कि हम चाहे जो भी काम करें, उसे निस्वार्थ भाव से करें और संसार के सब लोगों की एकता, सद्भाव और मित्रता के लिए प्रयत्नशील रहें।

—डा० एस० राधाकृष्णन, राष्ट्रपति, भारत

आज हमारा देश गम में डूबा है। हमारी जनता के दिलों में दुख भरा हुआ है। आज जिस वक्त उस तोप-गाड़ी में, लाल बहादुरशास्त्री जी के मृतक देह को वह तोप-गाड़ी ले जा रही थी, उस वक्त दोनों तरफ रास्ते में बेशुमार हुजूम था और हमारे देश की स्त्रियाँ और बच्चे आंसू बहाकर प्रेम की श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे थे लाल बहादुर शास्त्री जी की याद में। वह क्या समझते थे, क्या था उनके दिल में ?

वह जानते थे इस बात को कि इस देश ने एक अनमोल रत्न खो दिया। देश को काफी भारी क्षति हुई है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

हमारे देश के लोगों को पहिचान है, कौन है सच्चा सेवक उनका, कौन उनका सच्चा मार्ग बतानेवाला है, कौन उनके लिए हर किस्म की कुर्बानी करने के लिए तैयार है और ये बातें थी जिनकी वजह से लालबहादुर शास्त्री जी ने बहुत बड़ा स्थान प्राप्त किया इस देश के लोगों के दिलों में। उनका बल उनकी शक्ति थी। यह प्रेम और श्रद्धा जो हमारे लोगों की थी उनसे और इसी बल पर उन्होंने बड़े-बड़े काम किये, बड़ी बड़ी सफलताएं प्राप्त की।

इस वक्त मेरे मन में याद ताजा हो जाती है एक ओर—एक ओर हमारे बड़े महान नेता थे जिन्होंने बड़े महान कार्य किये इस देश में और जो सिद्धि उन्होंने प्राप्त की उनके तह में यह बात थी देश की विशाल प्रजा का प्रेम और श्रद्धा और वह यह कहा करते थे। वही बात और उससे पहले महात्मागांधी जी ने जो चमत्कार दिखाया, हौसला दिखाया देश में उसका राज भी यही था। महात्मा गांधी का मैंने जिक्र किया इस मौके पर, उनका लम्बा रास्ता था और उस रास्ते के अन्त में उन्होंने हमारे देश को गुलामी की जंजीरों को तोड़ा और हमें स्वतंत्रता प्राप्त कराई। मगर जो चित्र था उनके सामने इस देश के लिए उसको रूप नहीं दे सके, दरवाजे पर हमें लेकर आये और फिर वह चल दिये और फिर उनका बोझा, इस देश के कामों का पड़ा जवाहरलाल जी के सिर पर और इन वर्षों में उन्होंने एक लोकतंत्र की बुनियाद को पक्का किया। उन्होंने हमें रास्ता बताया आगे चलने का. उन्होंने हमें फिलाफसी दी आर्थिक प्रगति की और सामाजिक प्रगति की और उन्होंने यह बताया कि गुट-बंदियों से बचते हुए आगे जाना है। उन्होंने इस देश की नाव को तूफानों से बचाते हुए आगे ले जाने की कोशिश की और उन्होंने यह भी किया कि आज ताकत चाहिये देश को किसी भी स्थिति का मुकाबला करने के लिए, किसी भी भय का सामना करने के लिए, वह ताकत पैदा करने के सारे सामान मुहैया किये इस देश के अन्दर। वह अपना काम अधूरा छोड़कर, समाजवादी समाज बनाना चाहते थे, वह चले गये हमको छोड़कर और फिर उनका काम, जिम्मेदारियां, वह बोझा फिर आया लाल बहादुर शास्त्री के कन्धों पर। कुछ लोग शंका करते थे कि क्या ये निभा लेंगे, क्या होगा ? इस देश की बड़ी-बड़ी कठिनाइयां है और बड़ी-बड़ी समस्याएं हैं, मगर जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गये, उन कठिनाइयों को हल करते गये और देश के प्रश्नों को हल करते गये और कठिनाइयां भी बढ़ती गयीं, मगर वे भी बढ़ते गये वे भी ऊंचे होते गये, उनकी शक्ति भी बढ़ती गयी, यह उन्होंने काम करके बतलाया। उनके पास एक परम्परा थी, विरासत था गान्धी जी का, जवाहरलाल जी

का, वह गरीबी का अनुभव करते थे और इसलिए वे गरीबों का दुख अनुभव करते थे। मैं जानता हूं इस बात को, जब सवाल आते थे, लोगों की खुराक की समस्या हैं, तकलीफें हैं, तो वे रो पड़ते थे। क्योंकि वे उन तकलीफों को जानते थे। उनके लिए समाजवाद यह था कि देश के लोगों को और कुछ नहीं तो कम से कम ये साधारण जरूरतें जो हैं उनके बगैर कोई एक परिवार भी न रह जाय। यह नक्शा था, जिसको वे जल्दी से जल्दी पूरा करना चाहते थे देश के लिए।

वे शान्ति चाहते थे इस देश के लिए और अन्तर्राष्ट्रीय शांति भी चाहते थे। विश्व के देशों में झगड़ा न हो, झगड़ा पसन्द नहीं करते थे, झगड़ा मिटाना चाहते थे। झगड़े सुलझाना तथा शांति की बात तो थी ही, मगर बहुत कुछ सामना करना पड़ा और उसके बाद इन्होंने शांति का रास्ता लिया। यात्रा पर वे गये ताशकन्द और जाकर बड़ी महान सफलता प्राप्त की वहां पर। मैं आपसे यह नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं, जो उन्होंने समझौता किया, वह इस देश का एक ट्रस्ट है और यह हमारी जिम्मेदारी है, हम इसको सम्पूर्ण तौर पर अदा करेंगे। हम उसे देश के लिए न्याय और इज्जत के लिए इस काम को, इस जिम्मेदारी को, जो हमारे सिर पर आई हैं, शांति का मार्ग जिस पर हम चलने लगे हैं, उसको हम पूरा करेंगे। यह हम देश की तरफ से, आप सब की तरफ से वादा करते हैं विश्व को।

एक बात और कह देना चाहता हूँ, वे चले गये और यह सब कुछ हुआ। मगर आज भी इस देश के सामने बहुत बड़ा कठिन काम पड़ा है। बड़ी समस्याएं हैं, खतरे भी हैं, इसके लिए हमें प्रयत्न जारी रखने हैं। इसके लिए हमें तैयारी जारी रखनी है। देश के अन्दर गरीबी का सवाल है, देश के अन्दर एक नये आधार पर समाजवाद बनाने का सवाल है, देश में ताकत पैदा करने का सवाल है, यह सब कुछ हमारे सामने है और वही जो वादा हमने किया है जवाहरलाल नेहरू को, एक सोशलिस्ट सोसायटी बनाने का, वह काम हमें पूरा करना है इस देश के अन्दर। इसके लिए, इन सब चीजों को करने के लिए एक बात मैं नम्रता पूर्वक अर्ज करना चाहता हूँ, कहता हूँ इस देश में जो एकता अभी हमने पैदा की, जिससे आज बहुत कुछ सफलता हमें मिली। उसके पीछे के कारण हैं। उस एकता को कायम रखना है। मुझे विश्वास है कि हमारे देश के लोग कितना कुछ कर सकते हैं, कितना कुरबानी कर सकते हैं, कितना त्याग कर सकते हैं, उन्होंने इस बात का सबूत दिया है और मुझे विश्वास है कि आगे जाकर हर मौके पर वे सबूत देंगे इस बात का और इस देश के लिए एक महान भविष्य है। यह देश अब कभी किसी के आगे सिर निचा नहीं करेगा। यह देश अब आजादी

लेकर और जो कुछ गांधी जी ने बताया सर्वोदय की बात, जो समाजवाद की और अखण्डता की बात, उसे स्वतंत्रता को हमेशा बचाकर रखने की बात यह आज हम भूलेंगे नहीं और लालबहादुर शास्त्री की आत्मा के सामने, उसका विचार करते हुए कहता हूँ। मैं उनके साथ-साथ, पिछले महीने में बहुत नजदीक था। मैं जानता था कि उनके दिल में कितना प्रेम और कितना उनके अन्दर दर्द था। मैं यह कहता हूँ आप सबकी तरफ से इस देश की आजादी को हमेशा कायम रखने के लिए, इस देश को खुशहाल बनाने के लिए और दुनिया के अन्दर आगे से आगे बढ़ने के लिए हम सब कुछ कर छोड़ेंगे, हर तरह का बलिदान देने के लिए हम तैयार हैं।

—गुलजारीलाल नंदा, कार्यकारी प्रधानमंत्री, भारत

भारत के प्रख्यात राजनेता तथा सरकार के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के असमय निधन की दुखद खबर से रूस के लोगों को भारी दुख पहुँचा है।

अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से ही श्री लालबहादुर शास्त्री, महात्मा गान्धी तथा श्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में देश की आजादी की लड़ाई में भाग लेते रहे। भारत की स्वतन्त्रता के बाद उन्होंने अपनी सारी शक्ति देश के लोगों की सेवा और भारतीय राज्य के संगठन में लगा दी थी। भारत के प्रधान मंत्री बनने के बाद उनकी राजनैतिक प्रतिभा और देश के नेतृत्व करने की शक्ति और भी स्पष्ट हुई थी।

श्री लालबहादुर शास्त्री ने शांति की शक्तियों को सुदृढ़ बनाने और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाने में बड़ा योगदान दिया। उनकी सरकार ने बड़ी मजबूती तथा बिना किसी हिचक के भारत की शांतिप्रिय तथा दूसरे देशों से मैत्री स्थापित करने की विदेश नीति को चलाया। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने भारत तथा पाकिस्तान के बीच सामान्य संबंध स्थापित करने के लिए रचनात्मक प्रयत्न किए। भारत की ओर से ताशकंद घोषणा पर हस्ताक्षर करके उन्होंने एशिया तथा विश्व में शांति को सुदृढ़ करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

रूस के लोग लालबहादुर शास्त्री को रूस के महान् मित्र के रूप में सदा याद करेंगे। उन्होंने भारत तथा रूस के लोगों में अधिकाधिक सहयोग तथा अटूट मैत्री का विकास करने के लिए बहुत प्रयत्न किया।

रूस की सर्वोच्च सोवियत की प्रेसिडियम तथा रूस की सरकार भारत के लोगों, आपको तथा भारत सरकार को हार्दिक शोक संवेदना का संदेश भेजते हैं।

—एन० वी० पोदगोर्नी, राष्ट्रपति, सोवियत सरकार

भारत की महान जनता को आपकी सरकार के नेता श्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु से जो एक बहुत बड़े राजनेता और राजनीतिज्ञ थे, भारी नुकसान उठाना पड़ा है। हम सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल और सोवियत सरकार की ओर से आपको इस शोक की घड़ी में शामिल होने के लिए और आपके दुख में जो कि हम देख रहे हैं कि भारत भर में छाया हुआ है, हिस्सा लेने के लिए यहाँ आये हुए हैं। प्यारे दोस्तो, हम आपको बताना चाहते हैं कि सोवियत संघ की जनता अपने मित्र भारत की जनता के दुख से दुखी है। यदि कल आप ताशकन्द में होते तो आपने खुद देखा होता कि हमारे देश के लोगों के हृदय में कितना गहरा दुख और कैसी दिली हमदर्दी है। लोग लाखों की तादाद में आपके प्रधानमंत्री के दर्शन के लिए, जो इस कदर अचानक और ऐसे अफसोसनाक ढंग से हमसे छिन गये, सड़कों पर जमा थे।

जो सदमा आप पर आ पड़ा है उसकी गहराई और कड़वाहट हम और भी ज्यादा इसलिए महसूस करते हैं कि हमें ताशकन्द सम्मेलन के सात दिनों के दौरान श्री लालबहादुर शास्त्री से हर रोज बहुत नजदीक से मिलने और उन्हें जानने का मौका मिला था और हमने यह देखा था कि किस तरह वह महान व्यक्ति एक बुद्धिमान राजनेता की तरह भारत के लिए जबरदस्त महत्व रखने वाले एक सवाल का हल ढूंढ़ निकालने के लिए पूरी ताकत और बड़े धीरज के साथ लगा हुआ था। इन पूरे सात दिनों के अन्दर और उनकी मृत्यु के सिर्फ तीन घंटे पहले तक जबकि मेरी उनसे आखिरी मुलाकात हुई थी, मैंने देखा कि उन्हें अपने देश और विश्व शांति तथा अपने देशवासियों के हित की कितनी चिन्ता थी। भारत और पाकिस्तान में फूट पैदा करने वाली समस्याओं को हल करने के लिए उपायों की जो तलाश की गयी और उसका ठोस नतीजा जो सामने आया, इस कामयाबी का सेहरा बहुत बड़ी हद तक उनके सर पर है। १० जनवरी की शाम को जब हम बातें कर रहे थे—दुर्भाग्य कि यह हमारी आखिरी बातचीत साबित हुई—तो श्री लालबहादुर शास्त्री ने मुझसे कहा कि ताशकन्द सम्मेलन के नतीजे से उन्हें खुशी हुई है। उन्होंने मुझे बताया कि ताशकंद घोषणा का जिस पर उन्होंने और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने थोड़ी ही देर पहले दस्तखत किये हैं, शान्ति के लक्ष्य के लिए और भारत की जनता के लिए बहुत बड़ा महत्व है। उस सारी शाम के दौरान श्री लालबहादुर शास्त्री बहुत ही खुश नजर आ रहे थे, लोगों से बातचीत करते हुए खूब हसीमजाक कर रहे थे और बार-बार

यह कह रहे थे कि ताशकंद घोषणा पर दस्तखत होने से बड़ी ही माकूल फिजां तैयार हो जायेगी और उसके कुछ ही घंटों के बाद हमने दर्दनाक खबर सुनी कि वह अब नहीं रहे।

इस खबर को सुनकर हमारे ऊपर जो सदमा गुजरा उसे शब्दों में बयान करना मेरे लिए मुश्किल है। उस रात को ही हम, लोग उस स्थान पर गये जहाँ भारतीय प्रतिनिधि मण्डल ठहरा हुआ था और हमने सोवियत जनता की ओर से हार्दिक शोक प्रकट किया।

श्री लालबहादुर शास्त्री में एक असाधारण मानव और एक राजनेता के रूप में कैसे असाधारण गुण थे और किस तरह एक अध्यापक के घर में पैदा होकर उन्होंने संसार की एक सबसे बड़ी ताकत की सरकार के प्रधान का पद प्राप्त किया। वह अपने देश की जनता और उसके हितों को समझते थे और उन्होंने अपना सारा जीवन उसके लिए अर्पित किया था।

सोवियत जनता जानती है कि श्री लालबहादुर शास्त्री ने राष्ट्रीय आजादी की लड़ाई में आगे बढ़कर हिस्सा लिया था और इसके लिए उन्हें कई बार साम्राज्यवादी हुकूमत की जेल काटनी पड़ी। वह महात्मा गांधी के अनुयायी और श्री जवाहरलाल नेहरू के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने वालों में से थे। और खुद भी राजनीतिक नेता और राजनीतिज्ञ के रूप में बहुत ऊंचे उठे।

भारत के प्रधान मंत्री बनने के बाद से दुनिया की मुश्किल परिस्थितियों के अन्दर राजकाज संभालने का भारी बोझ लालबहादुर शास्त्री के कंधों पर आ पड़ा और हमें कहना होगा कि इस परिस्थिति के अन्दर उन्होंने मुश्किलों को फतह करने के रास्ते ढूंढ़ निकाले।

इन वर्षों के अन्दर श्री लालबहादुर शास्त्री ने अपने को असलियत के सामने रखकर सोचने वाला राजनीतिज्ञ साबित किया। उनकी यह योग्यता ताशकंद सम्मेलन के दौरान खास तौर से जाहिर हुई।

हम अच्छी तरह जानते हैं कि भारत और पाकिस्तान के जो अभी हाल में एक-दूसरे से युद्ध कर रहे थे, नेताओं के लिए एक मेज पर बैठना, एक-दूसरे से हाथ मिलाना और पाकिस्तान और भारत में झगड़ा पैदा करने वाले मुश्किल सवालों का हल ढूंढ़ निकालना, ऐसा हल ढूंढ़ निकालना जो दोनों पक्षों को स्वीकार्य हो, मिल-जुल कर बैठना, कोई आसान चीज न थी। झगड़े के कई सवाल बहुत सारे वर्षों से जमा हो रहे थे। सच तो यह है कि भारत और पाकिस्तान का झगड़ा साम्राज्यवादी शासन के एक लम्बे दौर की विरासत था जिसके अन्दर उपनिवेशवादी गुलाम बना

कर रखी हुई जनता को आपस में लड़ा रहे थे। सभी को वे दिन याद हैं जब स्थिति अत्यन्त गम्भीर हो गयी थी। लेकिन इस सारी चीज के बावजूद भारत के प्रधानमंत्री ने एक राजनेता की हैसियत से दिलेरी से काम लिया और ताशकंद आकर पाकिस्तान के राष्ट्रपति के साथ बातचीत करने का सोवियत सरकार का निमंत्रण स्वीकार किया।

हर आदमी जो शान्ति की कीमत समझता है वह उस पूरी बातचीत को बड़े ध्यान और आशा के साथ देख रहा था। सभी ताशकंद से आने वाली खबरों के लिए उत्सुक थे और आशा लगाये हुए थे कि उसके परिणाम से सभी प्रगतिशील जनों का यह विश्वास दृढ़ होगा कि कठिन से कठिन मौका आ पड़ने पर भी झगड़ों को सुलझाने की राह निकाली जा सकती है। लोगों की यह भावना सही साबित हुई। दोनों पक्षों की बातचीत के अन्त में एक नया दस्तावेज सामने आया जिसे बिलकुल ठीक ही ऐतिहासिक ताशकंद घोषणा कहा जा रहा है।

मुझे प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के भाषण के कुछ शब्द जो ताशकंद सम्मेलन के आरम्भ के समय उन्होंने कहे थे, खासतौर से याद आ रहे हैं। उन्होंने कहा था, हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। भारत प्रायद्वीप की आबादी साठ करोड़ की है, पूरी मानवजाति का पांचवां हिस्सा। भारत और पाकिस्तान दोनों ही विकसित और समृद्ध हों इसके लिए उन्हें शान्ति के साथ रहने की आदत डालनी पड़ेगी। श्री लालबहादुर शास्त्री ने कहा कि लगातार झगड़े और लड़ाइयों की स्थिति रहने से दोनों देशों की जनता को और भी ज्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। आपस में जंग करने के बदले आइये, हम गरीबी, रोग और जहालत के खिलाफ जंग करें। दोनों देशों की साधारण जनता की समस्याएँ, उनकी आशाएँ और अभिलाषाएँ एक हैं। वे झगड़ा और लड़ाई नहीं चाहते। वे शान्ति और तरक्की चाहते हैं। उन्हें हथियार और गोलाबारूद नहीं चाहिए, बल्कि खाना, कपड़ा और मकान चाहिए। अपनी जनता के लिए इन कामों को अंजाम देने के लिए हमें इस सम्मेलन में ठोस नतीजा हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए।

भारत सरकार के प्रधान के नीति सम्बंधी इस बयान की तुलना जब हम ताशकंद में हासिल आखिरी नतीजे के साथ करते हैं तो हम देखते हैं कि भारतीय प्रतिनिधि मंडल का और व्यक्तिगतरूप से श्री लालबहादुर शास्त्री का इस सम्मेलन की सफलता में कितना बड़ा हिस्सा रहा।

हमें पूरा विश्वास है कि ताशकंद घोषणा को अमल में लाने से भारत और पाकिस्तान की जनता दोनों को लाभ होगा। ताशकंद घोषणा इस उपमहाद्वीप में

शान्ति स्थापित करती है। यह घोषणा पाकिस्तान और भारत के सम्बंधों को सामान्य बनाती है जिन्होंने यह प्रण किया है कि बल का इस्तेमाल नहीं करेंगे और शान्तिपूर्ण तरीकों से आपसी झगड़ों को हल करेंगे और जिन्होंने फौजी मुठभेड़ के कारण पैदा हुई अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं को हल करने के उपाय निश्चित किये हैं।

प्यारे दोस्तो, बन्दूकों का चलना बंद हो जाये और आपके देश और पाकिस्तान के बीच अच्छे पड़ोसियों के से सम्बंध फिर कायम हो जायें तो इससे दोनों देशों की जनता को लाभ होगा। दोनों देशों ने म राज्यवादियों के खिलाफ संघर्ष किया था और उनके कितने ही लोग स्वाधीनता और स्वतंत्रता की लड़ाई में शहीद हुए थे। दोनों में आपसी लड़ाई चलती रही तो इससे दोनों की ताकत नष्ट होगी और उससे लाभ सिर्फ उन लोगों को होगा जो राष्ट्रों में झगड़ा चाहते हैं। भारत और पाकिस्तान के सम्बंधों का सामान्य होना उन नीतियों के अनुरूप है जिन्हें श्री जवाहरलाल नेहरू के आदेश के प्रति वफादार भारत ने चलाया था और चला रहा है। तटस्थता की नीति, शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को दृढ़ बनाने की नीति की वजह से भारत ने सभी शान्तिप्रेमी देशों के दिलों में बड़ी इज्जत हासिल की। उसी का फल है कि दुनिया के रंगमंच पर आपके देश को आज तक ऊंचा स्थान प्राप्त है जिसके आप पूरी तरह हकदार हैं।

हम जानते हैं कि यह नीति खुद जिन्दगी का तकाजा है। यह इस दृढ़ विश्वास का परिणाम है कि शान्ति और राष्ट्रीय स्वाधीनता कायम रहने पर ही वे सारे रचनात्मक काम सफलता के साथ पूरे किये जा सकते हैं जिनके ऊपर देश के मंगल-कल्याण को आगे बढ़ाना निर्भर है। और यह उन सभी राजनेताओं का जो सच्ची स्थिति को सामने रख कर सोचते हैं, महत्वपूर्ण और गौरवशाली काम है। जैसा कि हम सभी जानते हैं श्री लालबहादुर शास्त्री एक ऐसे ही नेता थे।

इस चीज पर मैं खास तौर से जोर देना चाहता हूँ कि श्री लालबहादुर शास्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के ध्येय को आगे बढ़ाते हुए सोवियत संघ और भारत की मित्रता और सहयोग को लगातार विकसित और दृढ़ कर रहे थे। उन्होंने भारत के जनगण का झंडा ऊंचा कर दिया है। सभी जानते हैं कि हमारी दोस्ती भिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाले राज्यों के बीच अच्छे पड़ोसियों के से सम्बंध के उदाहरण का काम कर सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों के विकास पर उसका लाभदायक प्रभाव पड़ता है और उससे विश्व शांति दृढ़ होती है। इस तरह हम साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियों का संयुक्त मोर्चा मजबूत करते हैं और विभिन्न कौमों की राष्ट्रीय आजादी

की लड़ाई को वास्तविक समर्थन प्रदान करते हैं। हम सदा शांति के लिए और युद्ध के खिलाफ लड़ते हैं।

भारत और सोवियत संघ राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सहयोग के दृढ़ सूत्रों से बंधे हुए हैं और यह सहयोग एक दूसरे के हितों का ध्यान रख कर तैयार किया गया है।

महान लेनिन ने कहा था कि उन देशों की जनता की जो राष्ट्रीय प्रगति के रास्ते पर चल रहे हैं, इच्छा में मदद करनी चाहिए ताकि वे मजबूती से अपने पांव पर खड़े हों, उपनिवेशवाद की बुरी विरासत को खत्म करें और सामाजिक प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ें। यह चौतरफा सहयोग विकसित करके हम उनके आदर्श का पालन करते हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि स्वर्गीय प्रधान मंत्री ने सोवियत संघ की अपनी राजकीय यात्रा के दौरान सोवियत-भारत सहयोग से सम्बंधित समस्याओं पर खास तौर से ध्यान दिया था। और अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पहले उनकी जो बातचीत हमसे हुई थी, उसमें उन्होंने कहा था कि देश की प्राकृतिक सम्पदा तथा भारत की जनता की सृजन की अपार क्षमता का इस्तेमाल करते हुए इस सहयोग का और विस्तार करने से भारत की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को और आगे बढ़ाने के लिए अवसर मिलेगा।

प्यारे भाइयों, मैं समझता हूँ कि प्यारे भाइयों कहकर आपको पुकारने का मुझे हक है क्योंकि जब-जब मैं भारत आया मैंने अक्सर लोगों के दिलों से "हिन्दी-रूसी भाई-भाई" की आवाज निकलते हुए सुनी। और सोवियत संघ में आप अक्सर ये शब्द सुन सकते हैं कि "भारत के लोग हमारे दोस्त और भाई हैं।"

और आज फिर मातम की इस घड़ी में सोवियत जनता ने आपके लिए यह बिरादराना पैगाम भेजा है। हमारा देश आपके देश के साथ अपनी दोस्ती मजबूत बनाता रहेगा और पूरी दुनियां में शान्ति को सुदृढ़ करने के लिए आपके साथ रह कर संघर्ष करता रहेगा।

—कोसीजिन, प्रधानमन्त्री, सोवियत रूस

हमारे राष्ट्र को भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन का अत्यंत शोक है। विश्व के विशालतम लोकतंत्र के नेता के रूप में, उन्होंने अमेरिका वासियों के हृदयों में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया था। ताशकंद में सफल वार्तालाप के उपरांत उनके इस निधन से शांति और प्रगति संबंधी मानव जाति की आशाओं को भारी आघात पहुँचा है। प्रधान मंत्री शास्त्री ने, अपने कार्यकाल के १८ महीनों में ही, भारतीय लोकतंत्र के महान आदर्शों को बुलंद कर अपने आपको पंडित नेहरू का योग्यउत्तराधिकारी सिद्ध कर दिया। इस उच्च पद पर विनम्रता के साथ आसीन रहते हुए, उन्होंने देश के सर्वमान्य नेता के रूप में अपनी दृढ़ता और बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। आज विश्व उनके बिना सूना लग रहा है और हमें उनके परिवार और भारत की जनता के साथ हार्दिक सहानुभूति है।

—लिण्डन बी० जानसन, राष्ट्रपति, संयुक्त राज्य अमेरिका

पिछले दो वर्षों में भारत की महान जनता पर यह दूसरा वज्रपात है। स्व० शास्त्री के आकास्मिक निधन पर अमेरिकी जनता की ओर से मेरी सहानुभूति है। श्री शास्त्री नयी प्रेरणा और विश्वास के प्रतीक थे। उन्होंने शांतिपूर्ण भविष्य और समृद्धि सुखी जीवन के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उनके शत्रु केवल गरीबी और अज्ञान थे तथा उनके शास्त्र थे शिक्षा, एक दूसरे को समान सहिष्णुता और प्रेम। श्री शास्त्री जानते थे कि सभ्य मानव का एक मात्र उद्देश्य विश्वशांति ही हो सकता है। विश्वशांति के महान उद्देश्य की प्राप्ति में एक महान राजनीतिज्ञ चल बसा। सारे विश्व को स्व० शास्त्री पर गर्व रहेगा।

—ह्यूबर्ट हम्फ्री, उपराष्ट्रपति, संयुक्त राज्य अमेरिका

प्रधान मंत्री के दुखद निधन समाचार से मुझे आन्तरिक क्लेश हुआ। राष्ट्रमंडल के प्रधान के नाते भारत सरकार भारतीय जनता तथा शास्त्री जी के परिवार के प्रति मैं संवेदना प्रकट करती हूँ। आप की इस क्षति में हमारे पति भी दुखी हैं। आपकी इस क्षति का आभास सारी दुनिया कर रही है।

—महारानी एलिजाबेथ, ब्रिटेन

शास्त्रीजो के निधन से भारत, राष्ट्रकुल एवं विश्व गहरे शोक में डूब गया। ताशकंद समझौते द्वारा भारत तथा पाकिस्तान में स्थायी शांति का सूत्रपात होने के बाद श्री शास्त्री के निधन से ब्रिटेन तथा उनके मित्र अत्यधिक दुखी हुए हैं। उनका अभाव न केवल राष्ट्रकुल में अपितु हर स्थान पर जहां कि उनकी राजनीतिज्ञता, तत्परता एवं एकाग्रता के गुणों के महत्व को समझा गया है, खटकता रहेगा।

—हेराल्ड विल्सन, प्रधान मन्त्री, ब्रिटेन

श्री लालबहादुर की मृत्यु से राष्ट्रमंडल को गहरा आघात लगा है। श्री शास्त्री महान साहसी व्यक्ति थे।

—लार्ड माउन्ट बेटन, विशेष प्रतिनिधि, महारानी एलिजाबेथ

यह और भी अधिक दुःख की बात है कि श्री शास्त्री की मृत्यु ताशकन्द में प्राप्त इतनी बड़ी सफलता के पश्चात् हुई जब कि भारत और पाकिस्तान की जनता के बीच एक शांतिपूर्ण और सफल भविष्य की नयी आशा जाग उठी थी।

— जार्ज ब्राउन, उपप्रधान मंत्री, ब्रिटेन।

भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु से मुझे ही नहीं, यूगोस्लाविया के लोगों को गहरा दुख हुआ है। उनकी मृत्यु से भारत और प्रगतिशील देशों के लोगों ने शांति का ईमानदार पुजारी और यूगोस्लाविया ने एक महान मित्र खो दिया है। मेरे दिल में उनके प्रति बड़ा सम्मान था और मैं उन्हें महान राजनेता और सच्चा इंसान मानता था।

—मार्शल टीटो, राष्ट्रपति, यूगोस्लाविया

भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का अचानक देहांत बड़ा दुखद है। यह निधन ऐसी परिस्थितियों में हुआ है जो कि इस घटना की ऐतिहासिक गंभीरता को मुखर करती है।

—जनरल देगाल, राष्ट्रपति, फ्रांस

भारतीय नेता श्री लालबहादुर शास्त्री के देहावसान से मुझे गहरा आघात लगा है।

—कर्नल नासिर, राष्ट्रपति, अरब गणराज्य

श्री शास्त्री की अचानक मृत्यु भारत के लिए ही नहीं बल्कि स्वतंत्र विश्व के लिए एक जबरदस्त धक्का है।

—तुंकु अब्दुल रहमान, प्रधान मंत्री, मलेशिया

श्री शास्त्री देखने में तो छोटे कद के व्यक्ति लगते थे लेकिन उनका दिल बहुत बड़ा था। उनके दृढ़ संकल्प ने ताशकंद वार्ता में अयूब से सम्मान प्राप्त कर लिया है।

—श्री नेविन, अध्यक्ष, क्रान्तिकारी परिषद् बर्मा,

मुझे प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के असमय निधन की बात सुनकर अत्यन्त दुख हुआ।

—हिरोहितो, सम्राट, जापान।

श्री शास्त्री के निधन से एशिया में शांति को गहरा आघात पहुँचा है।

— सातो, प्रधानमंत्री, जापान

जैसे अयोध्या के प्रसिद्ध राजा भगीरथ पवित्र गंगा को स्वर्ग से भारत लाये थे बिल्कुल वैसाही शास्त्री ताशकन्द समझौता द्वारा शान्ति की गंगा लाये थे। श्री शास्त्री गंगा की धारा के साथ स्वर्ग को प्रस्थान कर गये हैं पर उनकी महान आत्मा गंगा की धारा के समान सदा-सदा भारतवासियों का हृदय सींचती रहेगी। भारत का भविष्य उन्नत व उज्वल हो।

—नाका फुनादा, प्रतिनिधि,जापान

शास्त्री जी भारत के महान नेता और नेपाल के घनिष्ठ मित्र थे।

—महाराज महेन्द्र, नेपाल

भारत ने अपना एक महान नेता और नेपाल ने अपना एक परम मित्र खो दिया है। विश्वशांति के लिये श्री शास्त्री ने अपना जीवन अर्पित कर दिया।

—श्री सूर्य बहादुर थापा, अध्यक्ष मंत्री परिषद, नेपाल

श्री शास्त्री के देहावसान पर पूरे संसार में शोक प्रगट किया जायगा। भारत का अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध की दिशाओं में उनके कर्तृत्वों की स्मृति कभी न भुलायी जा सकेगी। लंका की जनता इस बात को बराबर स्मरण करेगी कि प्रधानमंत्री का पद सम्भालने के कुछ ही समय बाद उन्होंने लंका के भारतीयों की समस्या सुलझायी।

—डडले सेनानायक, प्रधानमंत्री, लंका

भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री की अचानक मौत से मुझे गहरा धक्का लगा। पिछले कुछ दिनों में जब मैं उनसे मिला तब मैं विवादों को न्यायोचित और शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के तरीकों में उनकी लगन से बड़ा प्रभावित हुआ था। हमने ताशकंद में बातचीत का अच्छा सिलसिला शुरू किया था। मैं इस दुख की घड़ी में भारत की जनता के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रगट करता हूं।

—मोहम्मद अयूब खाँ, राष्ट्रपति, पाकिस्तान

भारत को अपूरणीय क्षति पहुँची है। यह खेद की बात है कि जब पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब और स्व० शास्त्री जी ने एक दूसरे को समझा तो उनमें से एक रहा नहीं। पाकिस्तान यह मानता है कि दोनों देशों के बीच ऐसी कोई समस्या नहीं जो शांतिपूर्ण समझौते से हल न हो सके। स्व० श्री शास्त्री भारत और पाक के बीच शांति और सद्भावना की नींव रखने का महान कार्य कर गये हैं। विश्वशांति के लिए उन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया है।

—गुलाम फारूख, वाणिज्य मंत्री, पाकिस्तान

स्वीडिश सरकार की ओर से मैं हार्दिक समवेदना व्यक्त करता हूँ। यह भारतीय जनता की ही नहीं, विश्व की क्षति है। आज की घड़ी में उनके नतृत्व की बड़ी आवश्यकता थी।

—अर्लेंडर, प्रधानमंत्री, स्वीडन

उनकी मृत्यु से हमें अत्यन्त दुःख है। साथ ही हमें इस पर बड़ी निराशा हुई कि हमें काबुल में उनका स्वागत करने का सौभाग्य नहीं नसीब हो सका। कुटिल मृत्यु ने उन्हें वचन पूरा करने का मौका तक नहीं दिया। मुझे आशा है कि ताशकंद में पैदा हुई शांति भावना कायम रहेगी तथा ताशकंद समझौते को उनके स्मारक के रूप में याद रखेंगे।

—मालबंडवाल, प्रधानमंत्री, अफगानिस्तान

भारतीय प्रधानमंत्री का निधन विशेष रूप से क्रूरतापूर्ण है। इसलिये भी कि उन्होंने ताशकंद में भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों को सामान्य करने का समझौता किया था जो विश्व में शान्ति स्थापित करने में सहायक और भारत के आध्यात्मिक मूल्यों की विजय है।

—हबीब बोरगीवा, राष्ट्रपति, ट्यूनेशिया

श्री शास्त्री ने विश्वशांति एवं सहअस्तित्व के लिए महान कार्य किया।

—जाकोव क्लेजविक, उपराष्ट्रपति, युगोस्लाविया

श्री शास्त्री एक महान राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने चीनियों के दबाव को दृढ़ता पूर्वक रोका है।

—राष्ट्रपति, दक्षिण वियतनाम

शास्त्री जी महान् व्यक्ति और एक महान देश के कर्णधार थे।

—बर्नहम, प्रधानमंत्री, ब्रिटिश गायना

इस विपत्ति की किसी को कल्पना तक नहीं थी, यह बड़ी दुःखद घटना है।

—जोमो केनियाटा, राष्ट्रपति, केनिया

श्री शास्त्री की मृत्यु यूगोस्लाविया के लिए एक धक्का है।

—पीटर स्ताम्बोलिक, प्रधानमंत्री, यूगोस्लाविया

हमारा देश शास्त्री के आकस्मिक निधन के शोक में आपका साझीदार है।

—उपप्रधानमंत्री, यूगोस्लाविया

श्री शास्त्री को सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके अन्तिम कार्य ताशकन्द समझौते को सफल बनाया जाय।

—अब्दुल मुनीम खाँ, गवर्नर, पूर्वी पाकिस्तान

श्री लाल बहादुर शास्त्री प्रधान मंत्री के पद पर अपेक्षाकृत थोड़े समय तक रहे किंतु यह अवधि सफलताओं और उद्देश्यों से परिपूर्ण रही। आज ही प्रातःकाल ताशकंद में समझौता करने में उनकी महान राजनीतिज्ञता का समाचार मिला और सिर्फ तीन सप्ताह में हम उनका स्वागत अभिवादन करने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा में थे। अब विश्व भर के करोड़ों व्यक्तियों के साथ मैं इस महान भारतीय नेता के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता हूँ।

—डीन रस्क, परराष्ट्र सचिव, संयुक्त राज्य अमेरिका

महात्मा गांधी और श्री नेहरू की महान विरासत को संभालने के बाद भारतीय

प्रधान मंत्री शास्त्री जी ने अपने आप को राष्ट्र की सेवा में गला दिया और अपने स्वास्थ्य की भी परवाह नहीं की।

—फ्रेडरिक ल्युबके, राष्ट्रपति, पूर्वी जर्मनी।

प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु से मुझे बड़ा दुख हुआ। मेरी ओर से तथा नाईजीरिया की जनता और सरकार की ओर से हार्दिक संवेदना स्वीकार करें।

—ओरीजूने, कार्यकारी राष्ट्रपति, नाईजीरिया,

ताशकंद में प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु का समाचार सुनकर हमें अत्यंत दुख हुआ। अपने देश से हजारों मील दूर शांति की खोज में उनकी मृत्यु हुई और इससे पता चलता है कि वे मानव जाति की भलाई के कार्यों में किस लगन से काम कर रहे थे। दुख के अवसर पर फिलीपींस की जनता और मेरी ओर से आप को और भारत की जनता को हार्दिक संवेदना और सहानुभूति।

—फर्डिनेन्ड मार्कोस, राष्ट्रपति, फिलीपाइन्स,

श्री शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु का समाचार सुनकर बड़ा दुख हुआ। पिछले प्रधान मंत्री सम्मेलन में, जब मैं उनसे मिला, तब से मेरे दिल में उनके प्रति बड़ा सम्मान और प्रशंसा है। जमैका की सरकार और जनता की ओर से कृपया हार्दिक सहानुभूति स्वीकार करें।

—सैंगस्टर, कार्यकारी प्रधान मंत्री और
विदेश मंत्री, जमैका

श्री शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु का समाचार सुनकर हमें बड़ा दुख हुआ। कुवैत की जनता और सरकार की ओर से भारत की जनता को इस दुख की घड़ी में हमारी हार्दिक सहानुभूति।

—शेख साबा अल सलीम अलसाबा, अमीर, कुवैत

प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन के समाचार से मुझे और मेरे साथियों को गहरा धक्का लगा। उनके निधन से राष्ट्रसंघ और राष्ट्रमंडल की भारी क्षति हुई है। कनाडा के लोग श्री शास्त्री द्वारा विगत जून में की गई कनाडा की

यात्रा के संबंध में अत्यंत मधुर स्मृतियाँ सँजोये रहेंगे। शोक के इस अवसर पर आप कनाडा सरकार और मेरी गहरी संवेदना स्वीकार करें।

—पोलमार्टिन, कार्यवाहक प्रधान मंत्री, कनाडा

शास्त्री जी के निधन से नेपाल ने एक महान मित्र खो दिया।

—जे० एन० सिंह, परराष्ट्र सचिव, नेपाल

शास्त्री जी की मौत विश्व के लिए भारी क्षति है और उन्हें अपने शान्ति प्रयासों के लिए सदा याद किया जायगा।

—शाहनशाह अलहुसेन, जार्डन

भारत की प्रगति में शास्त्री जी का बड़ा योग था और उनकी मौत सचमुच एक भारी नुकसान है।

—सुलतान नासर बिन अब्दुल्ला

श्री शास्त्री की मृत्यु से मैं बहुत दुःखी हूँ। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है।

—लार्ड एटली, भू० पू० प्रधान मंत्री, ब्रिटेन

नाजुकअवसर पर एक महान क्षति हुई। समस्त पश्चिमी संसार को उससे दुख होगा।

—ग्रिमंड, नेता, लिबरल पार्टी, ब्रिटेन

श्री शास्त्री की मृत्यु भारत के लिए ही नहीं, राष्ट्रमंडल और समूचे विश्व के लिए दुःखद है।

—आर्नल्ड स्मिथ, महामंत्री, राष्ट्रमंडल

श्री शास्त्री जी विश्व में शान्ति की आवश्यकता के प्रति सजग थे। उन्होंने स्व० महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू की तरह देश का नेतृत्व किया। वह गहन अर्न्तदृष्टि से सम्पन्न थे और उन्हें मानवता से गहरा प्यार था।

—आर्थर गोल्डबर्ग, प्रतिनिधि, अमेरिकी सुरक्षापरिषद्

शास्त्री जी ने परीक्षा की घड़ी में अपना पद सँभाला था और अपनी योग्यता के बल पर राष्ट्र का नेतृत्व किया था। आस्ट्रेलिया की जनता बहुत दुःखी है।

—राबर्ट मेंजीज, प्रधानमंत्री, आस्ट्रेलिया

इस समाचार से हमें गहरा सदमा पहुँचा है।

—काओ, प्रधानमंत्री, दक्षिण वियतनाम

श्री शास्त्री ने भारत और पाकिस्तान के बीच लम्बे अर्से से चले आ रहे विवाद के शान्तिपूर्ण हल के लिए दरवाजे खोल दिये और यह उनकी सबसे बड़ी देन है। शास्त्री जी अपने श्रम का फल नहीं देख सके मगर भारत के करोड़ों लोगों के लिए ताशकन्द में उनकी परीक्षा की घड़ियाँ व्यर्थ नहीं जायगी।

— चिन चेय, उपप्रधान मंत्री, सिंगापुर

मुझे आशा है कि भारत अपनी समस्याओं का हल स्वर्गीय प्रधानमंत्री की इच्छाओं के अनुसार ही निकाल लेगा।

—सुकर्ण, राष्ट्रपति, इंडोनेशिया

प्रधानमंत्री शास्त्री की दुखःद मृत्यु में अपनी और अपनी जनता की ओर से हार्दिक शोक व्यक्त कर रहा हूँ।

—हो ची मिन्ह, राष्ट्रपति, वियतनाम

प्रधानमंत्री शास्त्री की मौत पर मैं और मेरे देश की जनता गहरे शोक का अनुभव कर रही है। मैं दुबारा आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी नजर में वे महान थे।

फर्नेंडो टेरी, राष्ट्रपति, पेरू

आदरणीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के स्वर्गवास पर मुझे और मेरे देश के लोगों को बहुत दुख हुआ। हम अपनी मित्रता और सहानुभूति का आपको विश्वास दिलाना चाहते हैं।

—गुस्तावो ओर्डज़, राष्ट्रपति,मेक्सिको

श्री शास्त्री की मृत्यु के साथ विश्व ने एक महान नायक खो दिया जिसने अपने आपको विश्व शान्ति और मानवता के लिए अर्पित किया था।

—इस्माइल अल अजहारी, अध्यक्ष, सर्वोच्च परिषद्, सूडान

श्री शास्त्री जी की मौत से विश्व उनकी विवेक पूर्ण भावना से वंचित रह गया।

—अब्दुल उस्मान, राष्ट्रपति, सोमाली

श्री शास्त्री में भारत की आर्थिक और सैनिक समस्याओं को हल करने की व्यवहारिक योग्यता और क्षमता थी।

—शर्मन कूपर, भू० पू० राजदूत, अमेरिका

श्री शास्त्री ने शांति को जीतकर बड़े राष्ट्रों के लिये एक मिशाल कायम कर दी है। उन्होंने विश्व के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। भारतीय सरकार, जनता तथा श्री शास्त्री के परिवार के प्रति मेरी सरकार संवेदना प्रकट करती है।

—सोनसान, उपप्रधान मंत्री, कंबोडिया

श्री शास्त्री के निधन से विश्व को भारी क्षति हुई है। मानवता ने शांति का एक महान सेनानी खो दिया।

—प्रतिनिधि, पश्चिमी जर्मनी

प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के दुःखद निधन से मुझे सदमा पहुँचा है। मैं अपना शोक प्रकट करता हूँ।

—चाओ एन-लाई, प्रधान, मन्त्री चीन

प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक और असामयिक निधन पर मुझे गहरा दुख हुआ है। श्री शास्त्री के निधन से न केवल भारत सरकार और भारत के लोगों को ही आघात पहुँचा हैं, बल्कि यह पूरी मानवता के लिए एक बड़ा आघात है। तंजानियाँ की सरकार, लोगों और अपनी तरफ से मैं हार्दिक समवेदना प्रगट करता हूँ। हमारे इस सन्देश को कृपया स्व० शास्त्री जी के दुखी परिवार तक पहुँचा दें।

—सलीम अहमद सलीम, उच्चायुक्त, तंजानिया

सफल शान्ति वार्ता के बाद प्रधान मंत्री की दुखद मृत्यु पर मेरी समवेदना स्वीकार करें। गांधी और नेहरू की परम्परा के अनुरूप उन्होंने युद्ध में जिस बहादुरी से देश के सम्मान की रक्षा की, उसी तरह शांति की स्थापना मे भी कोई कसर नहीं उठा रखी। वे बहुत ही बुद्धिमान और विनम्र व्यक्ति थे। विश्व में शान्ति बनाए रखने के उनके संकल्प को आपने आगे चलाने को जो बात कही है, उसके लिए मैं आपकी सराहना करता हूँ।

—डगलस एन्समिंगर, फोर्ड फाउन्डेशन

भारत के प्यारे प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन पर मुझे गहरा शोक हुआ हैं। भारत सरकार, भारत के लोगों, श्रीमती शास्त्री और आपको हमारी समवेदना।

—जार्ज डब्यू० एम० काम्बा, उच्चायुक्त, युगांडा

प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के अचानक निधन पर हमें गहरा धक्का पहुंचा है। उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ होने पर भी वे एक अत्यन्त विनम्र व्यक्ति थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन भारत की आजादी प्राप्त करने और जनता की सेवा में बिताया। उन्होंने विश्व में शान्ति बनाए रखने, अन्तराष्ट्रीय सहयोग और गुटों से अलग रहने की नीति को मजबूत बनाने में बड़ा सहयोग दिया। पिछले वर्ष उन्होंने यूगोस्लाविया की यात्रा का, जिससे भारत और यूगोस्लाविया के सम्बन्ध और भी मजबूत हुए। दुख की इस घड़ी में हमारी हार्दिक समवेदना स्वीकार करें।

—राजदूत, यूगोस्लाविया

ताशकन्द में प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन का समाचार सुनकर मुझे गहरा दुख हुआ। इस बात पर विश्वास नहीं हुआ कि ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर करने के कुछ ही घण्टे बाद उनका देहान्त हो गया। भारत में शान्ति स्थापित करने के उनके प्रयास को भारतवासी कभी नहीं भूल सकते। इस दुखद घटना पर हमारी समवेदना स्वीकार करें।

—राजदूत, संयुक्त अरब गणराज्य

श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन से समस्त संसार शोकान्वित हुआ, न केवल भारत या एशिया, बल्कि समस्त संसार उनके निधन से शोकाकुल है। राष्ट्रसंघ को भी उनकी मृत्यु से दुःख हुआ है। राजनीतिज्ञ के रूप में प्रधानमंत्री श्री शास्त्री के निधन से मुझे दुख है। भारत पाकिस्तान संघर्ष का समाधान प्रस्तुत करने के लिये मैंने हाल में उनसे बातचीत की थी।

—ऊथांत, महासचिव, संयुक्त राष्ट्र संघ

अपनी सरकार और क्यूबा की जनता की ओर से श्री शास्त्री जी की मृत्यु पर अपनी संवेदना भेज रहा हूँ।

—ओस्वाल्डो तोर्दो, राष्ट्रपति, क्यूबा

श्री शास्त्री का देहान्त एक महान दुर्घटना है।

—एन्क्रूमा, राष्ट्रपति, घाना

प्रधान मंत्रित्व के संक्षिप्त किन्तु कठिन काल में शास्त्री जी ने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और देश की सेवा के लिये महत्वपूर्ण कार्य किया।

—सिगनोर आल्डोमोरो, प्रधानमन्त्री, इटली

शान्ति को दृढ़ और स्थायी बनाने के लिये विश्व को शास्त्री की जरूरत

थी। वह एक साहसी और बुद्धिमान नेता थे। मेरी हार्दिक सहानुभूति भारतीय जनता के साथ है।

—जकरिया मोहिउद्दीन, प्रधानमन्त्री, संयुक्तअरब गणराज्य

संसार के लिए यह दुखद दुर्घटना है कि शास्त्री जी की मृत्यु उस समय हुई जब उन्हें ताशकन्द वार्ता में सफलता मिली। ताशकन्द में उन्होंने अपनी धैर्यपूर्ण राजनीतिज्ञता का परिचय दिया था जिससे एशिया के इतिहास का नया अध्याय शुरू होने जा रहा था। जिन लोगों ने उनके साथ काम किया था, उन्हें जानते थे। शास्त्री जी की मृत्यु से भारत की जो क्षति हुई है वह शब्दों के द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती।

—जॉन फ्रीमैन, उच्चायुक्त, ब्रिटेन

यह मेरे लिए भारी आघात है।

—छेदी जगन, भू० पू० प्रधानमन्त्री, ब्रिटिश, गायना

आपके (राष्ट्रीय क्षति) गम में शरीक होते हुए मैं भारत की जनता को महान नेता खोने पर अपनी हार्दिक समवेदनायें भेज रहा हूं।

—शाह रजा पहलवी, ईरान

श्री शास्त्री जी की अंतिम सफलता राजनीतिज्ञता का सुंदर उदाहरण है। एक तरह से ताशकन्द समझौता और उससे पैदा हुई भावना से श्री शास्त्री की दृढ़ता, शांति पथ पर जमे रहने का अडिग निश्चय व्यक्त हुआ है।

—मकसूद, मुख्य प्रतिनिधि, अरब लीग

यह भारत की नहीं बल्कि हमारी और वास्तव में संपूर्ण मानवता की क्षति है। एशिया एवं अफ्रीका की जनता शांति एवं सद्‌भावना के लिये इस व्यक्ति की ओर निहार रही थी। श्री शास्त्री स्वतंत्र एवं समृद्ध समाज चाहते थे। उनके नेतृत्व में भारत तथा संयुक्त गणराज्य के संबंध हर दिशा में मजबूत हुए। वे सिद्धांतवादी व्यक्ति थे।

—हुसैन अलसफी, उपराष्ट्रपति, संयुक्त अरब गणराज्य

शास्त्री जी की मृत्यु से शांति के प्रयास को गहरा धक्का लगा है। शास्त्री जी सचमुच शांति चाहते थे। न केवल भारत पाकिस्तान के बीच वरन् सम्पूर्ण विश्व में शांति चाहते थे।

—बेनी मोर्से, अमेरिकी सेनेटर

भारत की महान क्षति पर मुझे हार्दिक दुख है। दुख की घड़ी में आप सबके साथ मेरी सवेदना और सहानुभूति है।

—पोदरिक मैकफर्कूहर, संपादक, चाइना क्वार्टरली

आपके माननीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु पर हमारी हार्दिक संवेदना है। उन्होंने अपना जीवन लोगों मे सहयोग बढ़ाने और विश्व में शांति स्थापित करने में लगाया।

—बर्नहर्ड कोएशर, महासचिव, पूर्वी जर्मनी की
दक्षिण पूर्व एशियाई संस्था।

श्री लालबहादुर की मृत्यु से न केवल भारत के लोगों को वल्कि विश्व भर के लोगों को भारी क्षति हुई है। प्रधान मंत्री की शांति के प्रति सच्ची निष्ठा, उनका महान साहस और निःस्वार्थ मानवीयता हम सभी के हृदयों में, जिन्हें उनको जानने का सौभाग्य प्राप्त था, चिरसंचित रहेगी।

श्री लालबहादुर शास्त्री में सरल वाणी और शिष्ट व्यवहार के पीछे उनका दृढ़ संकल्प, उनकी तीव्र बुद्धिमत्ता और एक ऐसे महापुरुष की गहन कर्त्तव्यनिष्ठा छिपी हुई थी, जो विश्व के सब से वड़े लोकतंत्र का, उसकी स्वतंत्रता के वाद की कठिनतम परीक्षाओं के दौरान मार्ग-प्रदर्शन करने के लिए अद्भुत रूप से उपयुक्त था। भारतीय लोगों के तीव्र उत्थान के प्रति अपने सच्चे उद्देश्यों के प्रति अपनी अथक निष्ठा द्वारा उन्होंने स्वयं अपने और भारत के लिए अमेरिकी लोगों के हृदयों में चिरस्थायी स्थान प्राप्त कर लिया है।

—चेस्टर वोल्स, राजदूत, अमेरिका

प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री की दुखद मृत्यु के समाचार से सारी दुनिया स्तब्ध रह गई। भारत के सभी मित्र देशों को इस समाचार से गहरा धक्का लगा है।

—राजदूत, स्विटजरलैंड

ताशकन्द में प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन के दुखद समाचार से मुझे बहुत गहरा धक्का पहुँचा है। उनकी मृत्यु से भारत ने अपना एक योग्यतम नेता खो दिया है और इस अवसर पर उनके इस संसार से चले जाने के कारण केवल भारत सरकार और भारत के लोगों पर ही नियति का जबर्दस्त प्रहार नहीं हुआ है, बल्कि यह विश्वशान्ति के लिए भी अशुभ बात हुई।

—राजदूत, पोलैंड

शास्त्री जी की मृत्यु अत्यन्त दुःखकारक घटना है।

—पोपपाल

प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन पर मैं मोरक्को की जनता और अपनी ओर से हार्दिक दुःख प्रकट करता हूँ। भारत हमारा मित्र है, इसलिये भारत का दु हमारा दुःख है।

—शाह हसन द्वितीय, मोरक्को

शास्त्री जी का आकस्मिक निधन दुनिया के सभी शांतिप्रिय लोगों के लिये गहरा आघात है।

— अब्दुल रहमान, प्रधानमंत्री, ईराक

श्री शास्त्री जी के निधन से सभी अफ्रीकी एशियाई देशों को दुःख हुआ है। शोक के इस अवसर पर कृपया अल्जीरिया की जनता, सरकार और मेरी हार्दिक समवेदना स्वीकार करें। शास्त्री जी के आकस्मिक और दुखद निधन से हमें इसलिये और भी दुःख हुआ क्योंकि यह वज्रपात उस समय हुआ जब शांति और आशा की एक किरण हमें दिखाई देने लगी थी।

—हौरी बुमेदी, राष्ट्रपति, अल्जीरिया

श्री लाल बहादुर शास्त्री के ताशकन्द में निधन समाचार से मुझे अत्यंत दुःख हुआ है। मैं अपनी ओर अपने देश की ओर आप को तथा भारत की जनता को हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ।

—सवंग वत्थन, सम्राट, लाओस

श्री शास्त्री जी ने केवल अपने देश के लिये बल्कि विश्व शांति के लिये बड़ा काम किया।

—कौंडाने, प्रेसीडेंट, जाम्बिया

श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर मुझे हार्दिक दुःख हुआ है। शास्त्री जी का निधन न केवल भारत की, बल्कि पूरे राष्ट्र मण्डल की क्षति है। मैं आस्ट्रेलिया की सरकार, जनता, अपनी पत्नी तथा अपनी ओर से भारत सरकार, भारतीय जनता और दिवंगत प्रधानमंत्री के शोक संतप्त परिवार को अपनी संवेदना प्रकट करता हूँ।

—लार्ड केसी, गवर्नरजनरल, आस्ट्रेलिया

श्री शास्त्री के निधन से केवल भारत की ही क्षति नहीं, बल्कि सारी दुनिया की क्षति हुई है।

—कार्यकारी प्रधानमंत्री, उगांडा

शास्त्री जी के अचानक और दुखद निधन पर मुझे और मेरी पत्नी को गहरा दुःख हुआ है। कृपया श्रीमती शास्त्री और उनके शोक संतप्त परिवार को मेरी संवेदना प्रकट करें।

—गवर्नर, न्यूजीलैण्ड

यह सब इतना अचानक हुआ कि उस पर विश्वास करना कठिन है। मुख्य रूप से शास्त्री जी शांति के व्यक्ति थे। उन्होंने अपना जीवन शांति की शूली पर चढ़ा दिया। आज सारा देश एक ऐसे व्यक्ति के निधन पर शोक मना रहा है, जिसका उसने न केवल सम्मान किया, वल्कि उसकी सेवा भी किया। उनकी कूटनीतिज्ञता के अन्तिम कार्य का महत्व तो भविष्य में ही पता चलेगा।

—जाकिर हुसेन,
उपराष्ट्रपति, भारत सरकार

यह देश के लिये सबसे बड़ी दुखद घटना है। प्रधान मंत्री शास्त्री देश के कार्यों का सही दिशा में नेतृत्व करते हुए जनता का विश्वास प्राप्त कर रहे थे। उन्होंने हाल ही के भारत पाक संघर्ष में भारत का सम्मान कायम रखा तथा उसकी प्रतिष्ठा को ऊँचा किया। यह वास्तव में वड़ा ही दुखद है कि उनकी मृत्यु ताशकंद के शांति मिशन की सफलना के तुरन्त पश्चात हुई।

—के० कामराज नाडार,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

'ताशकंद में अपने प्रधान मंत्री श्री लाल वहादुर शास्त्री का देहान्त होने की खबर सुनकर मैं स्तब्ध रह गई। वह बड़े दृढ़ संकल्प के आदमी थे और उन्होंने अपना सारा जीवन देश-सेवा में निछावर कर दिया था।

—श्रीमती इंदिरा गांधी, प्रधान मंत्री, भारत

श्री शास्त्री की मृत्यु का समाचार इतना भयावह है कि उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

— राजगोपालाचारी, स्वतन्त्र पार्टी

हमारे इतिहास के सर्वाधिक संकट की घड़ी में श्री शास्त्री ने सर्वोत्तम कार्य किया है। श्री लालबहादुर शास्त्री ने अपनी भौतिक शरीर की तुलना में १½ वर्षों में कहीं अधिक कार्य कर दिखाया है।

—विनोवा भावे

श्री शास्त्री जी का आकस्मिक निधन समस्त संसार के लिए दुःखद घटना है। हालांकि वे बहुत ही कम समय के लिए प्रधान मन्त्री रह पाये फिर भी उन्होंने इस बीच दृढ़ता, साहस और कल्पना शक्ति का अद्भुत परिचय दिया है। मेरे लिए तो यह समाचार बहुत ही दुखद है।

— सम्पूर्णानन्द, राज्यपाल, राजस्थान

स्व० श्री लालबहादुर शास्त्री कद के छोटे, सादा मिजाज, सादे लिबास पहनने वाले अत्यन्त विनम्र और सौम्य स्वभाव के थे। लेकिन उनका हृदय बहुत विशाल था और उनके अन्दर एक बड़ी आत्मिक शक्ति थी। वे लौह इच्छावान पुरुष थे। उनमें अदम्य धैर्य और साहस तो था ही, लेकिन साथ ही साथ किसी भी बड़ी से बड़ी समस्या का सामना करने के लिए यथेच्छ दार्शनिक वृत्ति और सन्तुलन उनमें था। वे भारतीय संस्कृति के उच्चतम गुणों से विभूषित थे। यह भारतीय लोकतन्त्र की सबसे उल्लेखनीय बात है कि श्री लालबहादुर शास्त्री एक सामान्य कुल में जन्म लेकर भारत के प्रधान मंत्री के उच्च पद पर पहुँच गए। उनकी सबसे बड़ी बात यह थी कि उनका चरित्र बेदाग था।

श्री शास्त्री सदैव न्यायपालिका की स्वतन्त्रता के हामी रहे हैं। उनकी मृत्यु से संवैधानिकता और न्याय का एक बड़ा पक्षपाती अब नहीं रहा।

वे थोड़े समय प्रधानमंत्री रहे, लेकिन इस थोड़ी सी अवधि में ही उन्होंने देश और अपने नाम को उज्जवल किया।

इस सम्बन्ध में उन्होंने इस संस्कृत श्लोक का उद्धरण दिया

मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयो
न च धूपायितं चिरम्।

एक क्षण के लिए भी प्रज्वलित होकर जलना, दीर्घ अवधि तक धीरे-धीरे धुआँ देते जलने से कहीं अच्छा है।

शास्त्री की स्मृति को अमर रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि हम उनके दिखाए गए मार्ग पर चलें और उनके आदर्शों का अनुपालन करें, न कि आंसू बहाएँ इससे सम्बन्धित संस्कृति श्लोक का उद्धरण देकर उन्होने इस बात को समझाया

अतो न रोदितव्यंहि
क्रिया कार्याः स्वशक्तितः।

—गजेन्द्र गड्कर, प्रमुख न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय,

प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का निधन देश के लिए एक असहनीय धक्का है। वह एक बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे और देश का बड़ी कुशलतापूर्वक नेतृत्व कर रहे थे।

—मोरार जी देसाई,
भू० प० वित्तमन्त्री, भारत सरकार

वह दिल के मरीज थे तथा जिस तरह वह इस उच्च पद को लेकर चल रहे थे। उससे ऐसा पता चलता था कि वह लम्बे अर्से तक देश की सेवा करते रहेंगे। वह

जनता के व्यक्ति थे तथा साधारण लोगों के बीच से उठकर उन्होंने सर्वोच्च सम्मान प्राप्त किया, जो देश की जनता अपने एक प्रमुख सेवक को दे सकती थी। वह शांति के व्यक्ति थे।

—जे० बी० कृपलानी, संसद सदस्य

श्री शास्त्री ने अपने आपको श्री नेहरू का योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध कर दिखाया था। उन्होंने एक मान्य नेता के रूप में भी अपना स्थान बना लिया था। ताशकंद में वे ऐसी कठिन स्थिति में जूझते रहे जिससे किसी परिणाम की आशा नहीं की जाती थी। उनकी मृत्यु देश के लिए एक महान क्षति है। हम भले ही सब बातों से सहमत न हों जिनपर श्री शास्त्री ताशकंद में सहमत हो गये। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मतभेद हमेशा रहेंगे, लेकिन हम हमेशा इस बात के लिये आश्वस्त रह सकते हैं कि श्री शास्त्री अपनी धारणाओं के अनुसार अवश्य समझते होंगे कि उन्होंने जो कुछ किया था वह देश के हित में था। देश को इस समय उनकी सर्वाधिक आवश्यकता थी। वे हृदय से देशभक्त थे। और उन्होंने जीवन पर्यन्त सादा जीवन व्यतीत किया।

—हुकुमसिंह, अध्यक्ष, लोकसभा

देश की इच्छाओं, आकांक्षाओं का सच्चा प्रतिनिधि उठ गया। मैं इस अप्रत्याशित समाचार से स्तब्ध रह गया हूँ। पिछली रात इस समाचार पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई थी कि ताशकन्द में वार्ता कि सफल समाप्ति हुई।

अपने डेढ़ वर्ष के प्रधानमंत्री काल में देश के लिये उन्होंने कमाल के कार्य कर दिखाए और उनसे इस प्रकार की उपलब्धि की और आशा की जाती थी। उनके देहावसान से राष्ट्र की तो क्षति ही हुई है मेरी व्यक्तिगत क्षति हुई। ऐसी क्षति जिसका अन्दाजा लगाना मुश्किल है। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। श्री शास्त्री के निधन से जो आघात पहुँचा है उसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। भगवान उनकी पत्नी और उनके परिवार वालों को शोक सहने की शक्ति प्रदान करे।

—श्रीप्रकाश भू० पू० राज्यपाल, महाराष्ट्र

शास्त्री जी का निधन घर से इतनी दूर हुआ। प्रत्येक उत्तराधिकारी प्रधानमंत्री को अपने पूर्ववर्ती की अपेक्षा अधिक भार वहन करना पड़ता है। मुझे दुख है कि शास्त्री जी असमय में ही हमसे छीन लिये गये।

—राममनोहर लोहिया, नेता, समाजवादी दल

यह बहुत दुखद क्षति है।

—उ० न० ढेबर, भू० पू० अध्यक्ष, अखिल भारतीय कांग्रेस

इससे बड़ी विपत्ति देश पर और नहीं आ सकती थी। शास्त्री जी जैसी शान्ति प्रियता, साहस, बुद्धिमत्ता, आत्मविश्वास, नेता के मानवीय गुण—इन सब खूबियों-वाला व्यक्ति सदियों बाद जन्म लेता है।

—जयप्रकाशनारायण

इतिहास में कोई ऐसा आदमी नहीं जिसने १८ महीने में किसी भी देश पर ऐसा असर छोड़ा हो। वह कहा करते थे कि जिस हिम्मत से हमने लड़ाई लड़ी उसी हिम्मत से शांति के लिए यत्न करना चाहिए।

—यशवन्तराव चह्वाण, रक्षामन्त्री, भारत

इस खबर ने हम सबको स्तब्ध कर दिया। ताशकंद में उनकी सफलता के बाद हम तो उनके स्वागत की तैयारी कर रहे थे, परन्तु परमात्मा की मर्जी कुछ और थी। भगवान राष्ट्र को यह धक्का सहने की शक्ति दे।

—सत्यनारायण सिंह,
केन्द्रीय संचार और सन्सदीयकार्य मन्त्री

शास्त्री का निधन देश के लिए बहुत बुरा हुआ।

—संजीव रेड्डी,
इस्पात मन्त्री, भारत सरकार

शास्त्री जी ने विश्वशांति तथा भारत और पाकिस्तान के बीच मैत्री स्थापित करने के लिए अपना जीवन त्याग दिया।

—जगजीवन राम, भू० पू० रेलमन्त्री, भारत सरकार

शास्त्री जी के निधन से देश का शांत ईमानदार और कर्मठ नेता उठ गया जिसकी स्थान पूर्ति होना अत्यन्त कठिन है।

—कृष्णदत्त पालीवाल, आगरा

मौत बार बार देश की परीक्षा लेने पर तुली हुई है। स्व० श्री शास्त्री ने अठारह महीने में जो कुछ कर दिखलाया, उसे देखने के लिए देश विगत अठारह वर्षों से लालायित था। उनके नेतृत्व में देश ने करवट ली। देश का स्वाभिमान जागा। सेना ने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा प्राप्त की और दुनिया ने देखा कि भारत सिर्फ शांति का पुजारी ही नहीं आवश्यकता पड़ने पर हथियार भी उठा सकता है।

—अटल बिहारी बाजपेयी, भारतीय जनसंघ

यह मेरी व्यक्तिगत क्षति है। इस दुखद समाचार से मैं स्तब्ध रह गया हूँ। वे महान व्यक्ति थे और इसी रूप में उनका अन्त भी हुआ उन्होंने देश का मान बहुत ऊँचा उठाया। आजीवन उन्होंने बड़ी कुशलता के साथ देश की सेवा की। राष्ट्र की सेवा के लिए उन्होंने अपने को उत्सर्ग कर दिया। देश इस समय बड़े नाजुक समय से गुजर रहा है। ईश्वर हमें अपने कर्त्तव्यपालन में बल दे। भगवान उनके शोक संतप्त परिवार को यह असाधारण विपत्ति सहने के लिए धैर्य प्रदान करे।

—त्रिभुवन नारायण सिंह
केन्द्रीय भारी उद्योग मन्त्री

उनका स्थान लेने वाला व्यक्ति कभी भी पाना कठिन होगा। जबकि उनसे बिछुड़ने की पीड़ा खत्म नहीं हुई है, मेरे लिए इस समय उनका निधन पीड़ादायक है। ताशकन्द सफलता के बाद उन्होंने सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की। लेकिन वे अपने पीछे अनगिनत और न हल हो सकने वाली समस्यायें छोड़ गये हैं।

— टी० टी० कृष्णामचारी, भू० पू० वित्तमन्त्री, भारत

मैं यह दुखद समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया। कल रात ही मैं शास्त्री जी की महान सफलता पर खुश हो रहा था। लेकिन इतनी जल्दी उनका अंत होगा, यह किसी ने नहीं सोचा था। एक महान व्यक्ति के चले जाने से आज दुनिया भर में शोक छाया हुआ है। भगवान की लीला अपरम्पार है।

—हुमायूं कबीर
केन्द्रीय पेट्रोल और रसायन मन्त्री

लालबहादुर जी अपने जीवन की महान विजय के अवसर पर मरे। १८ महीनों में शास्त्री जी ने जो कुछ पाया, उसे राजा, सम्राट और बड़े बड़े राजनेता दसियों साल में भी नहीं पाते। वह बुद्धिमान, शांतिप्रिय, साहसी और हर काम में लगन से काम करनेवाले व्यक्ति थे।

आज भारत ने महान सपूत खो दिया है। हम लालबहादुर जी के स्वप्न को पूरा करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

—मनुभाई शाह
वाणिज्य मन्त्री, भारत सरकार।

शास्त्री जी के निधन से भारत ने ताशकंद में शांति युद्ध को तो अवश्य जीत लिया पर उसने युद्ध के नायक को हमेशा के लिये खो दिया।

— ओ० वी० अलगेसन, मंत्री, भारत सरकार

प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन से देश ने एक ईमानदार नेता खो दिया है।

—हरे कृष्ण मेहताब, भूतपूर्व मुख्य मंत्री, उड़ीसा

उनकी ईमानदारी, नेतृत्व और तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता सदा याद रहेगी। देश की महान सेवा कर के वह इस संसार से विदा हुए हैं।

— भारतीय सेनाओं के अध्यक्ष

शास्त्री जी वीरों की मौत मरे। उनकी मृत्यु देश के लिये बड़ा आघात है। वे सारे देश को एकताबद्ध रखने की एक महान शक्ति थे।

— अजित प्रसाद जैन, भू० पू० राज्यपाल, केरल

शास्त्री जी की मृत्यु का समाचार भयावह है।

—अयोध्या नाथ खोसला, राज्यपाल, उड़ीसा

देश शास्त्री जी को कृतज्ञता के साथ याद रखेगा। उन्होंने देश के लिये महान कार्य किया।

—पी० वी० चेरियन, राज्यपाल, महाराष्ट्र

शास्त्री जी अपनी प्रतिष्ठा के चर्मोत्कर्ष पर पहुँचने पर चल बसे। मुझे इससे गहरा धक्का लगा है।

— अनन्त शयनम आयंगर, राज्यपाल, बिहार

उन्होंने ताशकन्द में वह प्राप्त किया, जिसे हम खो गया समझते थे।

—विष्णु सहाय, राज्यपाल, असम

दुनियाँ को और खासकर भारत को गहरा आघात लगा है। श्री शास्त्री महान-देशभक्त और योग्य नेता थे।

—हाफिज मुहम्मद इब्राहिम, राज्यपाल, पंजाब

राष्ट्र ऐसे महान नेता से वंचित हो गया है जो शान्ति के प्रेमी थे और उसी के लये कार्य किया।

— कर्ण सिंह, राज्यपाल, कश्मीर

शास्त्री जी की मृत्यु सबको स्तब्ध कर देने वाली है। वे एक सच्चे जनतंत्रवादी और राष्ट्र सेवक थे। अपने अल्प शासन काल में उन्होंने देश का कुशल और साहसपूर्ण मार्ग दर्शन किया और अपने व्यक्तित्व को भी ऊँचा उठाया। हाल के संघर्ष में वे एक साहसी और दृढ़ नेता के रूप में प्रकट हुए।

—सुचेता कृपालानी, मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश

श्री शास्त्री के दिल में सामान्य जनता के लिए दर्द था। स्व० प्रधान मंत्री नेहरू उनके गुण से प्रभावित रहते थे।

—विजयलक्ष्मी पंडित, संसद सदस्य

शास्त्री जी निःस्वार्थी और देशभक्त थे। उनका जीवन और कार्य अगली पीढ़ी के लिए उत्साह प्रदान करेगा।

—कैलासनाथ काटजू, भू०पू० मुख्यमन्त्री, मध्यप्रदेश

मुझे गत पैंतालिस वर्षों से उनका निकटतम साथी होने का सौभाग्य प्राप्त था लालबहादुर जी के साथ कई वर्षों तक मुझे जेल में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बहुत दिनों तक जिसके साथ चौबीसो घन्टे रहने का सुयोग मिला हो उसे स्वभावतः बहुत निकट से देखना और पहचानना सम्भव हो ही जायेगा। फलतः मैं यह कह सकता हूँ कि मुझे शास्त्री जी को भलीभाँति बहुत ही नजदीक से देखने और समझने का सुयोग मिला। उनकी सरलता, उनका मधुर स्वभाव, उनका शील, और सबसे बढ़कर दूसरे के प्रति उनके हृदय में सहानुभूति की भावना उनके वे विशिष्ट गुण थे जो उन्हें सभी का स्नेहपात्र बना देते थे।

शास्त्री जी के व्यक्तित्व में प्रभावशाली आकर्षण था। वे जिससे मिलते थे उसे अपने स्वभाव और संतुलित विचार तथा अपने विवेक से शीघ्र ही प्रभावित कर लेते थे। जिस किसी के संपर्क में शास्त्री जी आये थे वे सभी उनके व्यक्तित्व की ओर आकृष्ट हुये थे। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें देश के सर्वोत्कृष्ट आसन पर बैठा दिया था। वे कितने लोकप्रिय थे और देश की जनता का उनपर कितना विश्वास था यह उनके प्रधान मंत्री होने के थोड़े ही समय के बाद पूर्णरूप से स्पष्ट हो गया था। हमारा विश्वास है कि देश की वर्तमान स्थिति में वही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने राष्ट्र का संचालन उन नीतियों के आधार पर किया जिनका निर्धारण आधुनिक भारत के निर्माता स्वर्गीय पं० जवाहरलाल जी ने किया था।

—कमलापति त्रिपाठी, अध्यक्ष, उ० प्र० कांग्रेस कमेटी

श्री लालबहादुर शास्त्री का व्यक्तित्व संतो-सा था। वे नागरी प्रचारिणी सभा के रचनात्मक साहित्य और नागरी लिपि की नीतियों के संरक्षक और साक्षी थे। उनका इतिहास आज देश-विदेश के शांतिप्रिय एवं असंख्य भारतीयों का इतिहास है। वे जितने विनयी थे, उतने ही दृढ़ भी। 'वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि' के मूर्तिमान रूप थे। उनका आनेवाला काल इतिहास का महत्वपूर्ण मोड़ माना जायगा। मैं उनकी शांति नीति और कुशल राजनीतिक उदारता को अपने देश की एक अमूल्य उपलब्धि मानता हूँ।

—शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र', प्रधान मंत्री, काशीनागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

अभिनन्दनीय पुरुष भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी का संस्कृत से विशेष अनुराग था। अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के वे वर्तमान अध्यक्ष थे। सम्मेलन के गजियाबाद अधिवेशन में उन्होंने संस्कृत साहित्य के लिये जो विचार व्यक्त किये थे उनसे उनका संस्कृतानुराग स्पष्ट होता है। उन्होंने संस्कृत शिक्षा और साहित्य के भावी विकास के लिए शासन की ओर से अनेक प्रयत्नों के संचालन का भी उक्त भाषण में निर्देश दिया था। हमारा उनसे आग्रह था कि संस्कृत साहित्य और उसकी शिक्षा के प्रचार और प्रसार में उनका शासन अग्रसर हो, और हमारी प्रधान निधि से एक बार फिर से समस्त विश्व लाभान्वित हो। उनके निधन से महान क्षति हुई है। उनके प्रति मेरी हार्दिक शोक संवेदना है।

—गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, वाराणसी

महाकाल ने रात में परदेश में छिपकर देश की छाती पर वज्राघात किया। देश के अनन्य दृढ़व्रती योद्धा शास्त्री जी लोककल्याण के लिए आत्माहुत हो, कालजयी हुए। देश उनकी छत्रछाया में निश्चित एवं संरक्षित था। अब लगता है घर वीरान हो गया, कल्याण का कल्पवृक्ष सूख गया, विश्वास की वाणी सिर धुन कर पछता रही है, विवेक को लकवा मार गया, निष्ठा विधवा हो गई और आशा पगली सी भटक रही है।

हमारे उनके अनेक नाते थे। वे काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संरक्षक थे, उसकी संकेतलिपि विद्यालय के आदि सफल विद्यार्थी थे, लगभग चार दशकों से वे सभा के मान्य सदस्य तथा सभा के सुख-दुख के संगी साथी थे। १८ महीनों में ही उन्होंने विश्वकोश के चौथे भाग तथा शब्दसागर का उद्घाटन किया और सभा की नयी इमारत की नींव रखी और अभी अभी एक महीने भी तो नहीं बीता जब तीर्थराज प्रयाग में उन्होंने हमारा उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा था—'मेरी जानकारी में सभा देश की हिंदी की सबसे बड़ी रचनात्मक संस्था है। मेरा उससे ४० वर्ष से अधिक का सम्बन्ध है। उसकी मुझपर छाप है। आर्थिक कटौती चल रही है पर सभा का काम नहीं रुकने पायेगा।'

हमारे ऐसे सुधी संरक्षक का तिरोधान हो गया। विश्व से शांति का एक दृढ़ उपासक उठ गया, देश की कोटि कोटि जनता का समर्थ सगा सम्बन्धी सदा के लिए चला गया और हमारी तो आशा पर ही पानी फिर गया। उनके हाथों देश, देशी भाषाओं तथा हिंदी का भविष्य संरक्षित था। इन सब के प्रेमी किंकर्तव्यविमूढ़ हैं। मुझ अकिंचन को भी उनका स्नेह प्राप्त था। लगता है, सब कुछ होते हुए भी अनाथ-सा हूँ।

१८ महीनों में उन्होंने जो कुछ किया, उतना मंगल कार्य संभवतः इतने अल्प समय में किसी ने नहीं किया। इतिहास उनकी कृतियों को हीरा और मणियों की मसि से लिखेगा। वे हिंदी के लेखक भी थे और गत १८ दिसम्बर को ही सभा के मंच से उन्होंने काल को ललकारा था। उन्हीं के वे शब्द कानों में बार बार गूँज रहे हैं मानो शास्त्री जी सामने खड़े होकर सांत्वना दे रहे हैं।

'जब लग गयी तो फिर सोचना क्या, और काल से क्या डरना। मैंने तो पढ़ा है—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयंत्यापो, न शोषयति मारुतः॥

कर्तव्य-पथ पर निकल पड़ा हूँ, जो होगा, देखा जायगा।'

वे चले गये पर उनकी स्मृति तब तक देश में बनी रहेगी और प्रेरणा देती रहेगी जब तक गंगा और यमुना में जल है। अपनी अँजुरी में आँसूभर अपने संरक्षक के चरणों में चढ़ाने के अतिरिक्त और करूँ तो क्या करूँ? शास्त्री जी अमर रहें। उनकी जय हो।

—सुधाकर पाण्डेय, प्रकाशन मन्त्री, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

हमारे प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री अपनी सार्वजनिक सेवाओं, अपने शान्त किन्तु गंभीर स्वभाव, अपनी नैसर्गिक सरलता तथा प्रशासन संबंधी ठोस अनुभवों के कारण देश भर के लोगों के दिलों पर अपना प्रभाव डाल चुके थे। उनके व्यक्तित्व में निस्पृहता तथा उच्चता के दर्शन होते थे। उनकी कार्यपटुता तथा तत्परता से उपर्युक्त गुण और भी चमक उठते थे। जिस किसी को भी उनसे बातचीत करने का या किसी विषय पर विचार-विनिमय करने का कभी सुयोग मिला था, वह उनकी दृढ़ता और संकल्प शक्ति से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा होगा। उनके व्यवहार में सौजन्य और नम्रता का इतना पुट रहता था कि एक बार मिलने पर उनसे दिल खोलकर बात करने की प्रेरणा मिलती थी। अपनी धारणाओं तथा विचारों में वे चाहे जितने दृढ़ रहे हों, किन्तु दूसरे पक्ष की बात सदा धैर्य ही नहीं बल्कि आदर के साथ सुनते थे।

कई अर्थों में शास्त्री जी हमारे राष्ट्र के सच्चे प्रतिनिधि थे। वे बड़े गर्व से कहते थे कि उनका जन्म एक बहुत साधारण परिवार में हुआ। जीवन की ऊँच नीच जो एक औसत भारतीय को देखनी पड़ती थी, उन्होंने भी उसके दर्शन किए। उनकी शिक्षा दीक्षा अधिकतर राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं में हुई थी। उन संस्थाओं में काशी विद्यापीठ सर्वप्रथम है। वहाँ के राष्ट्रीय वातावरण और आचार्य नरेन्द्रदेव,

श्री संपूर्णानन्द सरीखे गुरुजनों के सम्पर्क से शास्त्री जी ने प्रेरणा ली थी। मैं समझता हूँ कि राष्ट्रीय कार्यों में उनकी लगन, उनका भारतीय दृष्टिकोण और उनकी सादगी तथा सात्विकता उसी प्रेरणा के फल थे। उनके निधन से महान क्षति हुई है। उनके प्रति मेरी हार्दिक शोक संवेदना है।

—रामसुभग सिंह, केन्द्रीय रेलवे राज्यमन्त्री

शास्त्री जी अपनी किशोरावस्था से ही देश के कार्य में लग गये। काशी विद्यापीठ से अपना अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् ही लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित लोक सेवक समिति के आजीवन सदस्य बनकर देश सेवा का जो व्रत शास्त्री जी ने लिया था उस पर वे बराबर आरूढ़ रहे। उन्होंने अपना सारा समय देश सेवा में ही बिताया। अपनी कार्यक्षमता तथा अथक परिश्रम करने की शक्ति द्वारा जो भी कार्य शास्त्री जी के सुपुर्द किया गया उसे बड़ी योग्यता और कुशलता से सम्पन्न किया। वे अपनी सचाई, सादगी, ईमानदारी और निस्पृहता के कारण अपने प्रदेश में ही नहीं किन्तु सारे जगत में जनप्रिय और प्रेम तथा श्रद्धा के पात्र हो गये थे। राष्ट्रनायक पं० जवाहर लाल नेहरू को शास्त्री जी की योग्यता तथा कार्यक्षमता पर पूर्णरुपेण विश्वास था। इसलिये देश की बागडोर उनके ही हाथों में सुरक्षित रहना श्रेयस्कर समझते थे। देश का प्रधान मंत्रित्व ऐसे संकटकालीन समय में जिस खूबी के साथ शास्त्री जी चला रहे थे उसके फलस्वरूप उन पर देशवासियों का विश्वास बढ़ता जा रहा था और विदेशों में भी उनका सम्मान बढ़ रहा था।

—वीरबल सिंह, उपकुलपति, काशी विद्यापीठ

शास्त्री जी देश की एकता के प्रतीक थे। वे स्वप्न दर्शन को नहीं, व्यवहार विवेक को महत्व देते थे। उतावली और उद्विग्न भाव से वे किसी समस्या पर विचार नहीं करते थे। धैर्य, विवेक, सरलता ही उनकी राजनीतिक परिपक्वता की त्रिवेणी थे। उनके हाथों में राष्ट्र सुरक्षित था।

—कृष्ण वल्लभ सहाय, मुख्य मंत्री, बिहार

कर्म के प्रति शास्त्री जी में जो निष्ठा थी, वह असंदिग्ध थी। विश्रामहीन भाव से निरंतर कार्यरत रहना उनका स्वभाव बन गया था। उनमें धैर्य, संयम, शालीनता और विश्वासपात्रता आदि ऐसे गुण थे जो एक साथ कम मिलते हैं। शास्त्री जी के नेतृत्व में हम समाजवादी समाज के लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे।

—द्वारिका प्रसाद मिश्र, मुख्य मंत्री, मध्यप्रदेश

शास्त्री जी हर दृष्टि से लोकतंत्री थे। उनका व्यवहार और दृष्टिकोण लोकतंत्री था। उनकी निष्पक्षता और न्यायप्रियता किसी प्रशंसा की मुखापेक्षी नहीं थी। संकट का धैर्य और विवेक के साथ सामना करने के पराक्रम का उनमें अभाव नहीं था। प्रशासन और भारतीय जनता उनके हाथों सुरक्षित थी।

—यशवंत सिंह परमार, मुख्य मंत्री, हिमांचल प्रदेश

श्री शास्त्री जी कर्मवीर थे। उन्होंने भारत और पाकिस्तान के सौहार्द्र और मैत्री की वेदी पर अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया।

—त्रिलोकी सिंह, उपाध्यक्ष, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी

इस समाचार से प्रत्येक व्यक्ति स्तम्भित हो गया है। अपने देश को भली भाँति जानने वाला अब कोई व्यक्ति नहीं रह गया है। उसके निधन से देश की करोड़ों जनता की ज्योति बुझ गई।

—गेंदा सिंह, कृषि मंत्री, उत्तर प्रदेश

मेरा उनका साथ १६१८ से था। और जब पिछली २ जनवरी को मैं उनसे दिल्ली में मिला था। तो इस बात का आभास तक नहीं था, कि इतना पुराना साथी इतनी जल्दी छोड़ कर चला जायगा। पिछले महीनों में उन्होंने उतना ही यश अर्जित किया जितना नेहरू जी ने १८ वर्ष में। वे युद्ध और शान्ति दोनों में ही महान नेता के रूप में मुखरित हुए। मेरा उनका सम्बन्ध ऐसा रहा जैसा दो सगे भाइयों का भी नहीं होता।

—अलगू राय शास्त्री, उपसभापति, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी

ऐसे संकट काल में श्री शास्त्री के निधन के समाचार से सभी स्तब्ध रह गये। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्री देश के वे सबसे बड़े नेता थे। उनके निधन से न केवल हमारे देश की वरन् पूरी दुनियाँ की ऐसी क्षति हुई जिसकी पूर्ति असम्भव है।

श्री शास्त्री सादगी, प्रेम, सेवा और त्याग की प्रतिमूर्ति थे। पिछले डेढ़ साल में उन्होंने राष्ट्र में नये जीवन का संचार किया, देश को मजबूत बनाया और अपने अथक प्रयत्नों से देश में एकता कायम की।

उनमें जटिल से जटिल समस्या को हल करने की प्रतिभा थी। वे हमेशा हँसमुख रहते थे, विनम्र थे, लेकिन इसके साथ ही वे दृढ़ निश्चय के व्यक्ति थे।

श्री शास्त्री न केवल भारत और पाकिस्तान बल्कि पूरी दुनिया को शांति तथा सद्भावना का मार्ग दिखाया। जिस व्यक्ति ने मानव मात्र के शांति का संदेश दिया वह अब हमारे बीच नहीं रहा।

—रामकिशन, मुख्यमंत्री, पंजाब

आज शास्त्री जी के नेतृत्व की सर्वाधिक आवश्यकता थी। ताशकन्द में उन्होंने जो कुछ प्राप्त किया उससे वे विश्व के बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन गये थे।

—वसंतराव नायक, मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र

श्री शास्त्री जी ने प्रधानमंत्री की विरासत को बड़ी सफलता से सम्हाला था। हम इस दुर्घटना को सहन नहीं कर सकते, भगवान ही मदद कर सकता है।

—भक्तवत्सलम्, मुख्यमंत्री, मद्रास

देश का बड़ा दुर्भाग्य है कि उसने एक बहादुर और लोकप्रिय प्रधान मंत्री खो दिया।

—विमल प्रसाद चालिहा, मुख्यमंत्री, आसाम

शास्त्री जी का निधन देश के सामने इस समय सबसे खराब दिन आये जान पड़ते हैं।

—प्रफुल्लचन्द्र सेन, मुख्यमंत्री, बंगाल

वर्तमान नाजुक स्थिति में श्री शास्त्री का देहान्त सचमुच बहुत ही दुःखद है। देश को एक ऐसे नेता की आवश्यकता है, जो राष्ट्र के समस्त साधनों को जुटा सके तथा सार्वभौम सत्ता की रक्षा कर सके।

—सदाशिव त्रिपाठी, मुख्यमंत्री, उड़ीसा

शास्त्री जी का निधन इतना दुखद है कि इसके स्मरण मात्र से भी गहरा सदमा पहुँचता है।

—ब्रह्मानन्द रेड्डी, मुख्यमन्त्री, आन्ध्र प्रदेश

श्री शास्त्री जी का डेढ़ वर्ष का नेतृत्व बहुत ही उत्साह वर्धक और प्रभावशाली था जिसमें देश ने अपनी कठिन समस्याओं को दृढ़ता और सफलता के साथ हल किया।

—हितेन्द्र देसाई, मुख्यमंत्री, गुजरात

राष्ट्र ने नेहरू जी के पश्चात् एक अच्छे व्यक्ति का चुनाव किया था तथा शास्त्री जी ने देश की सभी आशाओं को पूरा किया। उन के स्थान की पूर्ति करना कठिन है लेकिन फिर भी हमें उस कार्य को, जो वे कर रहे थे, पूरा करना है।

—निजलिङ्गप्पा, मुख्यमंत्री, मैसूर।

हमारे देश ने लोकप्रिय प्रधानमंत्री को खो दिया। राष्ट्र के सामने एक बार फिर कड़ी परीक्षा का समय आ गया है। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि वह हमें इस भारी क्षति को बर्दाश्त करने की शक्ति प्रदान करे और नयी चुनौती का सामना करने के लिये हिम्मत दें। शास्त्री जी ने कल शांति के स्थापना के लिये गहरा योगदान किया। शास्त्री जी ने कठिन परीक्षा के समय देश का नेतृत्व किया और संसार को बता दिया कि भारत शांति और अहिंसा के सिद्धांतो से बँधा हुआ है। लेकिन उसमें अपनी रक्षा करने का सामर्थ्य ही नहीं, बल्कि हमलावरों को मुँह-तोड़ जवाब देने की शक्ति भी है।

—जी० एम० सादिक, मुख्यमंत्री, कश्मीर

राष्ट्रीय इतिहास की इस घड़ी में उनका निधन देश को संरक्षक विहीन बना गया है। इससे जो धक्का लगा है उसे शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

—दयानन्द बन्दोदकर, मुख्यमंत्री, गोवा

उनके अल्प कालीन शासन में जनता को यह विश्वास हो गया था कि अब देश की नौका सही दिशा में चलेगी। उनके निधन से एक महान राष्ट्रवादी उठ गया।

चरन सिंह, वन मंत्री, उत्तर प्रदेश

अब हम गम्भीर संकट पूर्ण स्थिति में ढकेल दिये गये हैं। इस समाचार ने मुझे जड़वत बना दिया है। इस समय मैं इससे अधिक और कुछ नहीं कह सकता।

—गोविन्द सहाय
महामंत्री, उ० प्र० कांग्रेस कमेटी,

श्री शास्त्री ने राष्ट्र की खोयी हुई प्रतिष्ठा और गरिमा से पुनः विभूषित किया। ताशकन्द में श्री शास्त्री ने असम्भव कर दिखाया। जब राष्ट्र उनके स्वागत की तैयारी कर रहा था तभी वे हमसे बिछुड़ गये।

—दुर्गादास खन्ना, अध्यक्ष, विधान परिषद्

श्री शास्त्री के रूप में एक ऐसा व्यक्ति शासक के रूप में मिला था जिसने युद्ध का दृढ़ता और साहस के साथ मुकाबला किया था। वे दयालु हृदय के साथ सदा शान्ति और सद्भावना के लिए प्रयत्नशील रहे। वे इतिहास में अपना स्थान बना गये हैं और एक ऐसी जगह छोड़ गये है जिसे पूरा करना हमारा कर्तव्य है।

थोड़े समय के प्रधान मंत्रित्व काल में उनका कार्य ऐसे समय शुरू हुआ, जब देश की परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थी।

पं० नेहरू और उनकी लोकप्रियता के सम्बन्ध में यही कहा जाता रहा कि नेहरू का स्थान लेने वाला कोई दूसरा नहीं मिल सकता, नेहरूजी के बाद देश अराजकता की ओर जायगा। लेकिन शास्त्रीजी ने उन सभी चर्चाओं को विफल बना दिया और अपनी कार्यशीलता से सभी मतभेद दूर कर देश में एकता लाकर अपना गौरव पूर्ण स्थान बना लिया। उन्होंने जनता के हृदय की धड़कन अच्छी प्रकार सुनी थी। उसके अनुसार उन्होंने मजबूती से संकट का सामना किया।

शास्त्री जी ने सफलता प्राप्ति के बाद मित्र राष्ट्रों की भावना का आदर करते हुए सम्मानजनक समझौते का प्रयत्न किया। मेरी यह इच्छा नहीं थी कि वे ताशकंद जाँय। मैंने इस सम्बन्ध में खुले रूप में अपने विचार प्रकट किये थे।

शास्त्रीजी के भारतीय परम्परा के अनुसार पाकिस्तान से समझौता करने के लिये ताशकंद गये, किन्तु जिस प्रकार धर्मराज युधिष्ठिर पांच पांडवों के लिये केवल पाँच ग्राम मांगने गये थे और शेष सब राज्य पर से अपना अधिकार त्याग करने के लिये मान बैठे थे, उसी प्रकार शास्त्रीजी ने यह समझौता किया। समझौते में हम कुछ पीछे हटे हैं। शास्त्रीजी को ताशकंद में जो समझौते के समय कार्य करना पड़ा, उससे लगता है कि यह गुरुतर कार्य उनका प्राण लेने वाला है।

—माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर,
संचालक, राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ

उन्होंने नेहरूजी के बाद जिस सफलता के साथ देश को सम्भाला वह विशेष रूप से उनके महान व्यक्तित्व का परिचायक था। श्री शास्त्री का आरम्भ एक सामान्य नागरिक के रूप में हुआ और उनका अन्त उनके व्यक्तित्व के चर्मोत्कर्ष पर हुआ। श्री शास्त्री ने युद्ध और शान्ति दोनों के समय देश को महत्वपूर्ण नेतृत्व प्रदान किया। ताशकंद वार्ता की सफलता उनके शान्ति प्रेम का सबसे ताजा प्रमाण है।

—सिद्धराज ढड्ढा, वाराणसी

प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के अचानक निधन से मुझे बहुत धक्का लगा है, जो एक नाज़ुक शांति मिशन को लेकर देश से बाहर गये हुए थे और उसे प्रशंसनीय रूप में उन्होंने संपन्न किया। अपने संक्षिप्त शासन काल में उन्होंने देश की प्रतिष्ठा को बहुत बढ़ा दिया था।

—कामाख्या नारायण सिंह
राजा, रामगढ़

तारीख १० जनवरी को पटना से लखनऊ के लिए रात की ट्रेन से यात्रा पर था कि ट्रेन में ही मालूम हुआ कि हमारे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री का रात्रि में ताशकंद में हृदय गति बंद हो जाने से मृत्यु हो गई। इस हृदय विदारक समाचार से मैं स्तब्ध रह गया। किन्तु किया क्या जाय? मृत्यु पर तो किसी का वश नहीं है।

श्री लाल बहादुर शास्त्री का जीवन लोक सेवक के महान मूर्ति का जीवन था। साधारण स्तर से उठकर इमानदारी, निष्ठा, प्रेम, से मनुष्य कितना ऊपर उठ सकता है इसका मान शास्त्री जी ने प्रतिष्ठित कर दिया। विरोधी पार्श्वों के बीच भी प्रेमपूर्वक अपने मिशन को पूरा कर ले जाने का अद्वितीय गुण शास्त्री जी में था। वह विद्वान नहीं थे, पर विद्या से जो कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है वह सब उनमें था। वह सदैव जन साधारण से अभिन्न रहकर ही जनजीवन के नियामक थे। शास्त्री जी जैसे महान नेता को खोकर आज भारत विपन्न है। पर जिस कार्य को उन्होंने अपने अंतिम क्षण में साधा है, इससे सिद्ध होता है कि भगवान को उनके द्वारा यह महान कार्य करना था। भगवान शास्त्री जी की आत्मा को शांति औरउनके शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। यही मेरी कामना है।

—लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'
अध्यक्ष, बिहार विधान सभा

शांति की रक्षा करते करते शास्त्री ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। अब हमारा कर्तव्य है कि पाकिस्तान के साथ शांति पूर्वक रहने के जिस नवीन युग का आरम्भ उन्होंने किया था उसे स्थायी बनायें।

—एस० एम० जोशी,
अध्यक्ष, संयुक्त समाजवादी, पार्टी

देश पर यह बहुत बड़ा प्रहार है। देश पर छाये काले बादल जब शास्त्रीजी के अथक परिश्रम से हटने लगे तो नाव का केवट ही चल बसे।

—नारायण गनेश गोरे, सभापति, प्रजासमाजवादी दल

प्रधान मंत्रित्व के इस अल्प काल में शास्त्री से बड़े ही दुर्गम काल से गुजरे। लेकिन जिस तरह उन्होंने देश का नेतृत्व किया वह चिरस्मरणीय रहेगा।

—दीनदयाल उपाध्याय
महामन्त्री, भारतीय जनसंघ

ताशकन्द में शास्त्री जी द्वारा किये गये महान कार्य के बाद उनकी मृत्यु का समाचार सुनना बहुत ही दुःखद है। भारत और पाकिस्तान के विवादों को हल करने के लिये जो प्रयास वहाँ किये, उनसे सारे विश्व में तनाव में कमी होगी।

—ड्याहा भाई पटेल, संसदीयनेता, स्वतंत्र पार्टी

ताशकंद में उन्होंने जो कुछ किया वह उनकी सबसे बड़ी सफलता थी। हमें चाहिये कि उनके इस उद्देश्य को और आगे बढ़ायें।

—मीनू मसानी, महासचिव, स्वतंत्रपार्टी

हम और हमारे मित्र भी शास्त्री के निधन होने समाचार सुनकर स्तम्भित हो गये। इससे हम लोगों को बहुत धक्का लगा है यह बहुत ही दुःखद समाचार है।

— एस० एल० किर्लोस्कर, अध्यक्ष भारतीय उद्योग और वाणिज्य संघ,

शास्त्री जी के निधन से हमने एक महान व्यक्ति खो दिया।

—बाबू भाई चिनाय, भू. पू. अध्यक्ष भारतीय उद्योग और वाणिज्य संघ

ताशकन्द वार्ता के संदर्भ में उनका निधन भारत के ही करोड़ों लोगों द्वारा महसूस नहीं किया जायगा, बल्कि सारे संसार और मानव मात्र द्वारा भी उनकी क्षति का अनुभव किया जायगा।

—ई० एम० एस० नम्बूदरीपाद, महासचिव, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी

शांति का पुजारी मंजिल पर पहुंच तो गया, लेकिन लौट नहीं पाया।

—प्रकाश वीर शास्त्री, संसद सदस्य

श्री शास्त्री को सबसे अच्छी श्रद्धांजलि देश की धरती और सम्मान के रक्षार्थ उनकी दृढ़ नीति का पालन कर दी जा सकती है।

—नित्यनारायण बनर्जी, अध्यक्ष, हिन्दू महासभा

प्रधानमंत्री के पद पर उनके थोड़े से कार्यकाल में भारत ने व्यवहारिक ढंग से चलने का जो सबक सीखा है, उसे देसवासियों को सदैव याद रखना चाहिये। श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन के समाचार से सारे राष्ट्र का हृदय सन्न रह गया है।

ताशकंद जाते समय हमने बड़ी ही आशा के साथ उन्हें विदायी दी थी और सोचा था कि वापसी पर बड़े उल्लास के साथ उनका स्वागत करेंगे, लेकिन अफसोस हमारी आशा तो उन्होंने पूरी कर दी, मगर उल्लास हमसे छीन लिया। शायद

इसमें भी कोई दैवी संकेत होगा। सम्भव है कि यह बलिदान भगवान ने ताशकन्द समझौते को खास तौर से रेखांकित करने को लिया हो।

महात्मा गांधी के रक्त से नियति ने भारत में साम्प्रदायिकता की ज्वाला को शान्त किया था। सम्भव है शास्त्री जी के बलिदान से भारत और पाकिस्तान के बीच ज्वाला शान्त हो जाय। शास्त्री जी भारत और पाकिस्तान एकता की वेदी पर शहीद हुए। इस शहादत का हिन्दुस्तानियों और पाकिस्तानियों के हृदय पर प्रभाव पड़ेगा।

शास्त्री जी वीर और अनदिवग्न प्रकृति के मनुष्य थे। गुस्सा उन्हें नहीं आता था और वह मुसीबतों से भी नहीं घबराते थे। वे शान्त, कर्तव्यनिष्ठ और व्यवहारिक मनुष्य थे। जब पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया शास्त्री जी ने उसका मुँहतोड़ जबाब हथियारों से दिया। जब शांति की पुकार आयी, शास्त्री ने दोनों बाहें खोलकर उसका स्वागत किया। यही भारत-धर्म है।

—रामधारी सिंह दिनकर, नई दिल्ली

पिछले १८ महीनों की निर्णायक घटनाओं से भरपूर छोटी सी अवधि में भारत दो बार शोक के सागर में डूब गया है। और यह शोक जिसमें सारा देश डूब गया था—एक निजी आघात सा साबित हुआ है।

नयी दिल्ली से ताशकंद के लिए अपनी यात्रा पर जाने से पहले उन्होंने अपने आखिरी संदेश में हमें यह यकीन दिलाया कि "भारत ताशकंद सम्मेलन में सफलता और स्थायी शांति का दृढ़ संकल्प लेकर जा रहा है।" आने वाली पीढ़ियाँ इस शानदार छोटे से आदमी के इस काम का मूल्यांकन ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से करेंगी जो शांति के क्षेत्र में भी उसी तरह विजयी हुआ जैसे युद्ध में और गौरव और सफलता के शिखर पर पहुँचकर जिसकी मृत्यु हो गयी। इससे पता चलता है कि शांति की कैसी सच्ची लगन उनके दिल में थी।

शास्त्री जी को जितनी श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित की गयी हैं उनमें सबसे उपयुक्त स्व० जवाहर लाल नेहरू के ये शब्द हैं, "शास्त्री जी बिलकुल गांधीजी के साँचे में तुले हैं। सीधे साधे, विनम्र और शील स्वभाव के वह कभी दूसरे पर किसी तरह का दबाव नहीं डालते और अलग अलग दलों को हमारे मध्य मार्ग पर लाने के लिए उनसे अच्छा आदमी कोई दूसरा नहीं हो सकता।" इसलिए नेहरू ने अपने तमाम साथियों में शास्त्री जी को ही अपना उत्तराधिकारी चुना।

और शास्त्री जी ने साबित कर दिया कि यह फैसला कितनी समझदारी

का था। उस छोटे से अर्से में, जब वह प्रधानमंत्री रहे, उन्होंने न सिर्फ कांग्रेस में अलग-अलग विचारवाले दलों के बीच मेल कराया वल्कि इससे भी आगे जाकर देश की विभिन्न विचार धाराओं और पार्टियों के बीच भी एक अपूर्व राष्ट्रीय एकता कायम की।

जवाहर लाल नेहरू की पहली पुण्य तिथि पर उस बातचीत के दौरान उन्होंने यह भी बताया कि वह अपने दोस्त दार्शनिक और मार्ग दर्शक के बिना बहुत अकेला महसूस करते हैं। 'अब भी, कभी कभी लगता है कि वह यहीं हमारे बीच हैं।'

करोड़ों लोग बरसों तक लालबहादुर शास्त्री के बारे में यही महसूस करते रहेंगे कि वह अब भी हमारे बीच हैं।

और मुझे उनके साथ अपनी आखिरी मुलाकात की याद आती है। वह नई दिल्ली में बच्चों की मेरी फिल्म 'हमारा घर' के प्रीमीयर पर आनेवाले थे। और ठीक वक्त के १५ मिनट पहले आकर उन्होंने सबको पुलिसवालों को भी अचंभे में डाल दिया। जब वह कार से उतरे तो जो कुछ कहा वह अब तक मुझे याद है। उन्होंने बड़ी नर्मी से कहा— "माफ कीजिएगा—मैं वक्त से पहले चला आया।"

आज मैं यह कहना चाहता हूँ, "मगर आप वक्त से पहले चले क्यों गए।"

—ख्वाजा अहमद अब्बास, बम्बई

राष्ट्र पर यह बड़ी विपत्ति आयी है। शास्त्री जी ने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक देश सेवा की। वे ताशकन्द में पाकिस्तान के संघर्ष को शांति पूर्वक हल करने के पवित्र कार्य में लगे हुये थे। ईश्वर इस संकट की घड़ी में राष्ट्र को तथा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—एन० एच० भगवती
उपकुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

श्री शास्त्री के निधन से उत्तर प्रदेश का गर्व टूट गया। शास्त्री जी संस्कृत के विद्वान न होते हुये भी उनमें संस्कृत के प्रति निष्ठा थी। शास्त्री जी के निधनसे राष्ट्र की जो क्षति हुई है वह अपूरणीय है। वे हमारी राष्ट्रीय भावनाओं को समझते थे, उसका प्रतिनिधित्व करते थे, और दबावों से झुकने वाले नहीं थे। जिस चीज में उन्होंने हाथ दिया, उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त किया। इनका व्यक्तित्व कुसुम के समान मृदुल और वज्र की भांति कठोर था।

—सुरतिनारायण मणि त्रिपाठी
उपकुलपति, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

संकटकाल में श्री शास्त्री ने देश को मार्ग दिखाया। उन्होंने अपनी कर्मठता, योग्य नेतृत्व एवं विनम्रता से देश का मस्तक उन्नत किया। उनके निधन से देश को महान क्षति पहुँची है।

—एम० वी० माथुर, उपकुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय

प्रधान मंत्री श्री शास्त्री की अचानक एवं असामयिक मृत्यु से सारे राष्ट्र को एक जबरदस्त धक्का लगा है वह विचारों एवं व्यवहार में एक महान राजनीतिज्ञ थे।

—दरबारा सिंह, गृह मंत्री, पंजाब।

शास्त्री जी देश की जनता की भावनाओं के सच्चे प्रतिनिधि थे। शास्त्री जी की सेवायें इतिहास में अमर रहेंगी।

—कुम्भाराम आर्य, राजस्वमंत्री, राजस्थान

प्रधानमंत्री शास्त्री के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। राष्ट्रीय संकट के क्षणों में उनके उठ जाने की हम लोगों को कल्पना तक नहीं थी। शास्त्री जी ने बड़े अध्यवसायपूर्वक देश की अथक रूप से निस्वार्थ सेवा की। ईमानदारी संतुलित सूझ बूझ उनके चरित्र की विशेषतायें थी। पाकिस्तान से संघर्ष के चार महीनो में उन्होंने जिस राजपुरुषोचित नेतृत्व और शक्ति का परिचय दिया वह भारत के इतिहास में अब तो स्मरणीय स्थान रखेगा। भारत माँ के इस वरद्-पुत्र के उठ जाने से देश मुख्यतः उत्तर प्रदेश अनाथ हो गया

—चन्द्रभानुगुप्त, भू० पू० मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

प्रिय शास्त्री जी की दुःखद और अप्रत्याशित मृत्यु का समाचार सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। इससे मुझे हार्दिक क्लेश हुआ है। इस गम्भीर समय में देश उनके गुणों और शांति के प्रति प्रेम से वंचित हो गया। यह उनकी नगरी रामनगर तथा मेरी व्यक्तिगत क्षति है। भगवान विश्वनाथ से प्रार्थना है कि वे इस संकट का सामना करने के लिये शक्ति प्रदान करें।

—विभूति नारायण सिंह, काशी नरेश

शास्त्री जी का निधन राष्ट्र पर महान विपत्ति है। ईश्वर उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करे।

—एस० आर० दास, भू० पू० मुख्यन्यायधीश, सर्वोच्च न्यायालय

प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री ताशकन्द में इतिहास का सृजन करने के बाद स्वयं अमरलोक की यात्रा को प्रस्थान कर गये। इस आघात से शीघ्र ही सम्भलना किसी के लिए भी सम्भव नहीं है और इस वेदना का प्रभाव वर्षों तक बना रहेगा।

—सी० एम० अन्नादुराई, नेता, द्रविण मुनेत्र कड़गम

शास्त्री जी के निधन से भारत ने एक ऐसा महान शांति प्रिय व्यक्ति को खो दिया जो कि आगे चलकर भारत में ही नहीं विश्व में भी शान्ति स्थापित करता। नेहरू जी के निधन बाद शास्त्री जी ने देश का भार अपने कन्धों पर ले लिया था और जनता का भी उन्हें पर्याप्त स्नेह प्राप्त हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—पद्मपत सिंहानिया, प्रधान, जे० के० आरगनाइजेशन

श्री शास्त्री ने १८ महीने की अल्पकालिक अवधि में देशवासियों में एक नवीन विश्वासभाव उत्पन्न करके राष्ट्र को कठिनाई और नवीन कार्यों के प्रति खड़ाकर दिया था।

—सीताराम जयपुरिया
अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश टेक्सटाइल मिलमालिक संघ

स्व० शास्त्री ने हम भारतीयों के लिए एक ऐसा आदर्श छोड़ा है जिसका पालन करना हमारे देश के हित में है। उनके आदर्शों पर चलना ही श्रद्धाञ्जलि होगी।

—फादर बेवन, पटना

शास्त्रीजी जनसाधारण के नेता थे। वह अन्तिम समय तक गरीबों, असहायों और दलितों के कल्याण के लिये कार्य करते रहे।

—वी० वी० द्रविड़, प्रधान इंटक

श्रीशास्त्री के निधन से देश ने एक महान नेता खो दिया, जिसके व्यवहारिक ज्ञान और जिसकी राजनीतिज्ञता ने देश को एक नवीन राष्ट्रीय जागृति दी।

—एल० एम० सिंघवी
संसद सदस्य

ऐसी नाजुक घड़ी में जब कि देश को श्री शास्त्री के कुशल नेतृत्व की जरूरत थी तो वह चल बसे। उनकी अचानक मौत देश की भारी क्षति है। वह शक्ति के स्तम्भ थे। उन्होंने देश की इज्जत को आगे बढ़ाया।

—फखरुद्दीन, वित्तमन्त्री, असम

विश्वभारती आज निर्धन हो गयी है। यहाँ के कर्मचारी और छात्र छात्रायें अपने आचार्य देव की अमर आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं।

— कालिदास भट्टाचार्य, उपकुलपति, विश्वभारती

उनकी क्षति अपूरणीय है। हम उस राष्ट्र तथा उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—काजी लेहण्ढ दोरजी, अध्यक्ष, सिक्किम राष्ट्रीय कांग्रेस

शास्त्रीजी के निधन से देश ने एक दृढ़ प्रतिज्ञ खो दिया।

—बी० पी० मौर्य, संसद सदस्य

उनका निधन ऐसे समय हुआ जब देश को उनकी बहुत जरूरत थी। वे पण्डित नेहरू के योग्य उत्तराधिकारी थे। अब जो रिक्तता हुई है उसे पूरा करना कठिन है।

—रामकृष्ण हाजे, वित्तमंत्री, मैसूर

श्री शास्त्री की मृत्यु से राष्ट्र ने एक महान देशभक्त खो दिया। पिछले महीनों विपत्ति और परीक्षण की घड़ी में उनका कुशल नेतृत्व साहस पूर्ण था।

—प्रेमनाथ डोंगरा, जनसंघ प्रधान, जम्मू

श्री शास्त्री का ताशकन्द में सफल वार्ता करने के तुरन्त उपरान्त निधन बहुत ही दुःखद और स्तम्भित करने वाला समाचार है। प्रधानमंत्री के रूप में उनकी अल्पकालिक सेवा ऐतिहासिक रही।

—के० जी० श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव
अखिल भारतीय प्रतिरक्षा कर्मचारी संघ

जनता के आदमी के रूप में शास्त्री जी की स्मृति सदैव बनी रहेगी। हम इन राष्ट्रीय लक्ष्यों के लिये दृढ़ रहने का विश्वास दिलाते हैं जिनके लिये शास्त्री ने कार्य किया।

—सुधाराय, महामंत्री, संयुक्त ट्रेड यूनियन कांग्रेस

भारत ने एक योग्यतम पुत्र खो दिया। श्री शास्त्री अपने समय के महान व्यक्ति थे। वह युद्ध काल के ही नेता न होकर शांतिकाल के भी नेता थे। इनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है।

—इन्द्र सिंह, नगर प्रमुख-कानपुर

ताशकन्द समझौता श्री शास्त्री की सबसे बड़ी यादगार है।

—नूरुद्दीन अहमद, महापौर, दिल्ली

शास्त्री जी राष्ट्रीय एकता के बहुत बड़े स्रोत सिद्ध हो रहे थे।

—नाना जी देशमुख, सचिव, भारतीय जनसंघ

श्री शास्त्री भारत पाकिस्तान एकता की वेदी पद शहीद हुए। हमें इस एकता को बनाए रखने के लिये अपना अन्तिम प्रयत्न करना होगा।'

—गिरीश तिवारी, राज्यमन्त्री, बिहार

संस्कृत जगत पर उनके इतने उपकार है जिससे हम कभी उऋण नहीं हो सकते।

—मण्डन मिश्र महासचिव,
अखिल भारतीय, संस्कृत सम्मेलन

उन्होंने देश में जो गौरव स्थापित किया, उसकी रक्षा करना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

—सांवलदास गुप्त
संगठन सचिव, संयुक्त सोशलिस्टपार्टी

श्री शास्त्री स्वभाव से सरल तथा एक कर्मठ व्यक्ति थे। उन्होंने भारत की भावी पीढ़ी के लिये एक नयी परंपरा कायम कर दी है, जो सभी भारतीयों के लिए एक आदर्श है।

—देव शरण सिंह, अध्यक्ष, बिहार विधानपरिषद्

श्री शास्त्री ने एक नया इतिहास बनाया है, जिसका प्रत्येक पृष्ठ स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। श्री शास्त्री की मृत्यु शानदार ढंग से हुई जिसके लिये युग-युग तक प्रयत्न तथा साधन की जरूरत है।

—अब्दुल कयूम अंसारी, स्वस्थ्य मन्त्री, बिहार

श्री शास्त्री का देहावसान ऐसे अवसर पर हुआ जब कि उनकी गौरव-पताका लहरा रही थी। ताशकंद समझौते पर श्री शास्त्री जी के हस्ताक्षर शांति के हस्ताक्षर हैं। श्री शास्त्री हमारी सभ्यता और संस्कृति की समस्त उपलब्धियों के प्रतीक थे।

—हिरेनमुखर्जी, नेता, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी

आजादी के अठारह साल बाद एक साधारण नागरिक प्रधान मंत्री बना। श्री नेहरू ने लोकतंत्र की नींव डाली थी। लेकिन श्री शास्त्री ही पहले प्रधानमंत्री थे जिन्होंने न केवल अपनी पार्टी को बल्कि विरोधी पार्टियों को भी अपने विश्वास में लिया।

—सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी, नेता, प्रजा-समाजवादी दल

डेढ़ वर्ष पूर्व जवाहर लाल नेहरू के निधन के कारण राष्ट्र पर जो भारी संकट आया था उसे किसी तरह से सहकर अभी राष्ट्र सम्भल नहीं पाया था कि थोड़े ही

समय में ऐसी दूसरी विपत्ति के सामने आ गई। शास्त्री ने संकट के समय में नेतृत्व करके राष्ट्र की जो रक्षा की उसे देशवासी कभी भूल नहीं सकते। उनके निधन के बाद हम सबका यह कर्त्तव्य है कि वे राष्ट्र में जो एकता बना गये हैं, उसे हम किसी हालत में भंग न होने दें।

—ब्रजमोहन, नगर निगम, दिल्ली

श्री शास्त्री के अचानक निधन से मुझे गहरा सदमा पहुँचा है। नेहरू जी की मृत्यु के बाद श्री शास्त्री ने भविष्य के सम्बन्ध में देश में महान वश्वास का भाव उत्पन्न किया। उन्होंने अनेक संकटों में देश का कुशल नेतृत्व किया। श्री नेहरू के बाद वे ही राष्ट्रीय शक्ति के महान प्रतीक थे। मातृभूमि ने एक योग्य सपूत खो दिया।

—आर० के० मालवीय, श्रम उपमंत्री, भारत

राष्ट्र आज शान्ति के विशिष्ट व्यक्ति से वंचित हो गया। भारत के लिये यह गम्भीर आघात है।

—बी० सी० भगवती, केन्द्रीय संचार उपमंत्री

श्री शास्त्री की मृत्यु का समाचार विश्व के लिये दुखद और आकस्मिक है। थोड़े ही समय में उन्होने राष्ट्र में अपने को अमर बना लिया था। वे हमेशा महान नेता के रूप में स्मरण किये जायेंगे क्योंकि उन्होंने सर्वाधिक संकटपूर्ण स्थिति में देश का सही नेतृत्व किया है।

—अलीजहीर, न्यायमंत्री, उत्तर प्रदेश

भारत ने बहुत ही शीघ्र एक योग्य प्रधानमं ी खो दिया है जो राष्ट्र के लिये महान दुखद घटना है।

—नवल किशोर, नेता, कांग्रेस विधान मण्डल, लखनऊ

इस समय जब कि देश संकट की घड़ी से गुजर रहा था, श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन से देश को बड़ा जबरदस्त धक्का लगा है। यह महान दुख की बात है कि जिस समय शास्त्रीजी की देश को सबसे बड़ी आवश्यकता थी, उस समय वह हमारे बीच नहीं रहे। श्री शास्त्री के निधन से देश का एक ईमानदार कर्मठ तथा सरल व्यक्तित्व का महान नेता उठ गया।

—प्रभुनारायण सिंह, अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्द मजदूर पंचायत

श्री लालबहादुर शास्त्री का निधन केवल प्रयागवासियों के लिये ही नहीं सम्पूर्ण देश के लिये एक ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

—कन्हैया लाल मिश्र, महाधिवक्ता, उत्तर प्रदेश

ताशकन्द में भारत पाकिस्तान वार्ता की सफलता के एकदम बाद ही मृत्यु ने शास्त्री जी को बड़ी निष्ठुरता से छीन लिया।

—स्वामी रामतीर्थ, सर्वोदयी नेता

हम उत्तर प्रदेश के एंग्लोइण्डियनों को प्यारे प्रधान मंत्री के दुःखद निधन से बहुत धक्का लगा है। उनके साहसिक नेतृत्व और योग्य पथ-प्रदर्शन में देश ने अत्यधिक प्रगति की और वह भी उस समय जब देश के सामने अनेक समस्यायें और बाहरी तथा अन्दरूनी खतरे थे।

—ए० सी० ग्राइस, सदस्य, विधान सभा, उत्तरप्रदेश

श्री शास्त्री जी ऐसे व्यक्ति थे जिसने विश्व शांति और स्वतंत्रता की रक्षा के लिये अथक प्रयास किया। प्रायः लोग नम्रता और सरलता को आडम्बर कहते हैं, किन्तु शास्त्री जी वस्तुतः इन्हीं गुणों से निर्मित थे। हमारे युग की दो समस्याओं में स्वतंत्रता और शांति की रक्षा की। ये शास्त्री जी के विचारों और कार्यों पर छायी रहती थीं। स्वतंत्रता को खतरा होने पर उसकी रक्षा के लिये उनमें कोई भी खतरा मोल लेने का साहस था। सभी जनतंत्रों या संसदों के समान भारत में भी विरोधी दल कुछ मामलों में शास्त्री जी से असहमत थे और कुछ में सहमत। किन्तु इससे उनके प्रति आदर की हमारी भावना में कोई कमी नहीं आई।

—नाथपाई, संसद सदस्य, प्रजा समाजवादी पार्टी

श्री लालबहादुर शास्त्री के कथन और कार्यों से उस सरलता, निष्ठा और नम्रता का परिचय मिलता था जो गान्धीवादी परम्परा में पले और प्रशिक्षित कांग्रेसी कार्यकर्ता की वास्तविक विशेषताएं हैं। सामान्य लोगों के बीच से उठकर उनका इस पद पर पहुँचने का अर्थ यह था कि वे भारत के ऐसे सद्गुण सम्पन्न साधारण श्रेणी के लोगों के प्रतीक थे, जो सज्जनता को ही गौरव समझते थे, जो साहस के साथ कष्टों को सहन करते थे तथा जो इस बात के लिए प्रयत्नशील रहते थे कि जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र किसी प्रकार होती रहे। वे एक सामान्य अध्यापक के घर पैदा हुए थे। यही इस बात का प्रमाण है कि उन्हें इस बात की अच्छी तरह जानकारी थी कि सुविधा और सम्पत्ति से हीन तथा प्रताड़ित जनसमुदाय की भावनाएँ

जीवन के सम्बंध में किस प्रकार की होती हैं। मितव्ययी जीवन व्यतीत करने की सलाह देकर, स्वयं छोटे मकान में रहने का निश्चय कर और अनुकूल एवं प्रतिकूल सभी प्रकार की विचारधारा वालों से सहयोग की कामना कर उन्होंने दिखा दिया है कि वे देश की बुनियादी समस्याओं को कैसे सबके साथ मिलकर हल करना चाहते थे। इस प्रकार लालबहादुर शास्त्री का जो स्वरूप हमारे सामने उपस्थित है वह यह कि जनता के बीच का एक आदमी प्रधान मंत्री का बड़ा पद सम्हालने के लिये बुलाया गया था। वे देश के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में व्याप्त वियुक्तियों अथवा बिलगाव की प्रवृत्तियों को दूर करने में समर्थ हुए ताकि शिक्षित वर्ग देश सेवा सम्बन्धी उत्तरदायित्व वहन करने के लिये तैयार हो सके।

—मुल्कराज आनन्द, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

शास्त्री जी, जैसा कि हम उन्हें स्नेह के साथ कहा करते थे शिष्टता, सज्जनता, स्वभाव की मधुरता तथा ईमानदारी के एक प्रकार से प्रतिरूप ही थे। चालीस पैंतालीस वर्ष की अनवरत निस्वार्थ और आत्मत्याग पूर्ण सेवा के बाद वे उस सर्वोच्च पद पर पहुँचे जिस पर इस देश का कोई भी सच्चा जनसेवी पहुँच सकता है। साधारण कांग्रेस कार्यकर्ता से बढ़कर वे इस प्रतिष्ठा के पद पर पहुँचे और अपने उदाहरण से उन्होंने सिद्ध कर दिया था कि मातृभूमि की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पण कर देने वाले को किसी पद प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता, उसे सहज ही यह सब प्राप्त हो जाता है। उनके व्यक्तित्व और उनकी मान्यताओं से आकृष्ट होकर ही देश ने उन्हें यह पद प्रदान किया था।

—भुवनेश्वरप्रसाद सिनहा, भू० पू० मुख्यन्यायाधीश,
सर्वोच्च न्यायालय, दिल्ली

स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नेहरु के बाद भारत जैसे विशाल राष्ट्र का प्रधान मन्त्रित्व पद सम्हालने वाले प्रथम भारतीय लालबहादुर शास्त्री ही थे जिनके त्याग को चुनौती नहीं दी जा सकती। शास्त्री जी के सरल और सीधे सादे हृदय में बड़ी से बड़ी कठिनाई को व्यर्थ कर देने की कितनी क्षमता थी, यह आंका नहीं जा सकता। प्रधान मंत्री का पद सम्हालते ही मार्ग में हिमालय के समान बाधायें गत्यावरोध के लिये खड़ी हो गई थीं किन्तु उन्होंने जितनी आसानी से उन्हें दूर किया वह उनके ही जैसे व्यक्तित्व के लिये सम्भव था। शास्त्री जी की मधुर वाणी में जितनी शक्ति थी, यह समस्याओं के समाधान के अवसर पर ज्ञात होती थी।

—जगतनारायण दूबे, अध्यक्ष, जिला कांग्रेस कमेटी, वाराणसी

लालबहादुर जी प्राचीन भारतीय उक्ति 'सादा जीवन उच्च विचार' के मूर्तिमान स्वरूप थे। जीवन के प्रारम्भिक काल में ही वे मातृभूमि की सेवा में लग गये थे और अपना जीवन उन्होंने सेवा कार्य के प्रति उत्सर्ग कर दिया था। अनुशासित सैनिक के रूप में उन्होंने गाँधी जी और पंडित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में भारतीय स्वातन्त्र संग्राम में भाग लिया था तथा देश की स्वतंत्रता के पश्चात् उत्तरप्रदेश और केंद्र दोनों में उत्तरदायित्व के उच्चपदों पर आसीन होकर सार्वजनिक जीवन के उच्चतर मूल्यों की रक्षा की थी।

उनकी विनम्रता, उनके चरित्र की उज्वलता, उनकी राजनीतिक सूझबूझ, सेवा के प्रति उनकी लगन, ऐसे गुण थे जो हमें स्वर्गीय डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद की याद दिलाते हैं तथा जिन्होंने उन्हें कांग्रेस पार्टी में ही नहीं अन्य दलों के लोगों का भी प्रिय बना दिया था। अतः नेहरू जी के निधन के बाद उनका प्रधानमंत्री चुना जाना एकदम स्वाभाविक था। जवाहरलाल जी की देशी विदेशी नीतियों को अग्रसर करने की जिम्मेदारी अब उन पर आ पड़ी थी और पूरी लगन, निष्ठा, और सफलता से उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया।

—जीवराज मेहता, उच्चायुक्त, ब्रिटेन

'रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्री'

की भाँति राष्ट्र पर घोर वज्रपात हुआ, जनमानस मर्माहत मूक, स्तब्ध है। श्री शास्त्री जी के निधन से जो अपूरणीय क्षति हुई उसकी पूर्ति अत्यंत कठिन ही नहीं असम्भव है। उन्होंने अपने १८ मास के कार्यकाल में विश्व विचारकों के लिये जो निश्चय प्रदान किया, उस रूप से भारत राष्ट्र को जो दिशा दी, उस रूप में यह कार्य विगत १८ वर्षों की अवधि में नहीं हुआ और न भविष्य में शीघ्र सम्भव है। शास्त्री एक कुशल नेता ही नहीं अपितु वे एक विचारशील मनस्वी, कर्मनिष्ठव्रती, उदारचेता एवं दृढ़व्रती थे। भारतीय संस्कृत के मूल सत्य और न्याय की ध्वजा के समक्ष उन्होंने विश्व को तदनुरूप होने का सन्देश दिया। श्री शास्त्री जी वास्तव में भारत देश के नेता, राष्ट्रवादियों के प्रतिनिधि तथा हमारी संस्कृति के साकार प्रतिरूप थे। कारण वे मिट्टी में जनमें, उसी में बड़े हुये और जीवन पर्यन्त उसी का सानिध्य सुख भोगते रहे।

यही कारण है कि श्री शास्त्री जी के नेतृत्व में राष्ट्र का शताब्दियों से सुप्त ओज और कुंठित शौर्य जागृत हुआ और यह सिद्ध कर दिया कि हम शिव तथा रुद्र दोनों के कृपा पात्र हैं। 'रवि प्रतिबिम्बि उदय लघु लागा' गोस्वामी तुलसीदास की यही श्रद्धांजलि शास्त्री जी के महान व्यक्तित्व की व्याख्या है।

—प्रभात शास्त्री, एलाहाबाद

लालबहादुर शास्त्री की असामयिक मृत्यु ने विश्व को झकझोर दिया है। वे गांधी और नेहरू की परम्परा के एक महान व्यक्ति थे, इसी कारण विश्व ने आज महसूस किया है कि सचमुच आज अमन का मसीहा यहां से चला गया है। उनका सारा जीवन देव पुरुष की भांति रहा है। बहुत दिनों तक संसार उन्हें शांति उपासक के रूप में स्मरण करेगा। वे हमारे कुशल प्रशासक तथा सफल प्रधान मंत्री थे। उनके द्वारा किये गये कई कार्य इतिहास में स्वर्णाच्छरों में लिखे जायेंगे। नाटाकद, चट्टान की तरह सख्त तथा सागर के समान गहरा उनका व्यक्तित्व था जिसे लोग आदर के साथ लालबहादुर कहते रहे हैं। सच वे भारत के बहादुर लाल थे।

—रामनाथ, संवाददाता, आलइंडिया रेडियो, वाराणसी

अपनी सादगी तथा निस्वार्थ देश सेवा से शास्त्री जी ने जनता का ह्रदय जीत लिया था। श्री शास्त्री जी कि विनम्रता, कुशलता तथा दृढ़ता का देश में बड़ा मान था। उन्होंने ताशकन्द में सात दिन तक शांति के लिए जो अथक यत्न किये उन्हीं का फल है कि ताशकन्द समझौता सम्पन्न हो सका। उनके शान्ति प्रयत्नों के परिणाम-स्वरूप विश्व भर की निगाहें उन पर लगी थी। ताशकन्द समझौते से भारतीय प्रायद्वीप में स्थायी शान्ति और सौहाद्र उत्पन्न होगा। श्री शास्त्री इतिहास में शांति दूत के रूप में याद किये जायेंगे। उन्होंने देश को जो नेतृत्व प्रदान किया, उसके लिये देश उनका ऋणी रहेगा।

—चिन्तामणि देशमुख, उपकुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय

धन्य है वह कोख जिसने जन्म दिया श्री लालबहादुर शास्त्री को। यद्यपि वे गरीब घराने मे पैदा हुए थे,' पर थे बड़े उदार। वे दीन दुखियों के दुखः दर्द को भली भांति जानते समझते थे और सदैव उसके निवारण के लिए तत्पर रहते थे। सहिष्णुता, शीलता, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता व सादगी शास्त्री जी की प्रमुख विशेषताएँ थीं। वे जन मानव के प्रेरणा-दायक थे। वास्तव में 'उन्हें "दीनबन्धु लालबहादुर" कहा जाना चाहिए।

सत्य अहिंसा और शांति के पुजारी बापू के पद चिन्हों पर चल कर शास्त्री जी ने सिद्ध कर दिया कि भारत अपनी आजादी तथा मर्यादा की रक्षा करने की पूर्ण क्षमता रखता है तथा शांति की खोज में विदेश भी जा सकता है। ताशकन्द समझौता ने शास्त्री जी को अमर कर दिया। पार्थव्य शरीर पंच तत्व में विलीन होकर भी उनकी आत्मा हमारे बीच रह कर हमे तथा आगे की पीढ़ियों का मार्गदर्शन करती रहेगी। गृहविहीन प्रधान मंत्री ने अपने अठारह मास के अल्पकालीन कार्य काल में ही समस्त विश्व के लोगों के दिलों मे घर बना दिया।

—राजाराम श्रीवास्तवा, प्रतिनिधि, 'प्रेस ट्रस्ट', वाराणसी

शास्त्री जी के निधन से हमने अपना एक सच्चा नेता खो दिया है। मृत्यु नटी ने आकस्मिक रूप से उन-पर प्रहार किया है। जिस नीति पर शास्त्री जी ने देश को आगे बढ़ाने की योजनायें चलायीं वह जब तक दुनिया के जनतंत्र का इतिहास रहेगा तब तक याद की जायेंगी। उनके जैसे अपने आत्मीय के खो जाने पर मैं कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं हूँ।

रघुनाथ सिंह, अध्यक्ष, जहाजरानी बोर्ड, भारत।

———

शोकाञ्जलि

श्री शास्त्री जी ऐसे शालीन व्यक्ति को श्रद्धांजलि देने और उनकी स्मृति को जीवन्त रखने का सर्वोच्चतम ढंग यही होगा कि उन फैसलों पर अमल किया जाये जिन्हें उन्होंने अन्तिम समय में किया।

—न्यूयार्क टाइम्स, अमेरिका

संक्षिप्त काल में उन्होंने भारतीयों का हृदय जीत लिया। उसका विश्वास प्राप्त कर लिया।

वाशिंगटन पोस्ट, अमेरिका

शास्त्री जी का सर्वोत्तम स्मरण ताशकन्द घोषणा-पत्र होगा।

इजवेस्तिया, रूस

ताशकन्द के हीरो के निधन पर भारत विलाप कर रहा है।

—गार्जियन, ब्रिटेन

शास्त्री जी को लोग कहते थे, तुमने हमारा हृदय जीत लिया।

—डेलीमेल, ब्रिटेन

शास्त्री जी हमारे समय के पंडुक (शान्तिप्रिय) थे बाज़ (हिंसा का प्रतीक) नहीं। उनमें अपार दृढ़ता थी।

—वाशिंगटन इवनिंगस्टार, अमेरिका

अपने अठारह महीने के कार्यकाल में शास्त्री जी अपने पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री श्री नेहरू के आदर्शों के अनुयायी रहे। नाटा कद, सहनशील और दीन स्वभाव के रहते शास्त्री जी भारत के सर्वाधिक प्रभावशाली राजनीतिज्ञों में थे।

—जेनरल एन्जाइग़र, बोन, पश्चिमी जर्मनी

भारत के प्रधान मंत्री शास्त्री जी की मृत्यु से सारा संसार क्षुब्ध है। प्रश्न केवल यही नहीं है कि कौन उनका उत्तराधिकार वहन करे, वरन् चीन और पाकिस्तान से भारत का सम्बन्ध, देश की खाद्य समस्या और कश्मीर जैसे उलझे हुए प्रश्न हैं।

—डीवेल्ट, हैम्बर्ग

भारतीय जनता जिसका स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रों के बीच सुरक्षा और समानता की नई दुनिया बनाने में महान योगदान रहा है, इस आघात को सहने के लिए अकेली नहीं है। शांति के ज्वलंत संघर्ष में शास्त्री जी एक नायक के रूप में उभड़े और

साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों के विरुद्ध उनकी विजय हुई। इस सन्दर्भ में उनका नाम गांधी और नेहरू के बाद आता है। शांति की अभिलाषा जो विविध राष्ट्रों में जिसमें भारत भी शामिल है, पनपती है और उन्हें प्रेरित करती है कि नये अग्रदूतों और नेताओं को उत्पन्न करें। मानव समुदाय ने शास्त्री जी और अयूब खाँ के शांति प्रयासों का जिनसे उन्होंने दो राष्ट्रों के बीच सौहार्द्र और शांतिपूर्ण सम्बन्धों को कायम करने का काम किया है, सशक्त, समर्थन दिया है। दोनों राष्ट्र जो एशिया महाद्वीप के महत्वपूर्ण भाग हैं अनुभव करते हैं कि भारतीय जनता अपने नेता पर शांति का गम्भीर उत्तरदायित्व सौंपने के योग्य है, उस नेता पर जो शांति का निर्माण करने में उत्साही है और इसकी आधार शिला उसने ताशकन्द सम्मेलन में रखी। सभी उस भारतीय जननायक के सम्मान में नत मस्तक होंगे जिसके कार्यों ने भारत और सारे मानव समुदाय को प्रशंसनाय दिशा दी है।

—अल अहराम, काहिरा

नेहरू जी के बाद शास्त्री जी द्वारा शान्तिपूर्वक जो भारत की शासन-व्यवस्था संभाली गई थी, उसका अधिकांश श्रेय स्वयं नेहरू जी को है। फिर भी यदि शास्त्री जी में नेहरू जी की मृत्यु के कारण उपस्थित चुनौती का मुकाबला करने की पूरी क्षमता न होती तो निर्माणशील विशाल राष्ट्र विद्यमान तनावों के कारण छिन्न भिन्न हो जाता। नेहरू जी की मृत्यु हो जाने से पहले, अनेक लोग सोचते थे कि उनके शासन सम्बन्धी विचारों में पश्चिम की बहुत अधिक पुट होने के कारण उनके बाद वे कायम नहीं रह सकेंगे। किन्तु इस सम्बन्ध में कोई सन्देह करना स्वयं भारतीयों के साथ न्यायोचित नहीं था। शास्त्री जी अनेक प्रकार से नेहरू की अपेक्षा अधिक भारतीय प्रतीत होते थे, किन्तु वह नेहरू जी की तुलना में कम लोकतन्त्री नहीं थे। और कुछ बातों में, भारतवासियों ने अपने देश को उस मार्ग पर आरूढ़ रखने में उनकी सहायता की जिसे नेहरू ने प्रशस्त किया था।

यह निश्चय ही ऐसा समय है जब प्रत्येक देश के स्वतंत्र लोग स्वतन्त्रता-प्रिय भारतीयों के प्रति सहानुभूति और शुभकामनायें व्यक्त करने के साथ-साथ उनके लिये प्रार्थनायें भी करेंगे।

— क्रिश्चियन साइन्स मानिटर, अमेरिका

शास्त्री जी का कद ५ फुट २ इंच और वजन केवल ११० पौंड था, फिर भी वह अपने जैसे शरीर वाले व्यक्ति की तरह झगड़ालू नहीं थे। वह तर्क द्वारा दूसरों को समझाते थे और समझौता पसन्द थे। उनका जन्म एक गांव में मिट्टी

की झोपड़ी में हुआ था। उन्हें मालूम था कि उनके देश के लोगों को किन मुसीबतों में से गुजरना पड़ रहा है। वह विनम्रता में और देखने में श्री मोहन दास करमचन्द गांधी जैसे थे। वह गांधी जी के शिष्य थे और उनकी तरह उपनिवेशवाद का अहिंसात्मक प्रतिरोध करने के लिये ब्रिटिश जेलों में गये थे।

—पोर्टलैण्ड ओरेगोनियन, अमेरिका

यों उनकी अचानक मृत्यु से भारत के लोगों को शोक होना स्वाभाविक है, किन्तु यह भी उचित है कि उनके लिये शास्त्री जी की अन्तिम विरासत शान्ति है।

फरवरी में वाशिंगटन में श्री शास्त्री जी से श्री जौनसन का वार्तालाप होने वाला था। उन्होंने निम्नलिखित विचार व्यक्त करके भारत की दुःखद क्षति के सम्बन्ध में अधिकांश अमेरिकियों की भावनायें व्यक्त की हैं।

'उनके बिना संसार गौरवहीन सा लगने लगा है।'

—डेनवर पोस्ट, अमेरिका

भारत के प्रधानमंत्री श्री शास्त्री के आकस्मिक निधन से उस तेजस्वी नेतृत्व का दुखद अन्त हो गया, जिसने अभी खिलना प्रारम्भ ही किया था। यह कहना अनुचित न होगा कि जिन समस्याओं से नेहरू जी चिन्तित थे, उन्हें हल करने में किसी व्यक्ति को पूर्ण सफलता प्राप्त होने की आशा नहीं थी। शास्त्री जी को समस्याओं और सन्देहों वाली स्थिति से उलझना पड़ा। भारत की आर्थिक स्थिति बिगड़ रही थी, आन्तरिक झगड़े थे, साम्यवादी चीन से दुश्मनी थी और सबसे बढ़कर पाकिस्तान से एक जोरदार छोटा युद्ध हुआ।

लेकिन, शास्त्री जी ने भारत को एक सूत्र में आबद्ध रखा और यद्यपि ताशकंद में अपने जीवन के अन्तिम दिनों में सोवियत प्रधानमंत्री के निष्पक्षता पूर्ण तत्वावधान में होने वाली वार्ता में भारत पाकिस्तान का वैमनस्य पूरी तरह दूर नहीं हो सका तथा कश्मीर की बुनियादी समस्या का हल नहीं हुआ, परन्तु एक समझौता अवश्य हुआ। श्री शास्त्री और प्रेसिडेण्ट अयूब ने अपनी कठिनाइयों का शान्ति पूर्ण उपायों द्वारा समाधान करने और पुरानी सीमाओं पर अपनी सेनायें लौटा लेने के लिये वचन दिये।

इस कार्य के लिए जनता की सेवा में अपना समस्त जीवन व्यतीत करने के लिये भारतीयों को अपने स्व० प्रधानमंत्री का अत्यन्त कृतज्ञ होना चाहिये।

—न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून, अमेरिका

जैसा कि प्रेसिडेण्ट जानसन ने कहा है, भारत के प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री की असामयिक मृत्यु शान्ति तथा प्रगति के सम्बन्ध में मानव जाति की आकांक्षाओं को एक आघात है।

शास्त्री जी शान्तिप्रिय व्यक्ति थे, वह गांधी जी के निष्ठावान अनुयायी थे। पिछले १७ वर्षों में नेहरू जी की ओर से आन्तरिक विवादों को हल करने का प्रयत्न करते हुए उन्होंने यह सिद्ध कर दिया था कि उनमें समझौता कराने और मतभेदों को सुलह-सफाई से निबटाने की महान योग्यता है। यह आशा की जाती थी कि शान्ति कायम करने वाले नेता के रूप में उनकी योग्यताओं का संसार को लाभ मिल सकेगा, पर ऐसा न हो सका। वह अधिकतर उन समस्याओं में उलझे रहे जो उन्हें नेहरू जी से विरासत में मिली थी। ये समस्यायें थीं भारत की गिरती हुई आर्थिक व्यवस्था, कश्मीर के मामले में पाकिस्तान से झगड़ा, साम्यवादी चीन से संघर्ष और तरह तरह के आन्तरिक मतभेद।

फिर भी, शास्त्री जी को जो भी थोड़ा समय मिला, उसमें उन्होंने पर्याप्त प्रगति की।

—शिकागो सन, अमेरिका

भारत और पाकिस्तान के मध्य निरन्तर घनिष्ट होती हुई वह मैत्री, जिसकी शुरुआत ताशकंद-घोषणा से हुई है, भारत के स्व० प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री की सर्वोत्तम यादगार होगी।

—सेण्ट लुइ पोस्ट डिस्पैच, अमेरिका

जब कोई प्रख्यात व्यक्ति चोटी पर पहुँच कर नीचे गिर पड़ता है तो वह हमेशा दोहरी दुःखद घटना समझी जाती है। श्री नेहरू जैसे साधु स्वभाव के व्यक्ति के उत्तराधिकारी बनने पर, भारत के प्रधानमंत्री के रूप में श्री शास्त्री की स्थिति प्रारम्भ में निस्सन्देह डांवाडोल थी। लेकिन १६ महीनों में ही उनकी स्थिति विवादहीन नेता की हो गई। उनका सम्मान और अधिकार बढ़ता गया और वह लोगों का अधिकाधिक विश्वास प्राप्त करते गये।

यह आशा करना शायद आवश्यकता से अधिक होगा, पर सम्भव है कि श्री शास्त्री की मृत्यु से पुराने सन्देहों और शत्रुता में कुछ कमी आ जाय और समझौते के उस रास्ते पर और अधिक बढ़ा जाये, जिसमें श्री शास्त्री इतने प्रवीण थे।

—वाशिंगटन डेली न्यूज, अमेरिका

अपने जीवन की सर्वोच्च कूटनीतिक (Diplomatic) उपलब्धि के कुछ ही घण्टों बाद श्री लालबहादुर शास्त्री शांति के संघर्ष का शिकार हो गए। वे एक ऐसे संघर्ष के शिकार हुए जिसमें उन्होंने स्वयं को अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के बढ़ते हुए तनाव के बावजूद व्यस्त रखा और अंत में शहीद हो गए। यद्यपि वे आज हमारे बीच नहीं रहे किंतु ताशकन्द घोषणा उनकी उपलब्धि की विजय-स्तम्भ के रूप में सदैव के लिए अमर रहेगी। जैसा कि श्री नंदा ने अप॰ संदेश में कहा है, इस महापुरुष की स्मृति के लिए ताशकंद समझौता के पूर्णरूपेण कार्यान्वयन से बढ़कर कोई भी सम्मान नहीं हो सकता। ताशकंद समझौता की घोषणा के चंद घंटों बाद जिस वेदना और दर्द के साथ सम्पूर्ण राष्ट्र ने शास्त्री जी की दुःखद मृत्यु का समाचार सुना है, उसका वर्णन सम्भव नहीं।

१८ महीनों के अल्प समय में, जिसके प्रारम्भिक चरण में सिर्फ 'नेहरू के बाद कौन' का प्रश्न सभी की जबान पर था, श्री लालबहादुर शास्त्री ने अपने सरल व्यक्तित्व और असाधारण कुशलता से सबको स्तब्ध कर दिया। प्रायः सरलता और ईमानदारी महापुरुषों के गुण माने जाते हैं किंतु इन तत्वों का समावेश जिस गहराई से शास्त्री जी के व्यक्तित्व में मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कच्छ रण का विवाद, चीन की लगातार छेड़खानी व शरारत एवं पाकिस्तान से झगड़ा, उनकी चतुराई और चरित्र के इम्तहान के रूप में आए जिसमें उन्होंने अपने को जिस प्रकार योग्य साबित किया उससे उनके आलोचकों को चुप हो जाना पड़ा। श्री शास्त्री के अदम्य साहस और कठोर श्रम ने अपने देशवासियों का हृदय जीत लिया और वे उन्हें अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखने लगे।

'नेहरू के बाद कौन ?' का प्रश्न थोड़े ही दिनों में व्यर्थ साबित हुआ और यह स्पष्ट हो गया कि श्री शास्त्री के रूप में भारत को अपना एक ऐसा प्रतिनिधि प्राप्त हो गया जिसकी बुद्धि और नेतृत्व का ढंग पूर्णतया उसका अपना है।

उनके कार्य करने का ढङ्ग उस अहंवादी व्यक्ति जैसा नहीं था जो सिर्फ स्वनिर्मित प्रतीकों पर अमल करता है। जैसा की श्री कोसिजिन ने कहा है—वह 'बड़े ही निपुण' व्यक्ति थे। वे विश्वसनीय, सरल, कुशल, सहनशील, सोच-समझकर और औरों की राय का सम्मान करने वाले महापुरुष थे। उनके व्यक्तित्व में सहज मौलिक सरलता थी। उनके इन गुणों से निश्चय ही प्रारम्भ में लोगों में भ्रम फैला था कि वे 'अनिश्चय के शिकार' हैं और कोई भी तात्कालिक निर्णय लेने में असमर्थ हैं। उनके स्वभाव की निश्छलता, सभी लोगों के दृष्टिकोण जानने की उनकी उत्सुकता और उनका साधारण स्वभाव प्रायः लोगों में भ्रम उत्पन्न कर देते थे। किन्तु

दुर्भाग्य कि जब धीरे धीरे पूरा राष्ट्र साधारण आवरण में लिपटी असाधारण आत्मा के इस महापुरुष को यथार्थरूप से समझने लगा था, उनका दुखद अन्त हो गया।

मुख्यतया ताशकंद वार्ता के पश्चात् राष्ट्र को उनकी सेवाओं की अत्यधिक आवश्यकता थी। उनकी मृत्यु से इस राष्ट्र के करोड़ों लोगों को व्यक्तिगत नुकसान हुआ है। अपनी मृत्य के कुछ क्षणों पूर्व श्री शास्त्री ने 'शांति-संदेश' में कहा था—'भारत अपनी पूर्णशक्ति से शांति के लिए युद्ध करेगा जैसा कि उसने कुछ दिनों पूर्व संपूर्ण शक्ति से देश की सुरक्षा के लिए किया भी है।'

भारत और संसार के भविष्य निर्माण के लिए श्री शास्त्री की उपलब्धियाँ इतनी प्रभावकारी और उनके प्रयास इतने प्रभावोत्पादक हैं कि उनके उत्तराधिकारियों के समक्ष सहज ही एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। निश्चय ही यह महान विरासत है जो वे हमारे लिए छोड़ गए हैं। यद्यपि उनका कार्य अभी पूर्ण नहीं हुआ, लेकिन उसके लिए उन्होंने अथक श्रम द्वारा मजबूत नींव डाली है जिस पर उनके उत्तराधिकारियों को देश के भविष्य का निर्माण करना है।

—दि टाइम्स आफ इण्डिया, नई दिल्ली

श्री लालबहादुर शास्त्री के व्यक्तित्व में न तो किसी प्रकार की असाधारण चमक-दमक थी, न कोई छल-कपट। साधारण योग्यता और गुणों ने उन्हें असाधारण प्रसिद्धि प्रदान की। उनमें शंकारहित आत्मविश्वास की गहराई थी। वे दृढ़ संकल्पशील, चतुर और सहनशील थे। स्वभावतः वे संकोची थे किन्तु अपना दृष्टिकोण विकसित करने और स्वनिर्णय तक पहुँचने की उनमें अपरमित क्षमता थी। वे विचार पूर्वक कार्य करने वाले व्यक्ति थे किन्तु वे अपनी इच्छाओं को बलात् औरों पर कभी नहीं थोपते थे। वे किसी कार्य को बिना उसका विज्ञापन किए चुपचाप मनोयोग पूर्वक संपादित करने के हिमायती थे। उनके हृदय में अपने देशवासियों के लिए अपरिमित स्नेह और राष्ट्रभक्ति थी।

श्री शास्त्री कांग्रेस के राष्ट्रीय नेताओं की उस पीढ़ी से सम्बन्धित थे जो गांधी-नेहरू की छत्रछाया में पल्लवित हुई थी। इसलिए करोड़ों गरीब लोगों जिन्होंने भारतीय गणराज्य का निर्माण किया के विचारों, उनके जीवन के तरीकों, उनके साहस उनकी अशिक्षा और उनकी बौद्धिक-कुशलता इत्यादि का शास्त्री जी को बड़ा करीब से ज्ञान था। उन्हें देश के अन्य महापुरुषों का अमूल्य सान्निध्य और स्नेह भी मिला था। इस प्रकार वे नेतृत्व के लिए अधकचरे या नौसिखुए नहीं थे। वे हजारों करोड़ों से उनकी भाषा में वैसे ही बात कर सकते थे जैसे उन्हीं में से वे भी एक हैं और उनकी कठिनाइयों और मजबूरियों का शास्त्री जी को एहसास था। कारण

यह था कि उन्हें अपने समकालिक अन्य कांग्रेसी नेताओं जैसी प्रभावकारी पाश्चात्य शिक्षा नहीं मिली थी, न ही उनमें विशाल जनसमूह को धाराप्रवाह व्याख्यान द्वारा मोह लेने की क्षमता थी और न ही उन्हें करोड़ों लोगों का संघर्ष करते समय नायकत्व करने का अवसर प्राप्त हुआ था। बहुत से लोगों को सर्वोच्च जिम्मेदारी निभा पाने की उनकी क्षमता में संदेह भी था। उनके हाथों सत्ता प्राप्ति का ढंग भी अत्यन्त सीधा सादा और सरल था। इसके लिये न तो किसी प्रकार की चुनाव की तूफानी तोड़ हुई और न उनके लिए करोड़ों अरबों को उनकी क्षमता पर विश्वास के लिए नारेबाजी थी जिसने उन्हें भारत महाराष्ट्र का प्रधान मंत्री बनाया। यह उनके बराबर के लोगों द्वारा धीमी गति से प्राप्त किया गया एक मत था जो उनकी किसी असाधारण क्षमता या पूर्व-प्रतिष्ठा पर आधारित नहीं था; तमाम विशिष्ट विचार और दृष्टिकोण वाले लोगों के बीच वे बिलकुल सीधे सादे और सरल निकले, कोलाहल पूर्ण महत्वाकांक्षाओं वाले वातावरण (Culture) के मध्य वे बिना किसी प्रकार की आपत्तिजनक इच्छा वाले व्यक्ति थे। जिस स्थान पर बहुत से लोग विवाद-ग्रस्त उद्देश्य लेकर कार्य करने के इच्छुक थे, उनकी चुपचाप कार्य करने की प्रणाली ने लोगों की आपसी प्रतिद्वंदिता समाप्त कर दिया। जिन्हें उनकी आंतरिक क्षमता का ज्ञान नहीं था, उनके साधारण व्यक्तित्व को ही उन्होंने देखा और उन्हें आश्चर्य हुआ कि क्या यही वह तत्व था जिससे नेहरू के उत्तराधिकारी का निर्माण हुआ है।

श्री लालबहादुर शास्त्री को दुनिया के समक्ष यह प्रमाणित करने में अधिक समय नहीं लगा कि उनकी विनम्रता, दृढ़ता किसी कमजोरी का चिन्ह नहीं है। बल्कि इसकी पृष्ठभूमि में हमारी प्राचीन संस्कृति की उदारता और महानता है। कांग्रेस के संसदीय दल और उनके साथियों को उनके प्रधान मंत्री पद को संभालने के शीघ्र ही बाद यह विश्वास हो गया कि वे कुशल और विचारशील पुरुष हैं जो धैर्य बल्कि लंबे समय तक समझौते की प्रतीक्षा कर सकते हैं। और यह भी विदित हो गया कि वे धमकियों और मुसीबतों से घबराने वाले पुरुष नहीं हैं। घटनाओं ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि वे प्राचीन राहों के हिमायती होते हुए भी रूढ़ नहीं थे और नए रास्तों की खोज कर सकते थे। उन्होंने सदैव बड़ी स्थिरता एवं दृढ़ता के साथ मध्यम मार्ग पर समन्वयी तरीकों को अख्तियार किया। मतों की अतियों से उन्हें आपत्ति थी। किंतु मौलिक विचारों के न होते हुए भी वे आवश्यकतानुसार मौलिक निर्णय लेने में संकोच नहीं करते थे।

पाकिस्तानी आक्रमण और चीनी हथकण्डों के अवसर पर उनकी उत्तरदायित्व

निर्वाह की क्षमता की परीक्षा हुई। संयुक्त राष्ट्र संघ में उनका विश्वास पूर्णतया असफल साबित होता किन्तु ऐसा हुआ नहीं। उन्हें महसूस होने लगा था कि दोस्ती के पश्चिमी वायदे कूटनीतिक स्वार्थ-साधना के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। इससे वे निरुत्साहित नहीं हुए क्योंकि इसी समय उन्हें यह भी ज्ञान हुआ कि सोवियत रूस भारत का अन्यतम मित्र साबित हो सकता है। इसी कारण उन्होंने श्री कोसिजिन का प्रस्ताव शीघ्र स्वीकृत कर लिया। इस प्रस्ताव की स्वीकृति के समय कई प्रकार की द्विधाजनक बातें कही गईं, किंतु घटनाक्रम ने साबित कर दिया कि उनकी ताशकंद वार्ता और सोवियत रूस की मित्रता दोनों का विश्वास सही निकला।

श्री शास्त्री ने आजीवन अथक परि म किया और अंत में राष्ट्र के लिए एक बहादुर सैनिक की तरह अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

—पैट्रियाट, नई दिल्ली

प्रधान मंत्री शास्त्री का व्यक्तित्व नेहरू की भाँति प्रभावशाली नहीं था इसलिये उनके प्रारम्भिक कार्य काल में उन्हें अधिक महत्व नहीं दिया गया।

हाल ही के कुछ महीनों में उन्हे नेता के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता मिली।

उनका आकस्मिक और अप्रत्याशित निधन भारत के लिये गंभीर आघात है क्योंकि यह निश्चित नहीं है कि नई दिल्ली में कोई उपयुक्त व्यक्ति उनके स्थान को ग्रहण कर सकेगा और एक सशक्त तथा विवेकपूर्ण नेतृत्व जिसके लिए शास्त्री जी प्रयत्नशील रहे प्रदान कर सकेगा।

यह भी अनिश्चित है कि ताशकंद में सम्पन्न संधि शाँति का एक ठोस आधार बन सकेगी। जब कि दो में से इसका एक शिल्पी उठ गया हो।

इस समय शास्त्री जी की मृत्यु का आघात निश्चय ही दोनों देशों के पारस्परिक व्यवहारों में प्रभावशाली परिवर्तन लाएगा। हमें यह आशा करनी चाहिए कि दोनों देश एक दूसरे के प्रति घृणित प्रचार बन्द कर देंगे और परस्पर सौहार्द्र का निर्माण होगा।

ताशकंद घोषणा की प्रथम, संतुष्टि और शास्त्री जी के निधन की क्षति की अनुभूति समाप्त हो चुकने के पश्चात् संक्रान्तिकाल आयेगा।

शास्त्री जी का निधन केवल भारत की ही नहीं जिसको उन्होंने चेतना और नयी आशा प्रदान की है, वरन् सारे संसार की क्षति है। यद्यपि शास्त्री भारत के घरेलू मामलों में और सीमा विवादों में अत्यन्त उलझे थे किन्तु उनके संक्षिप्त कार्य काल अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ बना दिया है।

श्रीशास्त्री का विजय वेला में तिरोधान हुआ। ताशकन्द घोषणा उनकी विजय का ज्वलंत प्रतीक है। पाकिस्तान से उस शांति दूत का अंतिम संयोग हा उचित स्मारक है जो अपने गंभीर उत्तरदायित्वों से विरत नहीं हुआ।

—इजिप्सयन गजट, इजिप्ट

भारतीय प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री कोमृत्यु पर संसार के सभी शांति प्रेमी शोकाकुल हैं। शास्त्री जी सोवयित के एक नगर ताशकंद में मरे जहाँ वे पाक राष्ट्रपति अयूब खाँ से कश्मीर समस्या के स्थायी हलके लिए वार्ता कर रहे थे।

उनकी मृत्यु के कुछ घंटे पहले भारत और पाक ने अनुभव किया था कि हिंसा अठारह वर्ष पुरानी कश्मीर समस्या को नहीं मिटा सकती, तदर्थ दोनों के समस्या के समाधान के लिए बल प्रयोग के त्याग का संकल्प किया था। नेहरू की भांति शास्त्री भी महात्मा गांधी के निष्ठावन भक्तों में थे। साम्राज्यवाद और नवउपनिवेशवाद के विरोधी में वे अफ्रोएशिआई एकता और विश्वशांति के अग्रदूत थे। उनके अठारह महीनों का प्रधानमंत्रित्व काल स्वाधीन भारत में एक परीक्षा की घड़ी था। घरेलू मामलों के अलावा शास्त्रीजी को कुछ बाहरी समस्याएँ विरासत में मिली थीं जिनका सामना देश को उनके नेतृत्व में करना था। पाकिस्तान से कश्मीर के मसले पर दीर्घकालीन तनाव और चीन से सीमाविवाद दोनों ही उनकी मृत्यु तक अनिर्णित रहें। इन सभी संकटों में अपने राष्ट्र के सच्चे सेवक की भांति शास्त्रीजी साहस और दृढ़ता के साथ अडिग रहे। उनकी मृत्यु से एक महान विश्वनेता और राजनीतिज्ञ उठ गया है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

—दि डेली ग्राफिक, घाना

ताशकन्द समझौता नये वर्ष की प्रथम राजनैतिक सफलता है जो एशिया और विश्व के सम्बन्धों की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

—वोरबा, युगोस्लाविया

यद्यपि शास्त्री को नेहरू जितना सम्मान नहीं प्राप्त था। नेहरूजी विवादास्पद निर्णय ले लिया करते थे। शास्त्री जी का नाम ताशकंद वार्ता के साथ अटूट है। उनकी उपलब्धियाँ भी उल्लेखनीय रहेगी।

—स्टेटगार्टर, जाइतुंग

दोनों राष्ट्रों के बीच ठोस शांति का आधार बनाने में सफल हो रहे थे ?

ऐसी स्थिति में जब कि कश्मीर पर कोई समझौता नहीं हो पाया है, बहुत आशावादी नहीं हुआ जा सकता।

युद्ध-निषेध—संकल्प केवल तभी अर्थपूर्ण हो सकता है जब कि दोनों राष्ट्र निष्ठावान रहें।

एक बार भी पुनः शत्रुता की स्थिति उत्पन्न होने, आरोपों और प्रत्यारोपों, आक्रमण और प्रत्याक्रमण की स्थिति में ताशकंद अयुद्ध समझौता अव्यवहारिक होकर रह जायगा।

शांति की व्याप्ति शास्त्री जी के जीवन में कठिन होता। उनके मृत्यु के पश्चात् यह कठिनतर हो गया है।

—दि हांगकांग टाइगर स्टैंडर्ड, हांगकांग

भारतीय प्रधान मंत्री के असामयिक निधन के अघात की प्रतिक्रिया सारे विश्व में हुई है, उसमें उनके देश के और लाखों बाहरी लोग सम्मिलित हैं। सचमुच भारत के लिए यह अत्यन्त निर्दय आघात है, जहाँ शास्त्री नेहरू के बाद केवल अठारह महीने सत्ता रूढ़ रहे। नेहरू की लम्बी बीमारी ने नेतृत्व के लिए एक संकट उत्पन्न कर दिया था और शास्त्रीजी ने बहुत सचेत होकर अपने पद के उत्तरदायित्वों को निभाने का प्रयत्न किया।

हाल ही में शास्त्री जी ने स्वयं को अपने पूर्वाधिकारी की भांति सशक्त बना लिया था और यह आशा हो चली थी कि पाकिस्तान के साथ तनावपूर्ण स्थिति में ताशकंद समझौता भारत के अनेक समस्याओं के हल करने में सहायक होगा। उनकी मृत्यु ने इस आशा को समाप्त कर दिया। भारत पुनः इस कठिन काल में नेतृत्व विहीन हो गया।

निश्चय ही ताशकंद समझौता भारत के लिए शास्त्री की महान देन है। अस्थायी प्रधान मंत्री श्री नंदा ने इस समझौते को पालन करने का आश्वासन दिया है, फिर भी यह भारत के नये नेतृत्व के लिए परीक्षा की स्थिति होगी।

शास्त्री जी इस समझौते के बाद इसके कार्यान्वियन की स्थिति में थे। भारत के लिए दूसरी समस्या जो कि अत्यधिक महत्वपूर्ण है खाद्य की है। यद्यपि पैंतालीस करोड़ लोगों को भोजन देने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाकर यह समस्या हल करने का यत्न किया गया है, किंतु स्पष्टतः यदि ताशकंद समझौता कायम रहता है तो बंदूकों और टैंकों का गेहूँ में तलवारों का हलों में परिवर्त्तन हो जायगा। शास्त्री जी वृद्ध नहीं थे केवल इकसठ के थे और वे हृदय रोग से पीड़ित थे। उनकी मृत्यु यह याद दिलाती है कि नेतृत्व एक कांटो भरी राह है जिसमें सुदृढ़ व्यक्ति ही निभ सकता है।

—दि साउथ चाइना मार्निंग पोस्ट

क्या शास्त्री जी के उत्तराधिकारी ताशकंद सम्मेलन के अंतिम चरण में हुए निर्णय पर अमल करेंगे ? उनके असामयिक निधन से विश्व दुखी है।

—वर्किंग पीपुल्स डेली, बर्मा

बनारस का शालीन और विनम्र व्यक्ति, ताशकंद वार्ता को सफलता पर अपने सहयोगियों के साथ खुशियाँ मनाने के लिये नहीं रहा।

—पोलिटिका, युगोस्लाविया

दिल्ली की जनता शास्त्री जी के ताशकंद से लौटने पर जो विजय का हार्दिक सम्मान उन्हें देने वाली थी, वह उनके व्यक्तित्व के योग्य नहीं था। शास्त्री जी जैसे राजनीतिज्ञ के लिये इसे विजय कहना एक छोटी बात है क्योंकि उनका व्यक्तित्व ऊँचा था। कर्तव्यशील शास्त्री जी पाकिस्तान के अयूब खाँ से वार्ता करने ताशकंद गए और उन दोनों ने हिमालय और हिन्दूकुश के ऊपर शांति का सेतु निर्मित किया। ये बातें आगे चलकर पौराणिक गाथाओं की भाँति एशिया के देशों में कही जांयगी।

—सद्दयुत्श जाइतुंग, म्यूनिख।

(Sueddeutsch Zeitung, munieh)

भारत के प्रधान मंत्री श्री शास्त्री के निधन से केवल भारत का ही नहीं विश्व का विवेकी और दृढ़ नेता उठ गया है। आज के तनाव और संघर्षपूर्ण काल ने निःस्वार्थ सेवी नेताओं में से एक को खो दिया है जिन्होंने अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विश्व शांति के लिए अर्पित कर दिया है, विद्वेष और कटुता के प्रति उद्घोष किया है और विश्व बंधुत्व तथा मानव समुदाय के सुख के लिए अपना जीवन दान किया है। गांधीवादी विचारधारा के भक्त होने के नाते शास्त्री जी ने भारत के करोड़ों लोगों के नेतृत्व का भार सफलता-पूर्वक वहन किया। यह इतिहास की विडम्बना है कि उनके काल में भारत और पाकिस्तान के बीच परस्पर सौहार्द्र के बजाय हिंसा भड़क उठी। किंतु शास्त्री जी और अयूब खाँ के बल प्रयोग के त्याग से एक नए इतिहास का निर्माण हुआ है जिससे उन्होंने कश्मीर के उलझे प्रश्न को हल करने की कोशिश की है। शास्त्री जी के जीवन की अंतिक संध्या में यह सब हुआ।

शास्त्री जी प्रसन्नचित्त मरे और उन्हें ऐसा विश्वास हो गया था कि भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों के सुधारने की आधारशिला रखी गयी है। निश्चय ही उनकी विजय में मृत्यु हुई या विजय मृत्यु हुई।

—दि घानाइयन टाइम्स, घाना

ताशकन्द में जो दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई उससे सारे संसार को गहरा आघात पहुँचा है। पर शान्ति को दृढ़ बनाने के लिये शास्त्री जी ने जो कुछ किया उसे कभी भी भुलाया न जा सकेगा। लालबहादुर शास्त्री का नाम गरिमा और महानता का पर्याय बन गया है।

—बगदाद न्यूज, बगदाद

प्रधान मंत्री शास्त्री जी ताशकंद घोषणा पर जिससे भारत पाक सम्बन्धों में एक नया इतिहास आरम्भ हुआ, हस्ताक्षर करने के कुछ ही देर बाद हृदय गति बंद हो जाने से चल बसें। पाकिस्तान से मित्रतापूर्ण सम्बन्धों के कायम करने के प्रयास में ही उनका निधन हुआ। निश्चय ही मृत्यु के पूर्व उन्होंने एक महान कार्य पूर्ण किया। शास्त्री जी ने शांति की खोज में वीरगति प्राप्त की। भारत के लोगों को उनके इस दुखद अवसर पर हम अपनी सहानुभूति देते हैं।

—दि इण्डोनेशियन हेराल्ड, जकार्ता

निश्चय ही वह एक महान भारतीय नेता थे।

—डान, पाकिस्तान

मनुष्य के प्रति मनुष्य के दायित्व के प्रतीक लघुकाय शास्त्री जी को विश्व सदा याद रखेगा।

—डेली न्यूज, लंका

परीक्षा के बहुत ही कठीन १८ महीनों में शास्त्रीजी एक महान मानवतावादी प्रशासक और नेता सिद्ध हुए।

—स्टेट्स टाइम्स, मलयेसिया

उन्होंने चुपचाप मगर दृढ़ता के साथ विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र का नेतृत्व किया।

—बाल्टीमोर सन, अमेरिका

सारा देश शान्तिदूत श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन पर शोकाकुल है और श्रीमती ललिता शास्त्री और उनके परिवार के अन्य सदस्यों को संवेदना भेजता है।

—दि नेशन, वेस्ट इण्डीज

शास्त्रीजीने अत्यन्त अल्पकाल में अपने अनुयाइयों और विरोधियों द्वारा आदर प्राप्त कर लिया था। शास्त्रीजी ताशकंद में अपनी स्थिति से इंच भर भी नहीं डिगे, किन्तु उन्होंने उपमहाद्वीप में शांति के निमित्त ताशकंद वार्ता को असफल नहीं होने दिया।

—Bomer Rundschan, West Germany

शास्त्रीजी का निधन अप्रत्याशित और मास्को के लिए अत्यन्त दुखद है।

—HandelsBlatt, West Germany

ईमानदा मध्यमवर्गीय व्यक्ति भारत पाकिस्तान संघर्ष को समाप्त करने और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खां के साथ संधि समझौते पर हस्ताक्षर करने में सफल हुआ।

—जनरल एन्जीइगर

प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक देहावसान से राष्ट्र पर निरभ्र वज्रपात हुआ है। श्री नेहरू के बाद जिस महान् व्यक्तित्व के असाधारण कृतित्व से राष्ट्रीय गौरव की श्री वृद्धि हुई, वह अब हमारे बीच नहीं रहा। संकट काल में जिसके दूरदर्शी एवं सुयोग्य नेतृत्व में राष्ट्र का पुनर्जन्म हुआ, उसका अचानक निधन हमारे लिए कितना दुर्भाग्यपूर्ण एवं दुःखद है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। विगत अठारह वर्षों के राष्ट्रीय इतिहास में पिछले अठारह महीने कठिन अग्नि-परीक्षा के रहे हैं। इस संकटकाल में प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री ने जन मानस की भावनाओं का जिस धीरता और गम्भीरता से प्रतिनिधित्व किया, उसी के फलस्वरूप आज राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति का हृदय रो रहा है और उसके नेत्र अश्रुपूरित हैं। देश की जनता को प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री के रूप में ऐसा महान् नेता मिला था, जिसने अपने प्रारम्भिक जीवन में गरीबी की कठिनाइयों को हँस हँस कर सहन किया था और जो प्रधान मन्त्री बनने के बाद भी सामान्य जनता की भलाई को सर्वोपरि महत्व देने पर सदा बल दिया करता था। देश के दुःखियों और गरीबों की सुध लेनेवाला उनके जैसा प्रधान मन्त्री देश को कब मिलेगा? महान् राष्ट्रवादी होते हुए भी प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री ने अल्पकाल में ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक रंग-मंच पर अद्वितीय स्थान बना लिया था। आपका समस्त जीवन राष्ट्र की निःस्वार्थ सेवा में व्यतीत हुआ और ताशकन्द वार्ता में आपने भारतीय दृष्टिकोण पर दृढ़ रहकर जो ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की, वह विश्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित की जायगी।

श्री शास्त्री के निधन से भारत तथा एशिया ही स्तब्ध एवं शोकग्रस्त नहीं है अपितु समस्त संसार शोकाकुल है। संयुक्त राष्ट्र के महामन्त्री श्री थान्त ने शोक प्रकट करते हुए जो हृदयोद्गार प्रकट किये हैं, उनसे स्पष्ट है कि श्री शास्त्री के आकस्मिक एवं असामयिक निधन से मानवता तथा विश्वशान्ति को भारी क्षति पहुँची है। रूस के प्रधान मन्त्री श्री कोसिगीन ने हार्दिक दुःख प्रकट करते हुए श्री शास्त्री जी से की महान राजनीतिक कुशलता एवं पटुता की प्रशंसा की है। आपने कहा है कि शास्त्री जी से मुझसे जो अन्तिम बातें हुई हैं, उन्हें मैं कभी नहीं भूल

सकता। अमेरिका के राष्ट्रपति श्री जानसन ने भी शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का गौरवपूर्ण उल्लेख करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की हैं। समस्त संसार में प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री के लिए जैसा हार्दिक शोक प्रकट किया जा रहा है, उससे प्रकट है कि कितने कम समय में उन्होंने विश्व में लोकप्रियता अर्जित कर भारत की कीर्ति में वृद्धि की है। संकट काल में ही व्यक्ति की परीक्षा होती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अपने अठारह महीनों के कार्यकाल में श्री शास्त्री जी ने भारतीय राजनीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपनी निर्भीक एवं दृढ़ नीति के फलस्वरूप युगान्तर प्रस्तुत किया। कच्छ तथा कश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण और उसी समय चीन की चुनौती का जिस निर्भीकता एवं शौर्य से आपने सामना किया, वह आपकी महान् योग्यता, कार्यक्षमता तथा कुशलता का परिचायक है। भारत की सत्य एवं न्याय की मांग पर दृढ़ रहना आपकी नीति का मूल आधार रहा है। इसलिए संकटकाल में ब्रिटेन तथा अमेरिका के अनुचित एवं अन्यायपूर्ण राजनीतिक दबावों से झुकना आपने स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार कर दिया था। इससे राष्ट्रीय गौरव की वृद्धि हुई और विदेशों में आपकी ख्याति कुशल, सुयोग्य एवं असाधारण नेता के रूप में फैल गयी।

प्रधान मन्त्री पद का भार ग्रहण करते ही श्री शास्त्री ने देश की सामान्य जनता के हितों को सर्वोपरि महत्व देने पर बल दिया। आपने यहाँ तक कहा कि पंचवर्षीय योजना में वे योजनायें पहले पूरी की जायँ, जिनसे सामन्य लोगों को लाभ मिले। देश के प्रशासनिक ढाँचे में भी परिवर्तन के आप पक्षपाती थे। आपका मत था कि मन्त्रियों को साधारण जनता से निकट सम्पर्क रखना चाहिए। यही कारण है कि आपने यह सुझाव दिया कि मन्त्रियों को अपने दौरे के समय कुछ समय तक ग्रामीण क्षेत्रों में भी रहना चाहिए। इस झुकाव को आपने स्वयं कार्यान्वित भी करके दिखाया। प्रशासन में शिथिलता तथा भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने के लिए हाल में इसीलिए एक आयोग का गठन भी किया है। आपका व्यक्तित्व जितना सरल तथा स्वभाव जितना विनम्र था, आप अपने सिद्धांतों के उतने ही पक्के थे। जहाँ सिद्धांत का प्रश्न आ जाता वहाँ आप हिमालय की भाँति दृढ़ एव अडिग हो जाते थे। पाकिस्तानी आक्रमण तथा चीनी धमकी के समय यह बात अनेक बार स्पष्ट हो चुकी है। आप महान् शान्तिवादी थे किन्तु राष्ट्र की स्वतन्त्रता तथा अखण्डता की रक्षा के लिए शस्त्र का जवाब शस्त्र से देने के समर्थक थेदेश की कितनी उलझी हुई समस्याओं का समाधान करने में आपने सफलता प्राप्त की। काहिरा सम्मेलन, राष्ट्रमंडल सम्मेलन तथा ताशकन्द की शीर्ष-वार्ता मे आपने जिस कुशलता तथा योग्यता से विश्वशांति अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तथा सद्भाव के लिए महान् कार्य

किया, वह चिरस्मरणीय रहेगा। आपकी कनाडा, युगोस्लाविया, बर्मा आदि देशों की यात्राएँ भी अत्यंत सफल रही हैं और उनसे जहाँ एक ओर विश्वशांति को बल मिला, वहीं भारत का मान-सम्मान बढ़ा है। राष्ट्र को जय जवान, जय किसान का नारा देकर श्री शास्त्री ने आत्मनिर्भरता की ओर जिस प्रकार देश को अग्रसर किया, उससे आप अमर इतिहास पुरुष हो गये हैं।

आज, वाराणसी

भारतीयता और भारतीय जनता के प्रतीक श्री लालबहादुर शास्त्री के नाम के साथ स्वर्गीय शब्द का प्रयोग होने के साथ ही श्रद्धाजलियों का ताता लग गया। नश्वर शरीर के चिता भस्म में परिणत हो जाने के पश्चात शनैः शनैः अब श्मशान वैराग्य नित्य कार्यों में राग को स्थान देगा। देश के लाखों नागरिको ने और विदेशों के प्रतिष्ठित राजनेताओं ने जिस प्रकार अश्रुपूरित नेत्रों से शास्त्रीजी को श्रद्धांजलि दी है उसे किसी प्रकार अभूतपूर्व कहा जा सकता है।

श्री नेहरू के स्वर्गवास के पश्चात् उत्पन्न हुई रिक्तता को श्री शास्त्री ने जिस अदम्य साहस और निःस्वार्थ कर्तव्यनिष्ठा से पूरा किया उससे यह भाव मन में आये बिना नहीं रहता कि फल के प्रति अनासक्त रहकर सतत कर्मयोग में लीन स्थितप्रज्ञ व्यक्ति हो वैसा कर सकता था।

देश के सामने समस्याओं की अब भी कमी नहीं है। इतिहास में वैसा अवसर कभी नहीं आता जब किसी देश के सामते कोई समस्या न रही हो। समस्याएँ तो जीवन के साथ लगी हैं। परन्तु अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में और स्वयं अपने देशवासियों की नजरों में भारतीय संघ की एक सुदृढ़ लोकतंत्री राष्ट्र के रूप में जिस आत्मगौरव से दैदीप्यमान मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा श्री शास्त्री कर गए हैं, वही उनकी सबसे बड़ी विरासत है। अब इस विरासत को संभाल कर उसमें चार चाँद लगाना ही आगामी नेतृत्व को सफलता की सबसे बड़ी कसौटी होगी।

आत्मगौरव से दीप्त इस राष्ट्रमूर्ति पर जो सबसे बड़ा नैवेद्य चढ़ाया जा सकता है वह है आत्म-निर्भरता का। श्री शास्त्री द्वारा किया गया, जय जवान और जय किसान का नारा इस बात का द्योतक है कि आत्मनिर्भरता के इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें किस दिशा में विशेष प्रयत्न करना है। जवान भुजाओ के पराक्रम का प्रतीक है और किसान धरती में स्वेद सिंचन का। यों पराक्रम दोनों जगह अपेक्षित है। किसान और जवान के कार्यक्षेत्र का ही भेद है, लगन और उत्साह समान रूप से दोनों जगह अनिवार्य है। प्रकारान्तर से कह सकते हैं कि जवान लड़ाई के मैदान का किसान है और किसान अनाज के मैदान का जवान! किसान जवान है और जवान किसान है।

अब तक हमारा राष्ट्र विदेशों की ओर जितना उन्मुख रहा है उतना अपने देश के साधन स्रोतों. प्रतिभाओं और श्रमशक्ति की ओर नहीं। हमारी अमुक नीति के बारे में अमुक देश की क्या प्रतिक्रिया है, इसके बारे में हम बड़े संवेदनशील रहे हैं। आश्चर्य तो यह है कि अपने देश की जनता की प्रतिक्रिया के संबंध में उदासीन रहने की परंम्परा हमारे प्रशासनतंत्र में जम गई है। हमारी आत्मनिर्भरता के मार्ग में यही सबसे बड़ी बाधा है। राष्ट्र ही हमारा उपास्य देव है, वही हमारे चिंतन का लक्ष्य रहना चाहिए। राष्ट्रीय हित ही हमारा सबसे बड़ा साध्य भी है। इस साध्य से आंख हटी हम पथ भ्रांत हुए।

विदेशों के जितने सम्माननीय राजनेता इस समय राजधानी में आए हुए हैं, वे केवल श्रद्धांजलि की औपचारिकता ही पूरी करने नहीं आए, प्रत्युत वातावरण को सूंघने और उसे प्रभावित करने की उत्सुकता का भी उनमें अभाव नहीं है। वास्तव में हमारी प्रभावप्रवणता को दोषमुक्त है। वे जो कुछ करते हैं, अपने राष्ट्रीय हितों की दृष्टि से सही करते हैं।

आमतौर पर दक्षिण का यह प्रभाव तो विश्व राजनीति का अंग है। परन्तु हमारे राष्ट्र का चित उनका वंशवद होने में नहीं है, उन प्रभावों के बीच से अपनी राह खोज लेने में है। यह सिद्धान्त का प्रश्न नहीं, व्यावहारिकता का प्रश्न है। हमें अपनी बाई आंख और अपनी दाई आंख दोनों से समान रूप से काम लेना है, बाम और दक्षिण की हेयता और आदेयता के चक्कर में नहीं पड़ता। राष्ट्र को केन्द्र में रखकर, आत्मनिर्भरता की मंजिल की ओर दृढ़ता से चरण बढ़ाना ही उस आत्म गौरव दीप्त मूर्ति को खंडित होने से बचाना है जिसे श्री शास्त्री हमें सौंप गए हैं। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

—हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन से भारत के राजनीतिक आकाश से एक ऐसा तारा लुप्त हो गया है जिसने अल्पावधि में ही अपने उज्जवल एवं मार्गदर्शक प्रकाश से न केवल भारतीय जनजीवन को असाधारण उत्साह और शक्ति से भर दिया था अपितु जिसकी ज्योति ने देश की सीमाओं को पार करके राष्ट्र के सम्मान और प्रतिष्ठा के नये कीर्तिमान स्थापित किये। वह एक ऐसा प्रकाश पुंज था जिससे इस देश को बड़ी-बड़ी आशाएं थीं और जिसके अकाल में ही अस्तमित हो जाने से आगे का मार्ग अन्धकारमय हो गया है। आज जबकि देश को उनके पथ प्रदर्शन और प्रेरणा की सबसे अधिक जरूरत थी उनका यह अभाव किसको कांटे की तरह नहीं चुभेगा।

पं० नेहरू के निधन के बाद जब श्री शास्त्री प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हुए थे तो किसी को यह कल्पना भी नहीं थी कि वह छोटा सा सामान्य आकृतिवाला पुरुष अपने बुद्धिकौशल और आत्मशक्ति से भारतीय जनमानस और विश्व के नेताओं के बीच एक ऐसा स्थान ग्रहण कर लेगा जो महान् से महान् व्यक्ति के लिए भी स्पृहणीय हो सकता है। यह एक सत्य है कि उन्होंने अपने अद्भुत कर्मनिष्ठा, अदम्य शक्ति और शान्ति भक्ति के ऐसे उदाहरण उपस्थित किये जिनसे देश की नौका सब भंवरों को पार कर प्रगति के पथपर बढ़ती रही और देश की जनता को ही नहीं भारत के सब मित्र देशों को अनुभव हुआ कि भारत का भाग्य उनके हाथ में सुरक्षित है। पाकिस्तान के साथ युद्ध में उन्होंने जिस आत्मविश्वास और पौरुष का प्रदर्शन किया उसने केवल जनता के हृदय को उनके प्रति अटूट आस्था से भर दिया और उनकी लोकप्रियता अपनी चरम सीमा तक पहुँच गई। ऐसे महान व्यक्ति का निधन कितना कष्टकर हो सकता है इसकी कल्पना कुछ मुश्किल नहीं है।

शत्रु के प्रति आत्मसमर्पण न करने की भावना और हर मूल्य पर राष्ट्र के सम्मान की रक्षा उनका मंत्र था, परंतु शान्तिप्रियता के प्रति उनकी आस्था असाधारण थी। उन्होंने अपनी ओजपूर्ण वाणी और भारत की शक्ति में असीम विश्वास से शत्रु की धमकियों और आक्रामक कार्रवाइयों का जबाव दिया, परन्तु उनसे मित्रतापूर्ण संबंध कायम रखने की आकांक्षा को विजय प्राप्ति के बाद भी उन्होंने एक क्षण को नही छोड़ा। चीन और पाकिस्तान से वे निरन्तर शान्ति के लिए प्रयत्न करते रहे और उनकी ताशकंद की यात्रा तो इस दिशा में उनका एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक कदम था। उसके द्वारा उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि वे शान्ति के अग्रदूत थे और देशों के बीच मित्रता पूर्ण संबंधों में उनका अनन्य विश्वास था। पाकिस्तान द्वारा हमला किये जाने के बावजूद कच्छ का जो समझौता उन्होंने किया था वह उसका जीवित प्रमाण है। जिन परिस्थितियों में उनका निधन हुआ है उन्हें दृष्टि में रखते हुए यदि यह कहा जाय कि वे दो देशों के बीच शान्ति के लिए शहीद हो गये तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

श्री शास्त्री एक महान कर्मनिष्ठ, बुद्धिमान और जनता के दुःखदर्द के सही सहानुभूतिशील व्यक्ति थे। वे छोटे से बड़े हुए थे, इसलिए उन्होंने अपने विचार और कर्म की दिशा को पद के प्रभाव से मार्गभ्रष्ट नहीं होने दिया और उनका समस्त जीवन लोकतंत्र की रक्षा तथा जनजीवन को सुखी, स्वस्थ और समृद्ध बनाने में लगा रहा। उनके आत्मत्याग, ईमानदारी और संगठन शक्ति का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि अरियालूर रेल दुर्घटना के बाद उन्होंने रेलमंत्री

के पद से इस्तीफा दे दिया था। सन् ५१-५२ में कांग्रेस के संगठन तथा सन् ६२ के आम चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवारों के चयन का भार उन्हीं पर सौंपा गया था। उनके बुद्धिकौशल का ही यह फल था कि न केवल असम तथा मद्रास में भाषा को लेकर हुए विवाद को उन्होंने शान्तिपूर्ण ढंग से निपटा दिया था, अपितु नागा समस्या और पंजाबी सूबे के प्रश्न को भी ऐसा रूप दिया जिससे विस्फोट की आशंकाएँ बहुत सीमा तक दूर हो गई। ताशकंद वार्ता की सफलता तो उनके बुद्धि कौशल और व्यवहार दक्षता का एक ऐसा उदाहरण है जो भारत पाक के इतिहास में शान्ति पर्व के रूप में स्मरण किया जाता रहेगा।

शास्त्री जी गांधी और नेहरू की परम्परा के व्यक्तियों में से थे। जब से उन्होंने राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया वे उनके द्वारा स्थापित उद्देश्यों और आदर्शों को क्रियान्वित करने में निष्ठापूर्वक लगे रहे। क्या देश के अन्दर और क्या बाहर उनकी एक ही नीति रही और उन्होंने अपने कार्यों और विचारों से सिद्ध कर दिया कि राष्ट्र में उन्हें पं० नेहरू का उत्तराधिकारी नियुक्त कर कुछ गलती नहीं की थी। सच पूछा जाय तो उन्होंने अपने अग्रवर्त्तियों के सोने जैसे कार्यों को शक्ति और आत्मविश्वास की सुगन्ध से भर दिया। देश के गौरव को रक्षा का जो महान कार्य उन्होंने किया है वह आनेवाली पीढ़ियों के लिए एक कहानी बन जायगा।

पड़ोसी देशों से मित्रता संबंध की कामना उनके मनमें कितनी प्रबल थी यह उनकी अभी हाल की बर्मा की यात्रा से प्रकट हुई है। उसी उद्देश्य से वे काबुल भी जानेवाले थे। इससे पूर्व वे सोवियत रूस, कनाडा, यूगोस्लाविया, संयुक्त अरब गणराज्य, नेपाल आदि की यात्रा भी कर चुके थे। इस प्रसंग में महा राजा महेंद्र का यह वाक्य सदा स्मरण किया जाता रहेगा कि श्री शास्त्री भारत के महान नेता थे और नेपाल के सबसे बड़े दोस्त। यदि वे कुछ दिन और जीवित रहते तो यह विश्वापूर्वक कहा जा सकता है कि अन्तराष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में भारत ने नया कीर्तिस्तभ स्थापित किया होता उससे अपने को वह अबसे कहीं अधिक शक्तिमान और समृद्ध अनुभव करता।

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

आँधी आने के पूर्व आकाश स्तंभित हो जाता है, बिजली में पूर्व नील कादम्बिनी का आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है पर जो अनभ्र वज्राघात आज सूर्योदय से पहले हुआ उसके पूर्व इतनी भी चेतावनी कठोर नियति ने नहीं दी और असंख्य जनता के हृदय पर पत्थर रख कर यह आमाकिक अप्रत्याशित समाचार सुनना पड़ा कि भारत के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री अब इस संसार में नहीं हैं।

एक महान देश के कर्णधार जिसे कुछ घंटों बाद उल्लास पूर्वक विदा करने जा रहे थे उसी प्राणहीन शरीर को अपने आगे देख कर वह कर्तव्य बिमूढ़ एवं ठगे से रहे गये। एक देश की सत्ता और जनता किसी के शानदार स्वागत की तैयारी कर चुकी थी पर उन्हें यह कल्पनातीत दुखद समाचार सुन कर मानना पड़ा कि अब वह अतिथि कभी देखने को न मिलेगा। भारत की दशा तो वर्णनातीत कही जायेगी। कहाँ तो दो दिन बाद शास्त्री जी के आगमन पर वीरों जैसा स्वागत होने वाला था कहां कार्यक्रम से एक दिन पूर्व ही उनका पार्थिव शरीर विमान से उतार कर राजकीय सम्मान के साथ प्रधानमंत्री आवास तक पहुँचाने की विवशता आ गई। बीथियों के दोनों ओर खड़ी असंख्य जनता ने फूल तो बरसाये पर मुख पर मुसकान नहीं आँखों में आँसू थे। वृद्धा माता, सहधर्मिणी, पुत्र पुत्रियों और परिजनों को, फोन पर उनका आत्मीयता पूर्ण स्वर सुनने के कुछ ही घंटो बाद यह सूचना पा कर कि उन का संसार लुट गया है क्या दशा हुई, उसके वर्णन मे भाषा को भावों का अभाव अखरने लगा है। सचुमुच विधाता का यह कठोर व्यंग्य मानव कल्पना को विवश बनाने वाला यह उपहास असह्य है, पर न सहने का कोई विकल्प भी तो नहीं बचा है। राष्ट्र की अपूरणीय क्षति हुई है यह शब्दावली आज कितनी खोखली जान पड़ रही है। मृत्यु किसकी नहीं होती पर उस की अप्रत्याशितता एवं आकस्मिकता से भारत को ही नहीं संपूर्ण मेधा के साथ साथ शौर्य, संकल्प, राष्ट्रीय एकता एवं त्याग तथा उत्सर्ग को अग्नि परीक्षा का क्षण उपस्थित हो गया। पर देश परोपजीविता का पथ छोड़ कर इस परीक्षा में जिस प्रकार कृतकार्य हुआ और शत्रु के जिस प्रकार दाँत खट्टे किये उसे देख कर विरोधी भी दांतो तले उँगली दबाने लगे। सब तरफ से राजनीतिक एवं आर्थिक दबाव पड़ने लगे। पक्षपात तथा असत्य प्रचार के प्रहार हुए पर भारत ने दृढ़ता पूर्वक अंगद के पाँव टेके और कुशल नेतृत्व के कारण किसी भी मोर्चे पर असहायता की भावना जनता तक फटकने नहीं पाई। मनोबल की इसी दृढ़ता का प्रसाद ताशकंद की ऐतिहासिक घोषणा के रुप में मिला जिसपर हस्ताक्षर कर के शास्त्री जी ने इस प्रकार संसार त्याग कर दिया मानों आत्मविश्वास प्रेरित सम्मानप्रद शांति का ही एकमात्र लक्ष्य सिद्ध करने के लिये विधाता ने उन्हें धरातल पर भारत माता के सपूत के रुप में भेजा था। शास्त्री सरकार का कार्य काल अथक संकटों और आशंकाओं की दृष्टि से अभूतपूर्व रहा, पर जिस पथ पर चल कर उन संकटों से भी जूझ कर जीता जा सकता है उस पर 'जय जवान' के साथ 'जय किसान' का नारा दे कर शास्त्री देश को शरीर छोड़ने से पूर्व ही चलना सिखा चुके हैं। शास्त्री जी हमें ऐसे क्षण पर छोड़ कर चले गये हैं जब उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी।

सभी को यह आशा तथा विश्वास था कि उनका सफल नेतृत्व कुछ समय में ही देश की काया पलट कर देगा। वह नेतृत्व आज नहीं रहा है पर उस आदर्श की प्रेरणा ने प्रगति का पथ तो दिखा ही दिया है जिस पर चल कर देश उन्हें सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकता है। विश्व को शोक सागर में जिस प्रकार निमग्न किया है उसकी समता इतिहास के पृष्ठों में कहां मिलती है। उस विलक्षण व्यक्ति को मृत्यु ने अभूतपूर्व परिस्थितियों में आलिंगन किया है।

अट्ठारह मासपूर्व जब स्वर्गीय प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू के निधन के उपरान्त देश को एक सूनेपन का अनुभव हो रहा था और यह प्रश्न बार बार उठाया जा रहा "नेहरू जी के बाद कौन" तब शास्त्री जी ने राष्ट्र की शासन सत्ता का सूत्र संचालन करने का दायित्व संभाला और कुछ ही दिनों में अपनी कुशलता, कर्मठता, दूरदर्शिता, दृढ़ता तथा योग्यता द्वारा उस भयानक प्रश्न का न केवल राष्ट्र को उत्तर दिया बल्कि ऐसे प्रश्नों के पीछे निहित निस्सारता तथा अविवेक को भी राष्ट्र के सामने स्पष्ट कर दिया। नेहरू युग के बाद शास्त्री जी अनुभवी ही नहीं सफल उत्तराधिकारी और समर्थ युगप्रवर्तक सिद्ध हुए पर किसे पता था कि यह युग कुछ मास का ही होगा। ये कुछ मास स्वतंत्रोत्तर भारत के इतिहास में अभूतपूर्व संकट के रहे हैं। शास्त्री जी के नेतृत्व में राष्ट्र ने न केवल उन संकटों का सामना किया और उन पर विजय पाई बल्कि वह अनूठा आत्मविश्वास भी अर्जित किया जिससे भविष्य में भी अपनी सफलता के सम्बन्ध में देश की जनता आश्वस्त हो चुकी है। उत्तरी सीमा पर चीन का संकट ज्यों का त्यों बना रहा बल्कि बढ़ा ही, उधर कच्छ के रन पर पाकिस्तानी आक्रमण हो गया और उस क्षेत्र में युद्ध-विराम के समझौते की स्मृति भी न सूखने पायी थी कि पहले कश्मीर में पाकिस्तानी घुसपैठियों का तथा बाद में भारतीय क्षेत्र में विदेशी सामरिक सज्जा पर दर्प करने वाली पाकिस्तानी सेना का आक्रमण हो गया। देश के लिए सामरिक शक्ति दिवंगत नेता की उपलब्धियाँ बहुविध अनेक तथा दूरगामी थीं और नीतियों तथा कृत्यों से भी ऊपर उनका व्यक्तित्व बहुत दिनों तक भारतीय जनता को प्रभावित करता रहेगा। एक सामान्य असम्पन्न परिवार में जन्म लेकर, दीनता के बावजूद शिक्षार्जन के बाद राष्ट्र-सेवा, जेलयात्रा तथा राजनीति की जिन दुर्गम पगडंडियों को पार करते हुए वह देश के मूर्धन्य कर्णधार बने थे वह कहानी अपने आपमें सामान्यजन के लिए प्रेरणाप्रद है। पर उच्चता के शिखर पर आकर भी उनके संस्कार, मन,वाणी तथा रहन-सहन में अन्तर नहीं आया, सादगी उनके लिए प्रभावप्रद बनी रही और विनम्रता, सहृदयता आदि के समन्वय ने उनके व्यक्तित्व को 'प्रभुता पाहि काहि मद नाहीं' का अपवाद सिद्ध कर दिया। यदि पड़ोसी देशों में उनका पदार्पण में ही पथ की दुर्गमताओं को दूर

करता था तो भारतीय राज्यों के राजनैतिक संकट उनके स्पर्श से दूर हो जाते थे। प्रशासन के भ्रष्टाचार, सचिवालयों के दीर्घसूत्रीपन और कांग्रेसी संघटनों की स्वार्थ प्रेरित गुटबंदियों को राजरोग माननेवाले लोग शास्त्री जी के व्यक्तित्व, प्रभाव और कौशल को ही इनका एकमात्र निदान मानने के अभ्यस्त हो गये थे तथा अब इन दिशाओं में सफलता के लिए देश को उदात्त कल्पना का अब कोई और संबल खोजना पड़ेगा। यह कार्य कठिन अवश्य है पर कठिन कार्यों को पूरा करने के लिए सबसे सहयोग का लोकतन्त्रीय रास्ता शास्त्री जी देश को ही नहीं अपने सहयोगियों को भी दिखा चुके हैं। इन शब्दों के साथ भरे हुए हृदय के साथ हम भी दिवंगत आत्मा की अखंड शांति और विकल परिजनों को यह महान दुख वहन करने की शक्ति तथा आश्वासन प्रदान करने की परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

—स्वतन्त्र भारत, लखनऊ

राष्ट्रनायक श्री लालबहादुर शास्त्री जी की स्मृति में भारतीय जनता, देश के नेतागण तथा विदेशी प्रतिनिधियों ने श्रद्धा के जो अंतिम फूल बुधवार के दिन भारत की राजधानी में चढ़ाये, दिवंगत नेता के उच्च व्यक्तित्व, भारतीय राष्ट्र के प्रति उनकी अथक सेवा तथा विश्वशांति के आदर्श में उनकी चरम अवस्था के सर्वथा अनुरूप हैं। १६ महीनों के अपने कार्यरत काल में जैसे शास्त्री जी ने युग का इतिहास भर दिया। इस बीच उन्होंने दिखा दिया कि एक सीधा साधा सुलह पसन्द व्यक्ति राष्ट्रीय संमान की रक्षा के लिये किस प्रकार दृढ़ता तथा साहसपूर्वक तलवार उठा सकता है और फिर शांति का अवसर उपस्थित होने पर उसकी प्राप्ति के लिये उसी संजीदगी से किस प्रकार अपनी बलि चढ़ा सकता है। भारत के सम्मुख उपस्थित राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय उलझनों के बीच शास्त्री जी को मानसिक क्लान्ति हो उठना अस्वाभाविक था, जिसका शिकार होने से मुख पर सदा खेलनेवाली मुस्कान के बावजूद स्वर्गीय प्रधानमंत्री अपने को नहीं बचा सके। संभवतः ताशकंद वार्ता का कठोर श्रम उनकी दुबली पतली तथा क्षीण काया को भूलुंठित करने के लिये अंतिम तिनका सिद्ध हुआ। १९६४ की जून मास की बीमारी कदाचित प्राकृति की एक चेतावनी थी, जिसकी उपेक्षा शास्त्री जी को उनके परिवार को तथा भारतीय राष्ट्र की अत्यधिक महंगी पड़ी।

आज जब कि शास्त्री जी नहीं रहे, हमारा ध्यान उन परिस्थितियों की ओर जाता है जिनमें रहकर हमारे प्रधानमंत्री को कार्य करना पड़ता है। हमारे मत में प्रधानमंत्री को अपने उत्तरदायित्व तथा प्रशासनिक कार्य को कुछ और विकेन्द्रित करना चाहिए। दिवंगत नेता श्री नेहरू तथा स्वर्गीय शास्त्री दोनों गुरुतर कार्य

भार तथा उत्तरदायित्व के नीचे कुछ ऐसे दबे कि उसके बीच से वे अपने को जीवित निकाल नहीं सके। वैसे भविव्यता से मरणशील मानव की मुक्ति नहीं है किन्तु स्वास्थ्य का ध्यान रखकर नेताओं की मरणावधि को कुछ बढ़ाया अवश्य जा सकता है। अमरीकी राष्ट्रपति तथा ब्रिटिश प्रधानमंत्री अपने कार्यरत जीवन के बीच नियमित रूप से विश्राम लेते हैं और इसके लिये राज्य की ओर से वहाँ विशेष प्रबन्ध रहता है। राष्ट्रीय कर्णधारों की राजकीय कार्य के लिये अधिक समय देना सर्वथा उचित है किंतु 'अति सर्वत्र वर्जयेत' की चेतावनी का ध्यान भी रहना आवश्यक है।

—प्रदीप, पटना

अठारह वर्ष, अठारह मास; आठ सप्ताह और आठ दिन...अंकों में कोई जादू होता है ऐसा हम नहीं मानते, पर उन के सहारे जमे हुए दुःख को द्रवित हो कर बहने देने के लिए एक मार्ग हम पा सकते हैं। आज़ादी के अठारह वर्ष और स्व. लालबहादुर शास्त्री के प्रधानमन्त्रित्व के अठारह मास; भारत-पाक युद्ध के आठ सप्ताह और शास्त्री जी के निधन के बाद के पिछले आठ दिन एक मर्मस्पर्शी संगति इनमें दीखती है जो हमें बल देती है कि एक दारुण आघात सहते हुए भी हम एक राष्ट्र के रूप में आगे की ओर देख सकें...

अठारह वर्षों में देश निरन्तर आगे ही बढ़ता गया, यद्यपि बीच-बीच में अप्रत्याशित संकट भी उस पर आये; पर एक समस्या न हल हुई न हल की ओर बढ़ती दीखी—भारत के अंग कश्मीर को ले कर भारत-पाक तनाव की समस्या। यहाँ तक कि सब इसी को एक प्रकार का हल मानने के आदी हो गये कि ज़िच की अवस्था ही एक स्थितिशील रूप ले ले—समस्या हल न हो रही हो तो और उभरे भी नहीं। पर शास्त्री जी के प्रधानमन्त्रित्व के अठारह महीनों में वह न केवल उभरी बल्कि एकाएक भड़क कर एक विस्फोट में परिणत हो गयी—यद्यपि पहला विस्फोट कच्छ-गुजरात की सीमा पर हुआ और उसके ऊपरी शमन के बाद ही युद्ध वहाँ प्रकट हुआ जहाँ विष का संचय वर्षों से होता रहा था। पर भारत-पाक तनाव की काली छाया जैसे-जैसे क्षितिज पर उमड़ती गयी, लघुकाय प्रधानमन्त्री के व्यक्तित्व की छिपी हुई शक्ति भी वैसे-वैसे लक्षित होती गई; युद्ध के आठ सप्ताहों में सारे राष्ट्र ने मानों अपनी चमत्कृत आँखों के सामने उस व्यक्तित्व को एक विशाल रूप ग्रहण करते हुए देखा और एक आत्म-विश्वास भर आया जिसकी उसे अठारह वर्षों से तलाश रही थी। युद्ध युद्ध की सुरसा 'जस-जस बदन बढ़ावा', लालबहादुर के नेतृत्व में राष्ट्र-संकल्प 'तासु दुगु रूप दिखावा'। जो व्यक्ति भारत की ओर से बात

करने ताशकन्द गया था, वह शरीरतः वही था जिसे स्व. नेहरू के बाद हमने शासन सूत्र सँभालते देखा, पर हमारे मन में उसका बिम्ब बिल्कुल बदल गया था—और यह भी हम जानते थे कि पाकिस्तान के नेताओं के सामने भी उसका नया बिम्ब उस मूर्त्ति से बिल्कुल भिन्न है जो युद्ध से पहले उनके सामने रही—और जिसे और भी व्यंग्य-विकृत रूप देने का प्रयत्न उनके प्रचार संगठनों ने किया...

और ताशकन्द-वार्त्ता के दौरान वह बिम्ब कुछ और बढ़ा; ताशकन्द-समझौते के बारे में देश में एकमत नहीं था, न अभी है, पर एक संयत आशावादिता के साथ उसे व्यावहारि रूप देकर देखने का आत्मविश्वास देश में अवश्य था और रहेगा।

पर वह विशालातर व्यक्तित्व ताशकन्द से लौटा नहीं। लौटी केवल उस की मूर्त्त मिट्टी और उस की अमूर्त्त यशःकाया। और एक को हम अग्नि को सौंपकर राख कर चुके हैं जिसको इसी सप्ताह गंगा में प्रवाहित कर दिया जायगा। और दूसरी ? दूसरी...

—दिनमान, नईदिल्ली

मुझे याद है कि दो बरस पहले जब किसी राजनीतिक सवाल पर बातचीत करने जवाहरलाल नेहरू के पास पहुँचा तो उन्होंने मुझे शास्त्री जी के पास जाने को कहा। पण्डित जी उन दिनों बिमारी के बाद अच्छे हो रहे थे और शास्त्री जी बिना विभाग के मंत्री थे। मैंने पण्डित जी से कहा-'लेकिन मैं उन्हे नहीं जनता-मुमकिन है पहले से वक्त न लेने की वजह से वह मुझसे न मिलें।'

पण्डित जी ने मुझे यकीन दिलाया, "वह आपसे मिलेंगे। लालबहादुर से बड़ी आसानी से मिला जा सकता है। आप को उनसे इस सवाल पर बातचीत करने में कोई दिक्कत भी नहीं होगी।" उसके बाद उन्होंने जो बात कही उसका महत्व कई महीने बाद मुझे मालूम हुआ 'आपको चाहिए कि आप लालबहादुर को जानिये। यह बहुत जरूरी है कि आप उन्हे पहचानें।"

मैं पहली बार शास्त्री जी से १५ मिनट के लिए मिला। उतनी ही देर में मुझे पता चल गया कि यह 'नन्हा-सा आदमी' राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर गहरी नजर रखता है, धर्मनिरपेक्षता के बारे में उसकी समझ नेहरूवादे साँचे में ढली हुई है। वह गांधीवादी होने के नाते वर्ग संघर्ष का विरोधी है और समाजवादी आदर्शों का प्रेमी।

मैं जब उनसे बातचीत कर रहा था तो वह रात के खाने के बाद तेजी से टहल रहे थे। बीच-बीच में वह मजाक भी करते जाते थे और मुझे उस वक्त यह

अनोखा अनुभव हो रहा था कि यह 'नन्हा-सा आदमी' न सिर्फ बौद्धिक तौर पर बल्कि शारीरिक तौर पर भी ऊँचा उठता जा रहा है।

उनके प्रधान मंत्री बनने के बाद मैं उनसे फिर मिला। उस समय वह सोवियत रूस के दौरे से नये अनुभवों के साथ लौटे ही थे वह मुझे देर तक फर्राटे की उर्दू में सोवियत देश के बारे में बता रहे थे। ताशकंद की जनता ने उनका और उनकी पत्नी का जो भावपूर्ण स्वागत किया था, उससे वह बहुत प्रभावित थे, वे लोग बिल्कुल हम हिन्दुस्तानियों की तरह हैं।' फिर वह ताशकंद शहर के बारे में बताने लगे "बड़ा खूबसूरत शहर है। हर तरफ फल ही फल दिखाई देते हैं।"

वे पूरे राष्ट्र के शानदार प्रतीक बन गए। उनके नेतृत्व के असली मूल्य का अंदाजा हमें उस समय हुआ जब युद्ध के संकट ने हमें आ घेरा और सारा देश एक होकर हमलावार का सामना करने के लिये उठकर खड़ा हो गया। संकट और तूफान के दिनों में मुझे कई बार प्रधानमंत्री से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने बड़े धैर्य, साहस और शांत दृढ़ संकल्प के साथ इस अग्नि परीक्षा का सामना किया इस विनम्र गांधी वादी को पश्चिमी पंजाब में जबावी हमला करने का फैसला करने में काफी साहस से काम लेना पड़ा होगा। लेकिन जब भी मातृभूमि की सुरक्षा और सम्मान के लिये साहस के साथ कोई कदम उठाने की जरूरत पड़ी, वह भय या बौखलाहट के कारण पीछे नहीं हटे। इसी का नतीजा था कि शायद इतिहास में पहली बार भारत उत्तर की ओर से होने वाले बड़े हमले को परास्त कर सका।

फिर भी शास्त्री जी युद्ध के नेता नहीं थे। उनका सहज स्वभाव ही एक शांति प्रेमी का था और जीवन भर उन्हें इसी की शिक्षा मिली थी। वह शांति और मानव कल्याण को सबसे ठोस और बड़ी सच्चाइयाँ मानते थे। इसीलिए युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद युद्ध-विराम होते ही वह तन मन से शांति के क्षेत्र में विजय प्राप्त करने के काम में जुट गए। लड़ाई रुकने के बाद उन्होंने मुझसे कहा था कि भारत और पाकिस्तान के बीच फिर से मैत्री और सद्भावना पैदा करने के लिए पहला कदम यह होना चाहिये कि" ताशकंद की भावना को प्रबल बनाया जाय यानी मौजूदा तनाव मार काट और युद्धविराम के उल्लघनों के बजाय शांति का उचित वातावरण पैदा किया जाए। उन्होंने इस तरह की कोरी बातों से संतोष नहीं कर लिया कि अपने स्वप्न को साकार करने ताशकंद गए।

ताशकंद में इज्जत के साथ शांति प्राप्त करने में उनकी शानदार रचनात्मक भूमिका पर दुनिया के सभी प्रमुख नेता उनको श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर चुके है। कोई इन्सान

इससे और बड़े गौरव की कामना कर सकता है? राष्ट्र शोक में डूबा हुआ है। जनता अपने को अनाथ अनुभव कर रही है। लेकिन शास्त्री जी भरपूर गौरव के साथ इस संसार से विदा हुए हैं—शांति में उनका यह गौरव युद्ध के गौरव से भी अधिक शानदार है। सच तो यह है कि शांति की वेदी पर उन्होंने अपनी बलि दे दी। उन्होंने एक विजयी सेनापति की तरह रण-क्षेत्र में वीरगति पायी। फर्क बस इतना था कि यह रण क्षेत्र युद्ध का नहीं शांति का था।

ताशकंद इस छोटे से महान आदमी के लिए जिसकी आत्मा अमर हो गयी है, हमारा ही नहीं बल्कि सारी दुनिया का अमर स्मारक बन गया है। इस "अमर आत्मा" ने न सिर्फ पड़ोसी देशों के साथ हमारे झगड़ों को तै करने का मार्ग दिखाया बल्कि सामाजिक समानता और न्याय के आधार पर शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और निर्माण के फलों को सारी जनता में बाँटने का भी कार्य दिखाया। हो सकता है कि युद्ध और शांति की समस्याओं में उलझे रहने के कारण शास्त्री जी निरंतर आर्थिक क्रांति की ओर पूरा ध्यान न दे सके हों जिसको पूरा करने के लिए हमारा राष्ट्र वचनबद्ध है लेकिन समाजवाद के बारे में उनके विचारों से सभी इतनी अच्छी तरह परिचित हैं कि उनके उत्तराधिकारी इन विचारों की उपेक्षा नहीं कर सकते। इस मामले में भी हमारा सौभाग्य है कि हमारे नये प्रधान मंत्री गुलजारी लाल नंदा भी नेहरूवादी हैं और उनके बारे में खुद नेहरू ने कहा था कि वह हमारे आदर्शों में निष्ठा रखने वाले एक अच्छे समाजवादी हैं और बहुत ईमानदार आदमी हैं।

इस शोक की घड़ी में हम नंदा जी और पूरे राष्ट्र और शोक संतप्त श्रीमती ललिता देवी शास्त्री और उनके परिवार के प्रति इस दुर्घटना पर हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं।

ब्लिट्ज, बम्बई

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो जीते हुए भी मरे रहते है और कुछ ऐसे होते हैं जो मरकर अमर हो जाते हैं। स्वतंत्र भारत के दूसरे प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री इन्हीं मर कर अमर होने वाले महापुरुषों में से एक थे। सहज और धीमी गति से जीते हुए वह अद्भुत दृढ़ता के साथ अपने मनोबल का विकास करते रहे और जब अवसर आया तब उनका यही मनोबल ध्रुव तारे का दिव्य प्रकाश से ऐसा जगमगाया कि सारा जग उससे देदीप्यमान हो उठा। १० जनवरी को रात्रि के आवरण में लोभी काल ने घात लगाकर उन पर अपना फंदा डाल

तो दिया, किन्तु महामानव की सुकीर्ति लघु काया बन्धनों को तोड़कर क्षितिज पर ज्योतिपुंज बन कर चमकी और ऐसी चमकी कि सारा विश्व चमत्कृत होकर चिल्ला उठा धन्य था वह जीवन !

सचमुच ही धन्य था वह जीवन। डेढ़ वर्ष के अपने प्रधानमंत्रित्व काल के राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की रक्षा का जो अद्‌भुत कार्य श्री लालबहादुर शास्त्री ने किया, वह विश्व के इतिहास में सदा सर्वदा धन्य माना जायगा। वह शांति के एक महान योद्धा थे। जिस शान्ति के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने प्राणों की आहुति चढ़ा दी, जिस शान्ति के लिए राष्ट्रनायक पंडित जवाहर लाल नेहरू का दुर्लभ जीवन अर्पित हो गया, उसी शान्ति की रक्षा में भारतीय ऋषियों की उज्ज्वल परंपरा का पालन करते हुए श्री लालबहादुर शास्त्री ने अपनी काया और आत्मा का पूरा बल लगा दिया। आक्रमणकारी शत्रु के शस्त्र का शास्त्र से उत्तर देकर उन्होंने राष्ट्र की खोई सामरिक प्रतिष्ठा को नया गौरव प्रदान किया और शत्रु के अभिमान को चूर करने के बाद भी विश्व पंच संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्देश पर युद्ध विराम प्रस्ताव को स्वीकार करने में लेश मात्र भी झिझक नहीं दिखाई। पाकिस्तान की हजारों वर्गमील भूमि पर हमारे सैनिकों ने सहज ही तिरंगा झंडा लहरा दिया, फिर भी शान्ति के इस अनन्य पुजारी ने बार बार यही घोषणा की कि हम किसी की एक इंच भूमि भी हथियाना नहीं चाहते। अपनी इस सत्य-निष्ठा का पूरा पूरा परिचय उन्होंने ताशकन्द में दिया, जहाँ विश्वशान्ति के हित के लिए वह जीती हुई भूमि से सैनिकों को हटाने के समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए सहर्ष तत्पर हो गए। अपने राष्ट्र के लिए ही नहीं बल्कि सारे संसार के लिए यह बहुमूल्य शान्ति अर्जित कर के शान्ति के इस वीर योद्धा ने अपरिमित शान्ति का अनुभव किया ऐसी शान्ति कि मुख पर विजय श्री की आभा लिए वह सदा के लिए शान्ति पूर्ण निद्रा में लीन हो गया।

इसी बलिदान का यह परिणाम है कि आज विश्व एक स्वर से इस बात को स्वीकार कर रहा है कि श्री लालबहादुर शास्त्री शान्ति के सच्चे अग्रदूत थे। कर्तव्य के प्रति उनकी निष्ठा इतनी बलवती थी और राष्ट्र की सेवा उन्होंने इतनी लगन, सचाई और ईमानदारी से की कि प्रभु ने उन्हें वह सद्‌गति प्रदान की जो बड़े ही पुण्यात्माओं और सौभाग्यशालियों को प्राप्त होती है। कितने हैं वे भाग्यशाली जिन्होंने जीवन में पतन नहीं जाना ? किन्तु श्री लालबहादुर शास्त्री ने जीवन में केवल बढ़ना जाना, पीछे हटना नहीं। उनकी यह गति धीमी अवश्य रही, किन्तु दृढ़ता, संकल्प और विश्वास से पूर्ण। इसी पुण्य की यह प्रभाव था कि उनका देहान्त उस समय हुआ जब वह अपनी कीर्ति के शिखर पर थे और यह कीर्ति उन्होंने डेढ़ साल

के पलक झपकते समय में अर्जित की थी। इसलिए सचमुच ही कितना धन्य था वह जीवन। कितना सार्थक था वह जीवन और कितना महान था वह जीवन।

किन्तु उस महान जीवन के बदले आज हमने जो शान्ति पाई है, वह हमें बड़ी मंहगी पड़ी है। इसके लिए हमने अपनी आखों के तारे दो प्रधान मंत्रियों को खोया है। इस यज्ञ में हमारे राष्ट्र की दो महती आत्माओं की आहुति चढ़ी है। फिर भी हमें नहीं मालूम कि यह शान्ति कितने दिनों की है। शत्रु को हृदय नहीं होता और वह हमारे बलिदानों को अपनी उन्नति का सोपन बनाने में सुख की अनुभूति करता है। इसलिए हमें सावधान रहना है कि जिस शान्ति की वेदी पर पहले श्री जवाहरलाल नेहरू की बलि चढ़ी और अब श्री लालबहादुर शास्त्री की चढ़ी है, वह शान्ति हमारे हाथों से फिसल न जाए। उसकी रक्षा करना हमारा सबसे बड़ा धर्म है और आज अपने शान्ति योद्धा के निधन से सन्तप्त हम भारतवासियों को मिलकर यही संकल्प करना है कि हम राष्ट्र की शान्ति की, राष्ट्र की प्रतिष्ठा की हर मूल्य पर रक्षा करेंगे और अपने लाड़ले राष्ट्रनायकों के बलिदानों को व्यर्थ नहीं जाने देंगे। परमेश्वर हमें इतनी शक्ति दे।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

किसे मालूम था कि ताशकन्द घोषणा के बाद ही शान्ति नीति का हमारा सक्षम और कुशल निर्माता हमारे बीच से उठ जायगा। ताशकन्द घोषणा वह धरोहर है जो दिवंगत प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जनगण को सुपुर्द कर गये हैं। अपने जीवन की महती सफलता और उपलब्धि के क्षणों में उन्होंने हमसे विदा ली।

पारस्परिक झगड़ों और मतभेदों को सुलझाने में शास्त्री के निधन के लिए प्रधान मन्त्री शास्त्री ने जो संघर्ष किया उसने हमारे देश के गौरव को और भी उज्जवल बना दिया। विदेश नीति के अन्य किसी सरकारी प्रवर्त्तन से यह संघर्ष कहीं ज्यादा कठिन, लेकिन श्रेष्ठ और सफल सिद्ध हुआ।

भारत एक शान्ति प्रेमी देश है जो गुटनिरपेक्षिता और धर्म-निरपेक्षिता की नीतियों पर दृढ़ता से बढ़ता रहा है। विश्व में युद्ध की ज्वालाएँ भड़काने वालों ने बार-बार भारत को विचलित करने का प्रयत्न किया। सच तो यह है कि इन लोगों को तो लालबहादुर शास्त्री का ताशकन्द जाना भाया और न ताशकंद घोषणा पर हस्ताक्षर करना।

कौन नहीं जानता कि ब्रिटेन के प्रधान मंत्री विल्सन ने नोयलबेकर के नाम अपने पत्र को ठीक उस समय प्रकाशित किया जब भारत और पाकिस्तान के बीच

ताशकन्द वार्ता सबसे संगीन दौर से गुजर रही थी ? कौन नहीं जानता कि इस पत्र में क्या कहा गया था और उसका क्या मकसद था ?

इतना ही नहीं अमरीकी ब्रिटिश पत्रकारों ने ताशकन्द वार्ता को विघटित कराने में अपनी ओर से कुछ नहीं उठा रखा। उन दिनों के वाशिंगटन पोस्ट, टाइम्स और गार्जियन जैसे पत्रों की टिप्पणियाँ भुलाई या नजरन्दाज नहीं की जा सकती। प्रधान मंत्री शास्त्री के प्रति ब्रिटिश पत्र पत्रिकाओं के घृणित रुख से क्रुद्ध जनता इन अखबारों को जला रही है।

साथ ही इस तथ्य की ओर भी आँखें बन्द नहीं की जा सकती कि जिस समय ताशकन्द वार्ता जारी थी तभी चीन के नेतृत्व ने भारत के नाम उकसावे भरा पत्र भेजा जिसमें भारत पर यह आक्षेप लगाया था कि वह चीन की सीमाओं का उलंघन कर रहा है। क्या इसका मकसद सिवा इसके कुछ और हो सकता था कि ताशकन्द में फूट और विभेद की ताकतों के हाथ मजबूत हों और वार्ता सफल न होने पाये ?

लेकिन ताशकन्द वार्ता के इन विरोधियों को मुंह की खानी पड़ी। न्याय और प्रभुसत्ता के सिद्धांतों पर अडिग भारत के प्रधान मंत्री ने शांति प्रयासों को सफल बनाने में कुछ भी नहीं उठा रखा। अन्ततः उनकी विजय हुई।

यहां यह कह देना जरूरी है कि १० तारीख की रात को घोषणा का समाचार मिलते ही जहां देश के एक छोर से दूसरे छोर तक सन्तोष और सराहना की लहर दौड़ गयी वहाँ इक्के-दुक्के लोग बेसुरा राग अलापने की हिमाकत से बाज नहीं आये। जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेताओं ने 'इसे भारतीय हितों के प्रतिकूल' कहा।

लेकिन प्रधान मंत्री शास्त्री के शान्ति के लिए अथक प्रयासों की अनूभूति से विह्वल लाखों लाख जनता उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने जब उमड़ पड़ी तो पता चला कि श्री शास्त्री के जीवन और उनके श्रेष्ठतम कृतित्व के प्रति जनमानस में कितना गहरा और अटूट सम्मान है।

शांति का मार्ग कठिन मार्ग है। लेकिन यह मार्ग ही मानवता के लिए सुख और समृद्धि का मार्ग है। दूसरा है विनाश का मार्ग। ताशकन्द घोषणा के रूप में प्रधान मंत्री शास्त्री हमारे और संसार के हाथों में एक ऐसी थाती सौंप गये हैं जिसे सहेज कर रखना और विकसित करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली हो सकती है। दिवंगत प्रधान मंत्री का आदेश था, "हमने अपने देश की रक्षा के लिए जिस तरह से संघर्ष किया अब हमें शान्ति की रक्षा के लिए भी उसी तरह संघर्ष करना है।"

श्री शास्त्री के इस आदेश का यह देश पूरी दृढ़ता से पालन करेगा।

— जनयुग, नई दिल्ली,

आज हम फिर एक बार अपनी मनः स्थिति को काबू में नहीं रख पा रहे हैं। आज हम अनाथ की संज्ञा से घनीभूत हो अपने तप, यश, मान की खुली कसौटी पर लुटे-लुटे से मार्ग-विहीन होकर अपनी सुध-बुध खो बैठे हैं। कारण बहुत स्पष्ट है। हम न केवल अपने वीरों के खून से सींचे हाजीपीर, कारगिल आदि को खो बैठे वरन् गहरे कूटनीतिक विक्षोभ से ग्रस्त अपने प्रिय जवाहर के उत्तराधिकारी और जनता के लाल लालबहादुर को भी खो बैठे।

ताशकंद का रूप सुनहला मृगमारीचिकायुक्त सौंदर्य हमारे प्रिय लालबहादुर को उस समय खा गया जब भारत की ४६ करोड़ जनता अपने भाग्य विवेक की थाती को बड़े सन्तोष के साथ दिल थाम कर ललचाये नेत्रों से देख रही थी; लेकिन ताशकंद का कुहरा अन्धकार में बदल गया, कोसीजिन अपने अथक परिश्रम की परिणति दुखान्त रूप में देख रो उठे, मास्को से लेकर वाशिंगटन की वीथिकाओं में अभी-अभी संयुक्त विज्ञप्ति का आखिरी स्वर सुनाई ही दे रहा था कि आकाशवाणी की शोक ध्वनि से समस्त मानवता का अन्तराल कांप उठा। भारत के प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री रात्रि के घोर अन्धकार में ४६ करोड़ को अनाथ छोड़ कर चले गए! आखिर क्यों?

क्या शास्त्री को हाजी पीर और कारगिल की वापसी के लिए किसी ने दबाव से सहमत किया? क्या ताशकंद का वायुमण्डल शास्त्री के स्वास्थ्य के लिए मंहगा पड़ा? अथवा क्रूर काल ही इस अनहोनी घटना में सहायक हो गया? यह सब आखिर जन मानस में एक प्रश्नचिन्ह बन कर हमारी बुनियाद को बार-बार कुरेद रहे हैं।

हम विवश हैं उत्तर कैसे दें, कहाँ से खोजें? आज तो ४६ करोड़ ही हरिकृष्ण, चाह्वाण और स्वर्ण सिंह से पूछ रहे हैं—बताओ चाह्वाण कहाँ हैं हमारे बाबूजी आखिर तुम रक्षा करने में विरत ही रहे। तुम तो इस देश के रक्षक थे। तुम तो इस देश के रक्षक थे। तुम तो शास्त्री के दायें-बायें बनकर गये थे। न वहाँ तुम संसद में दिए आश्वासन को रक्षा कर सके और न प्रिय प्रधानमंत्री की। आखिर क्यों?

ललिता के सुनहरे सपने आज आंसुओं में बदल गए हैं, सुनील और अशोक की करुण चीत्कार बार-बार पुकार-पुकार कर कह रही है आखिर बाबू जी ने एक

घण्टे पूर्व ही तो आपने भारत वापिस आने के लिए वायदा किया था। फिर क्यों अपने वायदे से मुकर गए, क्या हो गया तुम्हारी वाणी को ? क्यों मूक हो शास्त्री जी, बोलो कुछ तो बोलो ॥ हमें आज्ञा दो हम एक अय्यूब नहीं हजारों अय्यूब का मान मर्दन कर देंगे।

लेकिन पालम का वह वैभव भी आज आंसू बहा रहा है जिसने उस दिन आपको बड़े शान के साथ दिग्विजय के लिए विदा किया था, आज पालम का गौरव भी धूल-धूसरित हो गया, वह एक नहीं अनगिनत आंसुओं से अपने गौरव को खण्डित होते देख अपने उस दिन के वैभव को छलनी होते देख रो उठा है।

भारत का प्रधान मंत्री गांव का वह साधारण जिसे कभी नाव पार करने के लिए पैसे नहीं, धोती कुर्ता का सीधा सादा भारतीय, भारतीयता के स्वरूप को लंदन, काहिरा, मास्को, रंगून, काठमाण्डू और ओटावा के प्राङ्गणों में अक्षुण्ण और अनन्त रख सका। ऐसा था देश का प्रधान मंत्री।

—प्रावदा, अलीगढ़

शेष स्मृतियाँ

भारतीय उपमहाद्वीप के पेचीदा और कठिन संघर्ष को समाप्त करने के लिए ताशकंद में जो महान कार्य सम्पादित हुआ उसमें सहज बुद्धि तथा यथार्थवाद की विजय हुई। ताशकंद घोषणा शास्त्री जी के जीवन की सबसे बड़ी विजय है, यह उनके जीवन के अमर स्मारक के रूप में जीवित रहेगी। यह घोषणा शास्त्री जी की राजनीतिक वसीयत समझी जायगी।

बिना किसी प्रकार की अतिरंजना के यह कहा जा सकता है कि सोवियत उज़्बेकिस्तान की राजधानी ताशकन्द पर पिछले सात दिनों तक समस्त मानव जाति की दृष्टि लगी रही। ताशकन्द वार्ता के सफल की हर ओर प्रतीक्षा की जा रही थी। सोवियत सरकार को पहले से वह प्रतीक्षा निष्फल नहीं हुई। एशिया के दो संघर्षरत देशों, भारत और पाकिस्तान के नेता ताशकंद आये। सोवियत सरकार ने उनका हर तरह से स्वागत सत्कार किया। ताशकन्द वार्ता सफल हुई।

दोनों पक्षों में संघर्ष बन्द करने तथा अन्य सम्बन्धित विवादों को हल करने का समझौता हुआ। यह समझौता उन दोनों देशों के लिए ही नहीं, भावी अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधि के लिए भी बहुत महत्व रखता है। आज प्रश्न यह है कि जब साम्राज्यवाद तथा उपनिवेश का अन्त निश्चित हो, उनके चंगुल से एक के बाद एक देश मुक्त हो रहे हों, तो ऐसी नयी परिस्थितियों में क्या मानव जाति ऐसा विवेक दिखाने योग्य है जिसमें पुरानी व्यवस्था के फलस्वरूप परस्पर विवादों को हल करने के लिए शक्ति के उपयोग को अवांछित घोषित किया जा सके? या अब भी पुरानी साम्राज्यवादी व्यवस्था, जो देशों को गुलाम बनाने का लोभ नहीं छोड़ पा रही है, देशों के बीच फूट डालकर युद्ध के बीज बोने और अपना उल्लू सीधा करते रहने में ही सफल होती रहेगी? आज संसार के अनेक देशों की जनता साम्राज्यवादी बंधनों से मुक्त होकर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो रही है। यही जनता ताशकंद से शुभ समाचार की प्रतीक्षा कर रही थी। ताशकंद घोषणा ने उसकी आशाओं को चरितार्थ कर दिया।

जाहिर है, दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो ताशकन्द से कुछ और ही आशा लगाये बैठे थे। उनकी आशाएँ पाकिस्तान और भारत के जनगण के प्रतिकूल थीं। कुछ पश्चिमी कूटनीतिज्ञों ने तो ताशकन्द वार्ता के प्रारम्भ होते ही यह

भी कहा था कि यह सम्मेलन गलत समय पर, गलत स्थान पर और गलत मध्यस्थ के साथ प्रारम्भ हुआ है। इसलिए उस प्रतिकूल आशा की बात सुनकर आश्चर्य भी नहीं होना चाहिए। प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ जिन क्षेत्रों पर कुछ समय तक शासन करती रहीं और जो अब उनके चंगुल से बाहर निकल चुके हैं, आज भी उनके अन्तर्गत विरोध और फूट को पनपते देखना चाहती हैं। ऐसी स्थिति में यदि किसी सम्मेलन से उन प्रतिक्रियावादी शक्तियों की आशाओं के प्रतिकूल नतीजे निकलें तो वे भला कैसे खुश हो सकती हैं। लेकिन शान्ति प्रेमी जनता को यह बात नितान्त स्वाभाविक लगी कि सोवियत संघ इन दो देशों के नेताओं का सम्मेलन आयोजित करता और अपने ही भू भाग में उसके लिए हर तरह की तैयारी करता।

सोवियत संघ अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों के क्षेत्र में प्रगतिशील सिद्धांतों की अडिग भाव से रक्षा करता है। वह राष्ट्रों के बीच समानता, एकदूसरे के मामले में हस्तक्षेप न करने तथा क्षेत्रीय विवादों के हल के लिए शक्ति का प्रयोग न करने के सिद्धांतों की रक्षा करता है। यह प्रवृत्ति सोवियत राज्य की सामाजिक प्रकृति का स्वाभाविक परिणाम है। जैसा कि कुछ विरोधियों का प्रचार है, सोवियत संघ जब भी कभी ताशकंद जैसी कोई पहल दिखाता है तो उसमें अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने या अन्य किसी तरह के स्वार्थ की भावना क्रियाशील नहीं होती। ऐसा करते समय वह समस्त मानवजाति के हित से प्रेरणा ग्रहण करता है, वह राष्ट्रों के बीच शान्ति सम्बन्धों को दृढ़ करने की भावना से प्रेरित होकर ऐसा करता है ताकि वे साम्राज्यवाद के चंगुल से शीघ्रातिशीघ्र मुक्ति पा सकें और प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकें।

सोवियत संघ ने ताशकन्द सम्मेलन का आयोजन किया। उधर अमरीका वियतनाम में अपने हस्तक्षेप के लिए संसार भर में समर्थकों की तलाश कर रहा है। अनेक पत्रकारों ने इन दोनों स्थितियों की तुलना की है और ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचे है जो अमरीका के पक्ष में नहीं। वियतनाम सम्बन्धी अमरीकी गतिविधि से स्पष्ट हो चुका है कि एक उच्छृङ्खल आक्रामक एक ओर तो वियतनामी जनता के विरुद्ध रक्तपात मचाये हुए है, दूसरी ओर वह दुनियाँ में घूम-घूमकर समर्थक ढूँढ़ रहा है और अपनी नाक बचाने की कोशिश कर रहा है। अलजीरिया का पत्र अल मुजाहिद कहता है कि वियतनाम में शान्ति तभी कायम हो सकती है, जब अमरीका को यह विश्वास हो जाय कि उसकी सैनिक कारवाइयों का कोई लाभ नहीं। एशिया में शान्ति नियामक के भेष में अमरीका निर्दय शक्ति का प्रयोग करके सड़ी-गली व्यवस्थाओं की रक्षा करना चाहता है।

लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन से सोवियत जनगण तथा समस्त शान्तिप्रिय मानवता गहरे शोक में डूब गयी है। भारत का यह महान राजनेता अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक अपनी जनता के सुन्दर भविष्य के लिए संघर्षरत रहा।

ताशकंद में इतिहास ने एक महत्वपूर्ण पग बढ़ाया है। सोवियत सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप शान्ति के वातावरण का निर्माण हुआ है। भारत-पाक नेताओं की संयुक्त घोषणा में इसके लिए सोवियत सरकार को बधाइयाँ दी गयी हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के दो महान राष्ट्रों के संबंधों में नयी कोंपलों की आशा बढ़ी है। संसार की जनता भलीभाँति समझती है कि कोंपलें तमाम तूफानों के बावजूद बढ़ेंगी, तथा भारत और पाकिस्तान के जनगण के बीच मैत्री तथा सहयोग के पत्र पुष्प खिलेंगे।

ताशकन्द घोषणा के जिस आनन्द का वातावरण निर्मित हुआ वह प्रधानमंत्री शास्त्री के निधन से खण्डित हो गया। शास्त्री जी का जीवन भारतीय उपमहाद्वीप के जनगण का सुख-समृद्धि के लिए एक संघर्ष का जीवन रहा। उनकी स्मृति उनके उत्तराधिकारियो का आह्वान करती है कि वे भारत तथा पाकिस्तान के जन-गण की मैत्री सुदृढ़ करने के उस कार्य को आगे बढ़ाते रहें जिसका शुभारम्भ इतनी सफलता के साथ ताशकन्द में सम्पन्न हुआ।

शास्त्री जी अब नहीं रहें, लेकिन उनका नाम इतिहास के उज्ज्वल अध्यायों में अंकित रहेगा और समस्त मानवजाति आभार तथा प्रशंसा की भावना के साथ उनका सदा स्मरण करती रहेगी।

—एस० वेग्लोव,

शास्त्री जी के दुखद तथा आकस्मिक निधन के बाद उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ११ जनवरी को ताशकंद में सोवियत प्रधानमंत्री ने कहा 'अभी कल ही मैंने शास्त्री जी से दो घंटे तक बातचीत की और उन्होंने समझौते पर सन्तोष व्यक्त किया।' शास्त्री जी के वे शब्द अब भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं। वे शब्द आज के युग के एक महान व्यक्ति, एक महान मानवतावादी के मुंह से निकले थे।

शास्त्री जी ने ताशकंद की एक ऐतिहासिक घोषणा पर हस्ताक्षर करने के बाद भारत के प्रतिरक्षामंत्री श्री चह्वाण से कहा था, और ये उनके अन्तिम शब्द थे, 'हमने अपने देश की रक्षा के लिए जिस तरह से संघर्ष किया, अब हमें शान्ति की रक्षा के लिए भी उसी तरह से संघर्ष करना है।' शास्त्री जी जैसे एक महान मानवतावादी के अलावा ऐसी भावना और कौन व्यक्त कर सकता था?

संयुक्त घोषणा ने, जिस पर प्रधानमंत्री शास्त्री और राष्ट्रपति अयूब ने हस्ताक्षर किये, उस सात दिवसीय वार्ता को सुफल बना दिया। जिसके दौरान दोनों पक्ष आपस में और सोवियत प्रधानमंत्री कोसिजिन से मिलते रहे।

हम सबको भलीभाँति याद है कि भारत तथा पाकिस्तान के पास 'उच्चतम स्तर' पर मिलने का निमंत्रण सोवियत संघ ने उस समय भेजा था जब दोनों देशों में युद्ध अपने उग्र रूप में चल रहा था। उस समय यही लगता था कि यदि दोनों देशों को राष्ट्र संघ के युद्ध विराम सम्बंधी प्रस्ताव पर सहमत कर लिया जाय तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। कुछ लोगों को यह भी सन्देह था कि दोनों देश सोवियत निमंत्रण स्वीकार भी करेंगे या नहीं। बाद को जब पाकिस्तान ने राष्ट्रपति अयूब खां और भारत के प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने अपनी स्वीकृति भेज दी तो लोग यह सन्देह करने लगे कि दोनों पक्षों का निकट भविष्य में मिलना सम्भव नहीं। फिर जब ताशकंद सम्मेलन भी शुरू हो गया तो भी सन्देहवादियों ने अपनी अटकल-बाजियाँ बन्द नहीं की। सोमवार को घोषणा पर हस्ताक्षर हुआ और रविवार तक समाचार एजेंसियों की तारों में निराशा के अलावा और कुछ मिलता ही न था।

अब हमको यह ज्ञात हो गया कि सद्भावना तथा सहज बुद्धि की विजय की सम्भावना में विश्वास करना कितना आवश्यक होता है। ताशकंद के बाद भारत और पाकिस्तान को निस्सन्देह रूप से बहुत कुछ ऐसा करना है ताकि ताशकंद घोषणा के सिद्धान्तों पर अमल किया जा सके। ये सिद्धान्त वह आधार प्रस्तुत करते हैं जिन पर चलकर दोनों देशों के उन सम्बंधों को सामान्य बनाया जा सकता है जो कल तक युद्ध के कारण जटिल लग रहे थे।

ताशकंद घोषणा में पाकिस्तान और भारत ने राष्ट्र संघ की घोषणा में अपने विश्वास की पुष्टि करते हुए यह स्वीकार किया है कि विवादों को हल करने के लिए शक्ति का प्रयोग नहीं होगा, बल्कि उनके शान्तिपूर्ण हल के लिए प्रयास किया जायगा। प्रधानमंत्री शास्त्री तथा राष्ट्रपति अयूब सहमत हुए कि एक हफ्ते के अन्दर वे अपनी सशस्त्र सेनाओं को ५ अगस्त १९६५ की स्थिति पर यानी युद्ध-पूर्व की स्थिति पर वापस ले आयेंगे। दोनों देशों के सम्बंधों को एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने के सिद्धान्त के आधार पर विकसित किया जायगा। एक दूसरे के विरुद्ध प्रचार को बढ़ावा नहीं दिया जायगा, साथ ही ऐसे प्रचार का शुभारम्भ किया जायगा जिससे भारत और पाकिस्तान के जनगण के बीच मैत्री की भावना का विकास हो सके। सामान्य कूटनीतिक गतिविधि प्रारम्भ की जायगी तथा आर्थिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पुनः प्रारम्भ किया जायगा। युद्ध-बन्दियों की अदला-

बदली तथा विस्थापितों की समस्या का हल ढूंढ़ना शुरू किया जायगा और तमाम स्तरों पर सम्पर्क तथा सम्मेलन का क्रम जारी रखा जायगा।

ताशकंद घोषणा की यही मूल भावना है। यह भारत और पाकिस्तान के बीच शान्ति की सच्ची घोषणा है। आज हम एशिया में उस कठिन संघर्ष के अन्त के महत्वपूर्ण चरण के दर्शन कर रहे हैं जिससे ६ महीने पहले एशिया तथा समस्त संसार की शान्ति को खतरा पैदा हो गया था।

ताशकंद में प्रधानमंत्री शास्त्री तथा राष्ट्रपति अयूब खां ने जिस राजनीतिक विवेक का परिचय दिया उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम है। मुश्किलों के हल के लिए उन्होंने जिस तरह के रचनात्मक फैसले पर पहुंचने की कोशिश की उससे दोनों देशों के जनगण का हित-साधन होता है।

—वी० आर्दातोव्स्की

अठारह महीनों के प्रधान मंत्री काल में जो लोकप्रियता श्री लालबहादुर शास्त्री ने प्राप्त की उसकी मिसाल कम ही देखने को मिलेगी। नेहरू जी के बाद जब वे प्रधान मंत्री बने तो तरह तरह की आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं। दल के नेता के रूप में उनका चुनाव जिस तरह हुआ, उससे भी यह संदेह था पता नहीं शास्त्री जी कहां तक स्वतंत्र निर्णय कर सकेंगे? जो समस्याएँ उन्हें विरासत में मिलीं वह भी कुछ कम नहीं थीं। पर अपनी सूझबूझ से वह उनमें धीरे-धीरे सफल होते जा रहे थे। भारत और पाकिस्तान का संघर्ष उनके नेतृत्व की सबसे बड़ी कसौटी थी। लेकिन उसमें वह न केवल खरे ही उतरे अपितु उनका व्यक्तित्व पहले से भी कहीं अधिक चमक उठा। देश का हार्दिक समर्थन इसमें जहां उन्हें मिला वहां अपने संगठन में भी हाथ खोलकर काम करने का अवसर उन्हें मिला। इसी से कुछ महत्वपूर्ण निर्णय भी उन्होंने स्वतंत्र रूप में लिए।

एक सामान्य परिवार में जन्म लेकर कोई व्यक्ति अपने परिश्रमी स्वभाव और सेवाओं से कैसे उन्नति की चरमसीमा तक पहुंच सकता है, शास्त्री जी इसके प्रमाण थे। प्रधानमंत्री बनने के बाद उनमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। मिलने जुलने का वही पुराना ढंग, कहीं भी कोई उन्हें पकड़कर खड़ा हो जाय। यह अन्त तक चालू रहा। नेहरू जी और शास्त्री जी में प्रधान मंत्री बनने के बाद एक बड़ा अन्तर देखा जा सकता था।

पण्डितजी से मिलने पर बात थोड़ी और तत्व की होनी चाहिए थी। मिलनेवाला विस्तार में अथवा वाक्चातुरी दिखाने में यदि समय लगाता था तो उनके कुछ ऐसे

संकेत थे जिनसे वह उसे समझा देते थे अब मेहरबानी समाप्त करो। किसी किसी को तो झुंझलाकर स्पष्ट कह भी देते थे। पर शास्त्री जी की सरलता का लाभ उठाकर कुछ लोग उनकी जिम्मेदारी, समय और स्वास्थ्य का भी ध्यान नहीं रखते थे। लेकिन जो जीवन भर सुनने का आदि रहा हो आँखिर वह अपने स्वभाव में एक दम कैसे परिवर्तन कर लेता ? अब कुछ धीरे-धीरे वह भी उसी मार्ग पर आने का प्रयत्न अन्त में करने लगे थे।

जीवन में स्वयं जैसे वह कृत्रिमताओं से परे थे, उसी प्रकार शासन में भी बनावट से उन्हें बेहद चिढ़ थी। फाइलों में लंबा उलझना उन्हें पसन्द नहीं था। भारत का अधिकांश भाग गावों में रहता है। स्वतंत्रता के अठारह वर्ष बाद भी ग्रामीण जीवन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। उनका जीवन स्तर उठाने को जो धन दिया जाता है उसका अधिकांश भाग बीच में ही अटक कर रह जाता है। जो अधिकारी गावों की उन्नति के लिए नियुक्त होते हैं। वह भी अपनी पेंट को पहले दाग और सलवटों से बचाने का प्रयत्न करते हैं। शास्त्री जी इस बात को अच्छी तरह समझ गये थे। कई बार इसके संकेत भी उन्होंने भिन्न भिन्न स्थलों पर दिये। लेकिन प्रशासन तन्त्र में जब तक ऊपर से ही परिवर्तन न हो, तब तक यह सब संभलना कठिन है। संभव है इसीलिए एक मजबूत प्रशासनिक सुधार आयोग भी कुछ दिन पूर्व उन्होंने बनवाया। लेकिन उसके सुझाव सुनने को यह न रह सके।

जानबूझकर संघर्ष मोल लेना बुद्धिमत्ता नहीं। लेकिन यदि संघर्ष स्वयं आ टकराये तो उससे भागना भी समझदारी नहीं। कच्छ में हुए पाकिस्तानी अतिक्रमण और आक्रमण को उन्होंने एक बार टालना ही पहले उचित समझा। पर पाकिस्तान तो इसे भारत की दुर्बलता समझ बैठा। विवश होकर कुछ समय बाद फिर उसे दूसरा सबक देना भी आखिर तै हुआ। इस संघर्ष में देश ने निकट से उन्हें देखा।

वे नाम के बहादुर नहीं थे। काम में भी बहादुर थे। देश और व्यक्तिगत समस्याओं का संग्रह करते करते कभी कभी अपनी ही गठरी के बोझ से नीचे दब जाते थे। समस्याओं को देर तक लटकाये रखना कुशल शासक का चिन्ह नहीं होता। भले ही कोई सहमत हो या न हो, इसका इधर या उधर हल करके आगे बढ़ने में ही शास्त्री जी अधिक विश्वास रखते थे। उन्होंने उसी भार को हलका करने के लिए पाकिस्तान के सामने शस्त्र का भी सहारा उठाया और ताशकन्द जाकर किसी सम्मानपूर्ण समझौते पर पहुँचने के लिए आमंत्रण भी साहस के साथ स्वीकार किया।

ताशकन्द में शास्त्री जी की मृत्यु का वह दुखद प्रकरण देर तक सबको कष्ट देता रहेगा जिसमें डाक्टर बुलाने भी उन्हें स्वयं जाना पड़ा। साढ़े ग्यारह बजे जब उन्होंने

दिल्ली से फोन पर स्वराष्ट्रमंत्री और अपने घरवालों से बातें कीं, उसके बाद ही उन्हें तकलीफ बढ़ गयी। पर जैसा उनका स्वभाव था, सोचते रहे होंगे अभी क्यों किसी को कष्ट दिया जाय? हो सकता है आराम करने से दर्द जाता रहे। जब तकलीफ बहुत ही बढ़ गयी तब फिर बगल के कमरे में सोये डाक्टर को स्वयं जाकर उन्हें जगाना पड़ा।

ताशकन्द समझौते से देश एक बड़े कठिन मोड़ पर आकर खड़ा हो गया है। इसको कैसे कार्यान्वित करना था, उसे बताने वाला अब कोई नहीं रहा। पाकिस्तानी प्रवक्ता ने 'सेनाओं की वापसी में घ · ठये न हीं आते यह तो ताशकन्द में ही कह दिया था, अब जनरल अयूब ने कहा है कि कश्मीर उन स्थानों में नहीं है जो असंदिग्ध रूप से भारत का भू-भाग माने जाते हैं। उसे लेने के मार्ग में ताशकन्द समझौते को वे बाधक नहीं मानते। धीरे-धीरे और भी शर्तों से वह बाहर निकलने का प्रयत्न करेंगे। नेहरू लियाकत समझौता और कच्छ समझौते की जो स्थिति पाकिस्तानियों की निगाह में थी, ताशकन्द समझौता भी निश्चय ही वैसा रूप लेगा। यों भी समझौता के इतिहास में सदा भले आदमी और राष्ट्र ही घाटे में रहते आये हैं। अब देखना है कि इसका क्या परिणाम बैठेगा? शास्त्री जी के उत्तराधिकारी और जिस संगठन के वह नेता थे उनका दायित्व इसमें बहुत बढ़ गया है।

—प्रकाशवीर शास्त्री

रंगमंच के प्रति मेरी सहज रुची रही है। अनेक बार मैं नाटकों में उतर चुका हूँ। हरिश्चन्द्र कालेज में भी मैंने नाटक की योजना बनायी। प्रधानाध्यापक पंडित रामनारायण मिश्र जी ने सहर्ष अनुमति दे दी। अभिनय के लिए माधव शुक्ल का प्रसिद्ध नाटक 'महाभारत' चुना गया। नाटक का रिहर्सल शुरू हुआ तो लालबहादुर और त्रिभुवन मेरे पास आये। बोले हम भी नाटक में भाग लेना चाहते हैं। उनका उत्साह देखकर इन्हें भी लोहार और बढ़ई का पार्ट दे दिया गया।

नाटक बड़ी धूम-धाम से खेला गया। रामकटोरा पर रंगमंच बना था। नगर के विशिष्ट नागरिकों एवं अधिकारियों के समक्ष नाटक अभिनीत हुआ। नाटक पूर्ण सफल रहा। नाटक की सबसे बड़ी विशेषता थी बाल अभिनेता लालबहादुर और त्रिभुवन का सहज स्वाभाविक अभिनय, जिसको दर्शकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। लालबहादुर की लोहार की भूमिका का एक वाक्य मुझे आज भी अच्छी तरह याद है—

इतने दिना पर सुध ले गोसाइयाँ,
हमके दिहेन रोजगार।

कौन जानता था कि वह वाल अभिनेता, किसी दिन महान् नेता समस्त भारत का प्रणेता बनेगा ?

हरिश्चन्द्र कालेज का मैदान पटाव का है। उसमें पत्थर कंकड़ और ढेले बिखरे थे, जो पैर में चुभते थे। मुझे खेल स बहुत प्रेम था। प्रतिदिन खेल के मैदान में जाया करता था। एक दिन मैंने इन बच्चों से कहा कि खेल के मैदान को सफाई होनी चाहिए। मेरे कहने भर की देर थी। तीन दिन के अन्दर ही कंकड़ पत्थर का एक कोने में ढेर लग गया। खेल का मैदान साफ हो गया। श्रमदान में किसी ने जरा भी संकोच नहीं किया।

हरिश्चंद स्कूल मे पढ़ते समय लालबहादुर दारा नगर में अपने मौसा श्री रघुनाथ प्रसाद जी के यहाँ रहते थे। कभी कभी तैरकर गंगा पार कर अपने घर रामनगर जाया करते थे। इन परिस्थितियों में विद्याध्ययन करते हुए जब बालक लालबहादुर ने महात्मागांधी के आह्वान पर स्कूल छोड़ने का निश्चय किया तो सचमुच मुझे बड़ा आघात लगा।

एक दिन हमलोग खेल के मैदान में बैठे हुए थे। वहाँ लालबहादुर और त्रिभुवन ने आकर चरण स्पर्श किया और कहा—मास्टर साहब अब आज्ञा दीजिये।

१६२१ का महात्मा गांधी का आन्दोलन शुरू हो गया था। उन्होंने छात्रों को स्कूल छोड़कर असहयोग आन्दोलन में भाग लेने का आदेश दिया था। मैं बहुत घबड़ाया। मेरे ये दोनों छात्र बहुत मेधावी और प्रतिभाशाली थे और अपनी कक्षा में बहुत तेज थे। मैंने समझाया पहले हाईस्कूल पास कर लो, तब स्कूल छोड़ो। तुम दोनों को स्कालरशिप भी मिल सकता है। उस समय सत्याग्रह करने पर तुम्हारा बहुत नाम होगा।

दोनों ने कहा—'अच्छा मास्टर साहब, विचार कर जवाब देंगे।'

दूसरे दिन फिर आये। बोले—'मास्टर साहब हमलोगों ने विचार कर लिया है। गांधी जी की पुकार है। अब हमलोगों का मन यहाँ नहीं लग रहा है। दोनों बालकों ने मेरे पैर छुए और हमलोगों ने उन्हें गले लगाकर सच्चे हृदय से आशीर्वाद देकर विदा किया। पर इनका स्कूल छोड़ना हमें जरा भी अच्छा नहीं लगा। मैं अपने इन दो मेधावी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना किये हुए था।

इसके बाद ये कई बार जेल गये पर इनके ज्ञानार्जन की भूख नहीं मिटी और अवसर मिलते ही काशी विद्यापीठ में भरती होकर शास्त्री की परीक्षा पास की और समय आने पर उत्तरप्रदेश के मंत्री भी बन गये।

लालबहादुर शास्त्री का अपने विद्यालय के प्रति अपूर्व स्नेह बराबर बना रहा। एक बार हमलोग हरिश्चंद कालेज को डिग्री कालेज की मान्यता दिलाने के लिए लालबहादुर शास्त्री से लखनऊ में मिले। उस समय वे प्रदेश के गृहमंत्री थे। शिक्षा विभाग के सेक्रेट्री श्री० बी० एन० झा जांच के लिए नियुक्त हुए थे। उन्होंने तुरंत झा जी को फोनकर कहा—'हरिश्चन्द हमारा विद्यालय है। अच्छी रिपोर्ट दीजिएगा' और कालेज को डिग्री कालेज की मान्यता मिल गयी। शास्त्री जी मेरे सबसे योग्य छात्र थे। आज वे नहीं हैं। लगता है सब कल को घटना है।

—बेनीप्रसाद गुप्त

श्री लालबहादुर शास्त्री मेरे एक ऐसे पुराने मित्र थे कि जिनकी तुलना मैं और किसी के साथ नहीं कर सकता। उनकी ओर से भी मैं कहूं तो यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि निकटता की दृष्टि से उन्हे भी संसार में मेरे जैसा साथी कोई और नहीं मिला होगा। मेरा यह दावा भी बड़ा विकट है किन्तु इसे सिद्ध करने में मुझे कोई कठिनाई नहीं दीख पड़ती। हम हरिश्चंद्र हाई स्कूल, बनारस में ८ वीं कक्षा के सी विभाग में सहपाठी थे और उस समय से लेकर आज तक उनका और मेरा साथ अविच्छिन्न रूप से बना हुआ था। इस प्रकार सन् १९१८ के आसपास के छात्र जीवन से लेकर आज तक भी मेरा साथ था और इसीलिए मैं शास्त्री जी को अपना अनन्यतम मित्र मानने का गौरव अनुभव करता रहा।

हरिश्चंद्र स्कूल के प्रधानाध्यापक थे पं० रामनारायण मिश्र। उनका नाम शिक्षा कला विशारदों में युग-युगों तक स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना का श्रेय भी मिश्र जी को ही था। उनके ही प्रभाव में हमारे स्व० प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का और सभी छात्रों का प्रारंभिक छात्र जीवन प्रारंभ हुआ। हमारी कक्षा ८ के गणित अध्यापक थे स्व० स्वनामधन्य निष्कामेश्वर मिश्र जिनकी आध्यात्मिकता और उदात्त जीवन ने लालबहादुर शास्त्री को बहुत प्रभावित किया। उन्हें नयी प्रेरणा मिली, नयी दिशाएँ मिलीं, जिनके कारण वे राष्ट्र के प्रधान मंत्री के आसन पर विराजमान थे।

श्री मिश्र जी के चरणों में बैठकर श्री टी० एन० सिंह, हमारे श्री लालबहादुर शास्त्री और मैं तीनों ने विपुल व्यावहारिक ज्ञान हासिल किया। हम तीनों उनके मुख से अमृत उपदेश सुना करते थे। उस समय की घड़ियां जब याद आती हैं तो ऐसा लगता है जैसे संदीपन गुरु के आश्रम में कृष्ण और सुदामा साथ-साथ पढ़े हों, वे दिन भुलाये नहीं जा सकते। जब पं० मिश्र जी की धर्मपत्नी स्व० दुर्गादेवी

जी की ममता और स्नेह हम तीनों को विभोर कर देता था और इस आत्मीयता के सामने मिश्र जी की उदारता और दयालुता भी फीकी पड़ जाती थी।

सन् १९२० के आंदोलन में स्कूल-कालेजों की शिक्षा का वहिष्कार हुआ और हम तीनो ने भी पढ़ाई छोड़ दी। यह भी संयोग की बात कि हम तीनों काशी विद्यापीठ में फिर से साथ-साथ पढ़ने लगे। श्री टी० एन० सिंह ने इतिहास आदि विषय पढ़ने प्रारंभ किये तो मैं और शास्त्री जी दर्शन के विद्यार्थी बने। मैं एक श्रेणी आगे था तो श्री लालबहादुर शास्त्री एक श्रेणी पीछे। हमारे आचार्य थे डा० भगवानदास। श्री शास्त्री ने उन्हीं से निपुणता, कुशलता और व्यावहारिक जीवन की शिक्षा पाई थी। डा० साहब द्वारा लिखित अनेक पुस्तकों का शास्त्री जी ने गहरा अध्ययन किया था, परिणामस्वरूप वे वेदान्त दर्शन के निपुण विद्यार्थी बने। वे नहीं रहे ऐसा विश्वास ही नहीं होता।

—अलगूराय शास्त्री

शास्त्री जी डेरे पर उतने कपड़े भी नहीं पहनते थे जितना वे सार्वजनिक समारोहों में पहने दिखाई पड़ते थे। नवम्बर १९३० में वे स्वराज्य भवन में रहते थे। वे दिन संग्राम के थे। वे जेल से वाहर रहकर जेल का जीवन व्यतीत करते थे। सोमा प्रान्त में हुए गोलीकांड की जाँच के लिये प्रेसिडेन्ट पटेल की अध्यक्षता में एक कमेटी कांग्रेस ने नियुक्त की थी। श्री किदवई उनके सेक्रेटरी थे। शास्त्री जी किदवई के सेक्रेटरी थे और उन पर यह भार था कि रिपोर्ट छपवा कर गुप्त रूप से यथा स्थान सबको पहुँचा दें। पुलिस को इसकी जानकारी हो, इसका ध्यान रखना था। इस कार्य के लिये ही उन्होंने स्वराज्य भवन में डेरा डाला था। वहाँ पलंगों की कमी नहीं थी—पर वे जमीन पर सोते थे। कैदियों के समान वनियाइन और कुरता उन्होने पहन रखा था। उनकी कुल सम्पत्ति दो कम्वल थे। एक फर्श पर बिछा रहता था। दूसरा वे सोते समय ओढ़ते थे। वे अत्यंत प्रियभाषी थे। किसी से मिलते जुलते भी न थे। दफ्तर में भी नहीं जाते थे। प्रेस और स्वराज्य भवन यही दो उनके स्थान थे। इतनी सावधानी वरतने पर भी प्रेसीडेन्ट पटेल को भेजी गयी रिपोर्ट की प्रतियाँ पुलिस के हाथ लग गयी। पेशावर के गोलीकांड की चर्चा अब हमारे इतिहास में नहीं होती अतः शास्त्री जी के इस श्रम का किसी को स्मरण नहीं होता। उस समय शास्त्री जी की कीर्ति पताका इलाहाबाद से बाहर नहीं फैली थी। वे लोक सेवक मंडल के सदस्य थे इस कारण अनायास ही शास्त्री जी उच्चस्तर पर आ गये थे। शास्त्री जी का निर्माण सुधारक लाला लाजपत राय, संगठन कुशल श्री

किदवई, निपुण माननीय पन्त, राजर्षि एवं मनस्वी टण्डन और आदर्शवादी श्री नेहरू के संग रहने से हुआ था। इन सबके गुण श्री शास्त्री जी में विद्यमान थे। विद्यापीठ में उनके शिक्षकों में डा० भगवान दास, आचार्य नरेन्द्र देव, डा० सम्पूर्णानन्द, श्री प्रकाश थे। इन सबके व्यक्तित्व का समवेत रूप शास्त्री जी में देखा जा सकता था। पुराने और नये में वे इस कारण सदा मिलन सूत्र देखते थे। वे परित्याग किसी का नहीं करते थे। यह समन्वय की दृष्टि उनको यहीं प्राप्त हुई थी। यही कारण है कि वे राजनीति में सबके विश्वास पात्र थे। डॉ० सम्पूर्णानन्द यदि उनको आत्मीय मानते थे तो गोविन्द वल्लभ पन्त भी उनको अपना विश्वस्त मानते थे। श्री नेहरू के वे कृपाभाजन थे। यह भी इससे प्रकट था कि जब वे निर्विभागीय मंत्री बनाये गये थे, वे प्रधानमंत्री के घर पहुँचे और पूछा था क्या काम करने हैं ? प्रधानमंत्री ने संक्षिप्त पर अर्थपूर्ण उत्तर दिया था—जो कुछ मैं करता हूँ वह सब कुछ करो। शास्त्रीजी ने स्वतः स्वीकार किया था कि श्री नेहरू का वात्सल्य और स्नेह उनको प्राप्त था। २६ जनवरी १९६४ की बात है। राजपथ पर राष्ट्रपति का स्वागत प्रधानमंत्री किया करते थे। इस बार डाक्टरों ने उनको कंबल ओढ़ाकर बिठा दिया था। उठना बैठना मना था। राष्ट्रपति के स्वागत का कार्य तो होना ही था। प्रधानमंत्री ने अपनी पुत्री को शास्त्री जी के पास भेजा और कहा कि वे राष्ट्रपति का स्वागत करें। शास्त्री जी अत्यंत संकोचशील थे। यहाँ भी वे आगे नहीं आना चाहते थे। श्रीमती गांधी दोनों के बीच दो तीन बार आई गई पर शास्त्री जी की नीति इससे नहीं बदली। इस पर श्रीमती गांधी ने सुझाया था कि शास्त्री जी स्वतः उनसे बात करलें यही हुआ। प्रतिरक्षा मंत्री को यह कार्य सौंपा गया। परम्परा सी टूट गई। सरदार बलदेव भी पहले राष्ट्रपति का स्वागत करते थे। प्रधान मंत्री तो उस समय से यह कार्य भी करने लगे जब वे कुछ समय के लिये प्रतिरक्षा मंत्री का कार्य भी करते थे। काम छोटा था पर जब सारे देश में प्रधानमंत्री के चुनाव की चर्चा थी, उस समय वे किसी के मन में ईर्ष्या डाह उत्पन्न नहीं करना चाहते थे। यदि २६ जनवरी को शास्त्री जी राष्ट्रपति का राजपथ पर स्वागत करते तो राजनीतिक क्षेत्र में उसका यही अर्थ लगाया जाता कि श्री नेहरू ने अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया है। पर वे, यह असर पैदा न हो सके इसके लिए यत्नशील थे। जहाँ इससे उनकी दूरदर्शिता प्रकट होती थी वहाँ यह भी प्रकट था कि वे अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए "ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहते थे जिससे किसी का अनायास ही जी दुःखे। व्यवहार में वे कितने समर्थ थे यह इससे स्पष्ट है। सज्जन पुरुषों के बारे में महाभारत में कहा गया है —

सतां सदा शाश्वत धर्म वृत्तिः
सन्तो न सीदन्ति न च व्यथन्ति ।
सन्तो हि सत्येन नयन्ति सूर्यः
सन्तो भूमि तपसा धारयन्ति
सन्तो गतिर्भूत व्यपश्य राजन्—
सभा मध्ये नावसीदन्ति सन्तः ।

शास्त्री जी शिक्षक भी रहे । यह काशी विद्यापीठ के छात्रों के अतिरिक्त शायद ही कोई जानता हो क्योंकि शिक्षक होने का गर्व उन्होंने कभी नहीं किया । पढ़ाते भी थे । अंग्रेजी पढ़ाना छोड़कर वे लोक सेवक मंडल के सदस्य हुये और राजनीति में आये । इसका यह अर्थ है कि शान्त शिक्षक का जीवन उन्हें पसन्द नहीं था । उनको संघर्षमय राजनीतिक जीवन पसन्द था । राजनीति को जीवन बनाने वाले इस देश में अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं । इन अल्प संख्यक लोगों में ही शास्त्री जी एक थे । वे पूर्णतः राजनीतिक एवं राजनयिक पुरुष थे ।

शास्त्री जी वाणीप्रवर (ओरेटर) नहीं थे किन्तु विवाद पटु थे । विनोद की बात का जवाब विनोद से देने में वे चतुर थे । प्रेस कान्फ्रेंस में वे झट जवाब देने में चतुर थे । उनके उत्तर पूर्ण और संक्षिप्त होते थे । वे अधिक से अधिक जानकारी देकर प्रश्नकर्त्ता को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करते थे । वे प्रभावशाली वक्ता थे । शान्त स्वर में ही बोलते थे । उनके भाषण में गर्मी नहीं होती थी । विरोधी पक्ष को वे पहिले ही निशस्त्र कर देते थे । उसकी युक्तियुक्त बात के औचित्य को स्वीकार करके अपने अनुकूल बना लेते थे । यही कारण है कि जब वे १९५२ में केन्द्रीय मंत्रिमंडल में आये तो उनको रेलवे-मंत्री बनाया गया । रेलवेशती मनाई गई और जोनों की भी वृद्धि की गई । जिस दिन उन्होंने दक्षिण पूर्व जोन बनाने का निश्चय किया और उसकी घोषणा की उस दिन की स्मृति आज भी ताजी है । वे अपने परामर्श दाताओं के साथ बैठे थे । यातायात कितना बढ़ गया है और नया जोन बनाने की क्यों आवश्यकता हुई है । इसके समर्थन में आंकड़ा देने के बाद सलाह कर रहे थे परन्तु निश्चय जिस तत्परता और फुर्ती से किया गया था वह अद्भुत और असाधारण था । आवश्यकता पड़ने पर वे जल्दी ही निर्णय कर सकते थे और उसको अविलम्ब क्रियान्वित कर सकते थे । ८ अगस्त १९६४ को उन्होंने इसीलिये कहा था कि सरकार आवश्यकता होने पर कोई कड़ी कारवाई करने से चूकेगी नहीं । सुसुप्तज्वालामुखी प्रतीत हुये थे । उनकी शान्ति विवेकपूर्ण और रचनात्मक थी, निर्दयता की सूचक नहीं । वे निष्ठावान और

पुण्यवती भार्या के पुण्य से पुण्यवान थे। वे गांधी नेहरू पथ और नीति के सम्मिलित रूप थे।

—अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

बच्चों के समारोह में आमंत्रित मुख्य अतिथि ने मुस्कान के साथ कहा—

मुझे इस समारोह में शायद इसलिए बुलाया गया है, कि मेरा कद भी बच्चों जैसा है।

और एक उल्लास भरी हंसी गूंज उठी। एक महापुरुष का विनोद जैसे बालहृदयों का सौरभ समेट कर देश के भविष्य में उषा का रागारुण बिखेर रहा था।

और तभी मुझे महाकवि तुलसीदास के रामचरितमानस की उत्साह और साहसभरी ये पंक्तियां स्मरण हो आयीं—

रविमंडल देखेत लघु लागा।
उदय तासु त्रिभुवन तम भागा॥

मंत्र परम लघु जासु बस, विधि हरिहर सुर सर्व।
महामत्त गजराज कहं, बस कर अंकुस खर्व॥

'रवि-मंडल', 'परम लघु मन्त्र' और 'अंकुश' के रूप में ही मैंने श्री लालबहादुर शास्त्री को समझा।

जब कश्मीर के कुछ षड्यंत्रकारियों ने हजरत बल मस्जिद में पवित्र बाल की चोरी कराकर एक व्यर्थ का वितंडावाद खड़ा किया, तो ऐसा ज्ञात होने लगा कि वह समस्या अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक भयानक अशान्ति उत्पन्न कर देगी। भारतीय मंत्रिमंडल के सदस्य के रूप में श्री लालबहादुर शास्त्री ने इसकी संभावनाओं को पूर्ण रूप से समझा और वे तुरन्त स्थिति संभालने के लिए वहां पहुँच गये। समस्या बहुत गंभीर थी किन्तु शास्त्री जी की दूरदर्शिता, प्रतिभा और राजनीतिक अन्तर्दृष्टि ने उस भीषण परिस्थिति को इतनी सुचारुता से संभाला कि षड्यंत्र-कारियों की योजना ताश के महल की भांति एक फूंक में ही गिर गयी। सर्प की भांति भयानक दीखनेवाली वस्तु अन्त में कच्ची रज्जु रेखा ही बन कर रह गयी। दिल्ली में माननीय शास्त्री जी को जब मैंने बधाई दी, तो उन्होंने मुझ से कहा था कि मामला दरअसल बहुत पेचीदा था, लेकिन कोशिश करने से सुलझ गया। मैंने जिज्ञासा से पूछा, आपने कौन सा मंत्र पढ़ दिया? उसके उत्तर में उनके मुख पर एक हलकी मुस्कान मात्र थी।

उसके पास ऐसा कौन सा परम लघु मंत्र था जिसके उच्चारण से बड़ी से बड़ी राजनीतिक समस्याएं भी वश में हो जाती थीं।

सन् १९६२ में प्रयाग के नागरिकों ने मेरे जन्म दिवस १५ सितम्बर को एक उत्सव मनाया। मेरे एक शिष्य ने शास्त्री जी से प्रार्थना करते हुए एक पत्र लिखा कि वे कृपया इस समारोह की अध्यक्षता स्वीकार करें। मैंने अपने विद्यार्थी से कहा कि शास्त्री जी इतने महान व्यक्ति है, केंद्रीय स्वराष्ट्र मंत्री हैं। उनके पास समय कहां। उन्हें कष्ट नहीं देना चाहिए। किन्तु थोड़े ही दिनो बाद मुझे ज्ञात हुआ कि माननीय शास्त्री जी ने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया और वे प्रयाग आ रहे हैं। १५ सितंबर को जब शास्त्री जी आफिसर्स ट्रेनिंग हाल में पधारे तो नागरिकों को कुतूहल मिश्रित आनन्द हुआ। श्री बालकृष्ण राव, श्री कृष्णदास, डा० लक्ष्मीनारायण लाल, श्री गंगा प्रसाद पाण्डेय और श्री 'अज्ञान' के भाषणों के उपरान्त शास्त्री जी ने साहित्य की जो व्याख्या की, वह बड़ा मार्मिक था—

'साहित्य वह है जो जन में नयी शक्ति का संचार करे, संस्कृति को बल दे और सामान्य व्यक्ति को भी महान बना दे। साहित्यकार समय से ऊंचा है, परिस्थितियों से महान है।'

—रामकुमार वर्मा

लालबहादुर चले गये या कहें भारत के बहादुर लाल चले गये। ऊपर से नवनीत, अन्दर से दृढ़ चट्टान, पस्ता कद, पर विशाल हृदय, छोटे-बड़े सबकी समान रूप से सुननेवाले श्री लालबहादुर शास्त्री जब अपनी प्रसिद्धि के चरम उत्कर्ष पर पहुँचे तो मानो नियति को उनसे ईर्ष्या हो गई। उसने उन्हें छीन लिया।

मिष्टभाषी किन्तु दृढ़ संकल्पी शास्त्री जी युद्ध और शांति दोनों के विजेता और नेता बने। वह भी कुछ महीनों के अन्तर से। अपने प्रधानमंत्रित्व काल के अल्प समय में उन्होंने कुछ हिमालय जैसे बड़े और चट्टान जैसे मजबूत निर्णय किये। कच्छ के रन का फैसला जहाँ उनकी शांति की नीति का परिचायक था, वहाँ कश्मीर में पाकिस्तानी हमले के बाद उन्होंने युद्ध लद जाने पर बहादुर की तरह लड़ने का फैसला किया वह उनकी दृढ़ता का द्योतक था।

भारत का अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में मान बढ़ रहा है। युद्ध की जीत से भी बढ़कर ताशकन्द की शांति जीत ने भारत और उसके प्यारे पुत्र लालबहादुर की प्रतिष्ठा को ऊँचा उठाया। अब समय आ रहा था जब भारत संसार के बड़े-बड़े देशों के समकक्ष बैठकर अपनी शांति नीति को प्रभावकारी ढङ्ग से बढ़ाता। सच तो यह है कि जब

उनके कृतित्व की कलिका पल्लवित एवं पुष्पित हो रही थी तभी क्रूर काल ने उसकी पंखुड़ियाँ भूमि पर झार दी।

उनका डेढ़ वर्ष का कार्यकाल इतिहास में अपना अत्यन्त विशिष्ट स्थान रखेगा और उनके उत्तराधिकारी का मार्ग दर्शन करेगा।

—अक्षयकुमार जैन

आजकल हमलोग नैतिक शुद्धि को अधिक महत्व नहीं देते लेकिन उस पुराने शौर्यपूर्ण युग में ऐसी बात न थी। गांधी जी के प्रभाव से हम अपनी आत्माओं के बारे में बहुत विचार रखते थे और अपूर्णताओं एवं खामियों से असंतुष्ट रहते थे। मुझे ध्यान आता है कि शास्त्री जी अपनी आदतों के बारे में कितने जागरूक रहते थे और करनी में कितना संतुलन करते थे। यह संतुलन कुछ तो स्वाभावजन्य था और कुछ प्रयत्नसाध्य।

कारा जीवन पूर्णतः शान्तिपूर्ण नहीं था। वहाँ राजनीतिक बन्दियों, कभी-कभी जेल अधिकारियों और बहुधा बाहरी घटनाओं द्वारा नयी-नयी स्थितियां उत्पन्न होती रहती थीं। जेल के अन्दर इन स्थितियों के प्रति सही दृष्टिकोण के बारे में काफी मतभेद रहता था। वहां भी हमारे नेता होते थे। कुछ तो संतुलन बरतने की सलाह देते थे लेकिन कुछ लोग आग भी भड़काते थे। १६४२-४३-४४ में इलाहाबाद की नैनी जेल में हमलोगों की संख्या करीब दो सौ थी। श्री शास्त्री जी ने हमारे सामूहिक कारा-जीवन में अद्वितीय स्थान प्राप्त किया। यह देखा गया कि वे ऐसे व्यक्ति थे जो एक ओर तो गभीरता, विनम्रता और गहन राजनीतिक दूरदर्शिता से संपन्न थे—जो जेल में शान्तिपूर्ण एवं उपयोगी जीवन बिताने के लिए अपेक्षित है—और दूसरी ओर उनमें जेल अधिकारियों के अत्याचारों के सामने आत्मसम्मान तथा प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए आवेश भी भरपूर था। वे जेल में बहुधा उन संघर्षों का नेतृत्व करते थे और अन्ततः सफलता प्राप्त करते थे।

मैंने शास्त्री जी को कभी कट्टर पुरातन पंथी नहीं पाया। वे आत्म-सुधार के लिए गंभीर, सतत एवं उत्साहपूर्ण प्रयत्न तो जरूर करते थे पर अपने मित्रों और साथियों के साथ बड़ी बेतकल्लुफी से पेश आते थे। उनका विनोद बोध शानदार था। वे दूसरों की कमजोरियों पर चोट नहीं करते थे। इन गुणों के बावजूद उनके प्रतिद्वंद्वियों और प्रतियोगियों का अभाव नहीं था, जो उनकी प्रतिष्ठा को आघात पहुँचाने के लिए तैयार रहते थे लेकिन उनको किसी न किसी तरह इसमें बड़ी कठिनाई महसूस होती रही।

शास्त्री जी क्रीड़ावान थे किन्तु क्रीड़ांगन में गंभीर हो जाते थे। हम दोनों अक्सर विपक्ष में बैडमिंटन खेलते थे। वे मुझे हराने में कोई कसर नहीं उठा रखते थे पर भारत के प्रधानमंत्री का इस दिशा में हमेशा सफलता मिलती रही हो, ऐसा नहीं था।

शास्त्री जी की छाप प्रतिभाशाली व्यक्ति जैसी नहीं पड़ी, पर उनकी गहन राजनीतिक सुझबूझ के बारे में कोई गलतफहमी नहीं रही। वह स्थिति के मूलतत्व को ग्रहण करके धैर्यपूर्वक तर्कसंगत और संतोषजनक निर्णय देते थे। उनका निर्णय परस्पर विरोधी दृष्टिकोणों का समन्वय करता हुआ ही प्रतीत होता था।

—सादिक अली

इलहाबाद में मुट्ठीगंज में बहुत अरसे से शास्त्री जी के पास एक किराये का मकान था। यह मकान बहुत छोटा था। चार-छः आदमी भी सुविधा से उसमें बैठकर बात नहीं कर सकते। जब शास्त्री जी यहाँ आते थे, उनसे मिलनेवालों से सड़क तक भर जाती थी। क्योंकि जिले भर के साधारण कार्यकर्ता उनसे मिलने के लिए दौड़ पड़ते थे, हर एक यह समझता था कि शास्त्री जी को उससे अधिक कोई नहीं जानता और शास्त्री जी उससे अच्छी तरह परिचित हैं। इसमें सचाई भी थी कि शास्त्री जी जिसे एकबार देख लेते, उसे फिर भूल नहीं सकते थे और वह भी इतना प्रभावित होता था कि यही समझता कि बस शास्त्री जी अपने ही हैं।

इस छोटे से मकान में न टेलीफोन न बिजली। शास्त्री जी जब आते थे तब अस्थायी तौर से बिजली और टेलीफोन की व्यवस्था की जाती थी। कई बार ऐसा हुआ कि बिजली की व्यवस्था नहीं हो पाई और इन कमियों में ही शास्त्री जी को प्रयाग में समय बिताना पड़ा।

मैं अतीत के दूर-सुदूर अंधकार में भटक गया और एक प्रकाशपुंज दिखाई दिया। एक झोंपड़ी में लघु दीपक के क्षीण प्रकाश में राजकाजव्यस्त महामन्त्री चाणक्य-सोचा, कितनी समानता है।

इस परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए कई मित्रों ने सलाह दी की वे राजभवन में ठहरा करें। पर शास्त्री जी ने इस सुझाव को विचारणीय न समझा।

और बराबर अपने उसी मकान में आकर ठहरते थे।

दो बातें जन-साधारण में बहुत चर्चा का विषय हैं। जिनमें एक तो यह है कि कभी सहयोगियों और कार्यकर्ताओं ने सरदार पटेल को हंसते हुए नहीं देखा। हालांकि

वे बड़े विनोदी थे। पर उनके बारे में यही प्रसिद्ध था कि वे सदैव गंभीर रहते हैं। मनोविनोद का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं है।

शास्त्री जी के बारे में यह प्रसिद्ध है कि उन्हें कभी गुस्सा नहीं आती। भयानक संकट के अवसरों और संगठन की उलझनों में भी वे शांत रहते थे और उनके चेहरे पर सदैव खेलती रहनेवाली मुस्कान कभी तिरोहित नहीं होती थी।

एक बार मैंने उन्हें गुस्सा होते हुए देखा था। एक व्यक्ति शास्त्री जी से बातें करते करते यह कह बैठा कि इससे तो अंग्रेजी राज्य अच्छा था।

शास्त्री जी का चेहरा तमतमा उठा। आँखों के डोरे लाल हो गये और लगा कि जैसे उनके मर्म पर गहरा आघात लगा हो, बोले—'तो आप समझते हैं कि वे फिर लौटकर आयेंगे। आप उनको लौटाना चाहते हैं। देश-प्रेम, देश-भक्ति और स्वतन्त्रता का आपके जीवन में कोई महत्व ही नहीं है। अपने छोटे से स्वार्थ की पूर्ति न होते देखकर आप यहाँ तक सोच गये। आराम ही आपके जीवन का मूल है, और वही मापदंड है।'

मैं समझता हूं कि यदि वह सज्जन शास्त्री जी को दो-चार भली-बुरी बातें भी कह देते तो उनपर कोई असर न होता और उनके चेहरे पर वही स्वाभाविक हँसी खेलती रहती।

पर, उन्होंने तो समष्टि के सामने व्यष्टि को प्रधानता दी थी। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को उन्होंने देश और समाज से अधिक महत्व दिया था।

और यह विचार मात्र ही शास्त्री जी के लिए असह्य था।

नई दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस के प्रधान कार्यालय में शास्त्री जी को नेहरू जी ने महामन्त्री बनाकर बुला लिया था। शास्त्री जी दफ्तर को एक नया रूप दे रहे थे ताकि उसकी कार्यशक्ति और क्षमता बढ़े। उन दिनों शास्त्री जी विण्डसर प्लेस पर रहते थे। दफ्तर में देर हो जाती थी और ऐसा होता था कि काम करते करते रात के १२-१ तो साधारण तरीके से बज ही जाते थे। शास्त्री जी वहीं कुर्सियों पर सो जाते थे।

जब काम का भार और बढ़ा तथा कार्यकर्ताओं को आने जाने में और भोजन में दिक्कत होने लगी, तो भोजन की व्यवस्था वहीं कर दी गई। शास्त्री जी जब भोजन करने बैठे, तो तत्कालीन स्थायी मंत्री ने उनके भोजन के साथ मक्खन और घी भी प्रस्तुत किया।

शास्त्री जी ने पूछा—क्या यह प्रबन्ध सब कार्यकर्ताओं के लिए है ?

जब पता चला कि मक्खन और घी की व्यवस्था केवल उन्हीं के लिए है, तो शास्त्री जी ने कहा—यह तो ठीक नहीं। मुझ में और कार्यकर्ताओं में कोई अन्तर है, ऐसा मुझे दिखाई नहीं देता।

शास्त्री जी बराबर यही पूछते रहते थे कि सबने खाना खा लिया, कोई रह तो नहीं गया।

रात को १२ बजे तक लोगों का तांता लगा रहता था। कोई टिकट की बात करने आता था कोई किसी समस्या के लिए चला आ रहा था।

जब रेलवे दुर्घटना की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर शास्त्री जी ने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया, तो मैं इस फिलासफी को नहीं समझ सका।

मेरी समझ में यह नहीं आया कि इस दुर्घटना में शास्त्री जी की क्या जिम्मेदारी है, उनका क्या अपराध है।

जितना सोचता गया, उतना ही उलझता गया, अपराध कर्मचारियों का था, उन्हें दंडित करना था। पर यह क्यो ?

आखिर एक दिन मैंने शास्त्री जी से पूछा ही लिया—'यह बताइये कि अपराध तो कर्मचारियों का है, आप पर तो उसका कोई दायित्व नहीं, फिर आपने अपने को डिसमिस क्यों कर लिया ?

शास्त्री जी मुस्कराए और बोले—'डिसमिस शब्द खूब कहा। वास्तव में मैंने अपने को डिसमिस ही किया है। मैं यह अनुभव करता हूं कि मेरे प्रशासन में कहीं कोई कमी अवश्य रही है, तभी यह संभव हुआ। हम लोगों ने महामानव गांधी के चरणों में बैठकर कुछ सीखना चाहा। उन्होंने एक बार कहा था, मंत्रियों को कुरसी पर जमकर नहीं बल्कि हल्के से बैठना चाहिए, गलती कोई करता था, दंड बापू अपने को देते थे। अब आप बताइये कि मैंने इसमें नया क्या किया ? वही तो किया, जो हमारे रहनुमाने हमें सिखाया।'

और सिद्धांत की इस गहराई, गरिमा और निष्ठा के प्रति मेरा मस्तक अपने आप झुक गया। आज उनके निधन पर कहूं भी तो क्या ?

हेमवतीनंदन बहुगुणा

१९२० के दिसम्बर में गांधी जी के आह्वान पर छेड़ गए असहयोग आन्दोलन के शुरू होने पर बहुत से विद्यार्थी अपना स्कूल और कालेज छोड़कर उस आन्दोलन

में शामिल हो गए। उस समय शास्त्री जी के साथ ही मैं तथा अन्य कई सहपाठियों ने भी अपना स्कूल छोड़कर इस आन्दोलन में भाग लिया। यहीं से श्री लालबहादुर तथा कई और लोगों के राजनीतिक जीवन का प्रारम्भ हुआ।

लालबहादुर जी के पिता का देहान्त बाल्यावस्था में ही हो गया था। परन्तु उनकी माता जी आज भी जीवित हैं। मेरी समझ में स्वर्गीय पंडित निष्कामेश्वर मिश्र के अतिरिक्त उनकी माता का भी शास्त्री जी के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उनके मौसा बाबू रघुनाथ प्रसाद का, जिनके यहां रहकर वह पढ़ते थे, असर शास्त्री जी पर पड़ना स्वाभाविक ही था।

शास्त्री जी, जैसा कि सभी लोग जानते हैं, कद में छोटे थे। उस समय और भी छोटे थे। घर के सभी लोग उन्हें नन्हें कहा करते थे। वह भी नानक के इस दोहे को बराबर दोहराया करते थे।

नानक नन्हें में रह्यो जैसी नन्ही दूब
और ऊख सुख जाएगो दूब-दूब ही रूब

यों तो हम सभी कभी न कभी कोई गीत या पद्य गुनगुनाते हैं। मैंने शास्त्री जी को भी अक्सर उक्त दोहे को दोहराते हुए सुना था। ऐसा मालूम होता है कि उस समय उन्होंने निश्चय कर लिया था कि सारी जिन्दगी वह विनम्रता, सरलता और सचाई से रहेंगे।

जब मैं बीते दिनों की याद करता हूं, तो शास्त्री जी के संबंध में मेरे सामने एक सुन्दर सा नक्शा खिंच जाता है। यह सत्यनिष्ठ ही नहीं, बड़े ही कर्मठ, अथक काम करने वाले, तपोनिष्ठ व्यक्ति भी थे। ३५-३६ की बात है, वह उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा स्थापित उत्तर प्रदेश भूमिसुधार कमेटी के मंत्री थे और बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन उसके सभापति। उस कमेटी में जिस परिश्रम से उन्होंने रात-दिन काम किया, उसके दर्शन उस वक्त उन सब लोगों ने किए होंगे, जो उस समय शास्त्री जी के साथ रहे। वह रात-दिन उस कमेटी के सम्बन्ध में कुछ न कुछ लिखते पढ़ते रहते थे। रात को ११-१२ तक बज जाते थे, लेकिन उनका काम खत्म नहीं होता था। तब मैं और शास्त्री जी उस समय साथ ही रहते थे। मेरी एक छोटी भतीजी ने एक दिन मुझसे पूछा—'चाचा, शास्त्री जी दिन-रात इतना काम क्यों करते हैं? इतने छोटे, कमजोर से आदमी हैं, उन्हें इतना काम नहीं करना चाहिए।'

उसने मुझसे कहा कि मैं उनको मना करूं कि वह इतना काम न किया करें। लेकिन वह कहां किसी की सुनते। बाद में इस विषय पर जब रिपोर्ट प्रकाशित हुई

तो उसने सारे देश को एक प्रशस्त मार्ग दिखलाया और धीरे धीरे सभी प्रदेशों ने उस रिपोर्ट को स्वीकार किया। बाद में जब दोबारा कांग्रेस शासन में आई तो उसने उस रिपोर्ट के आदर्श पर पूरी तरह से देश में जमींदारी का उन्मूलन किया। दिन रात लगन से काम करने की शक्ति और कर्मठता को देखकर मेरे मन में कुछ ऐसे विचार आया करते थे कि वह व्यक्ति अपने चरित्र तथा परिश्रम के बल पर ऊँचे स्थान तक जाने के योग्य है और उसके रास्ते में कोई चीज रुकावट नहीं डाल सकती। मौत के सामने उनको झुकना पड़ा। उनके निधन से मेरी क्या क्षति हुई है वह शब्दों में नहीं लिख सकता।

त्रिभुवननारायण सिंह

साहबान यह इंसान कि आधा फरिश्ता और आधा शैतान होता है, उसको जो चीज हैवानों से ऊपर उठाती और बनाती है, वह न उसकी वजारत है न हुकूमत आदर्श है।

लेकिन आदर्श भी कई तरह के होते हैं। कोई दुनियाँ में युद्ध लेकर आता है कोई शांति। कोई दुनियां में दोस्ती के बीज बोता है कोई दुश्मनी की। लेकिन हमारे शास्त्री जी, साहबान उसके बारे में आप को क्या बताऊँ, बस यूँ समझिये कि वह सर से पांव तक दोस्ती ही दोस्ती थे। जहाँ दुश्मनी ने सर उठाया, कोई किसी से टकराया, शास्त्री जी मुस्कराते हुए वहां पहुँच जाते और दुश्मनी दोस्ती में बदल जाती।

कांग्रेस के सभी नेता किसी न किसी बात के लिये मशहूर हैं। कोई बहुत गर्म है कोई बहुत नम्र, कोई आग लगाता है कोई बुझाता है। शास्त्री जी सिर्फ दोस्ती के लिये महान थे।

साहबान आप पूछते हैं तो बताऊंगा, भीतर का राज बाहर लाऊंगा कि शेर और बकरी को घाट पानी पिलाना, भेड़ और भेड़ियों को एक चारागाह में चराना आसान है, लेकिन दो कांग्रेसी नेताओं को एकमंच पर बिठाना मुश्किल। एक आता है तो दूसरा उठ जाता है, एक मुस्कराता है तो दूसरा मुंह चिढ़ाता है।

यह तो शास्त्री जी का चमत्कार था कि उन्होंने टहोके दे कर लोगों को उठाया, उठा के बिठाया और जैसे तैसे सरकार का काम काज चलाया। इसी बीच में लड़ाई भी आ गई और देश को लड़ना पड़ा।

तक़दीर यही है कदमों की एक जाता एक उखड़ता है
सबसे निराला गिरना उसका जिसको कि लड़ना पड़ता है

तो जब शास्त्री जी को लड़ना पड़ा तो वह लड़े भी और ईमानदारी की बात है कि खूब लड़े लेकिन वह न लड़ाई के लिये थे न लड़ना चाहते थे। उनका आदर्श दोस्ती था।

जब वह दोस्ती के लिये ताशकंद रवाना हुए तो सारी दुनियाँ ने शोर मचाया। बड़े-बड़े ज्योतिषी लोगों ने साफ-साफ बताया कि दुनियाँ में सब कुछ मुमकिन है, ताशकंद वार्ता कामयाब नहीं हो सकती।

जय हो शास्त्री जी की उन्होंने असंभव को संभव बना दिया, जो कहा वह कर दिखाया और भारत और पाकिस्तान कुछ बातों पर एक हो गये। यह शास्त्री जी का आखिरी काव्य था।

अपना काम खत्म करने के बाद दुनियाँ में वही रहना पसन्द करते हैं जिनका कोई आदर्श न हो, जो ढीठ हो। लेकिन शास्त्री जी ने काम खत्म करके एक मिनट भी इस दुनियाँ मे रहना गवारा न किया।

जब तक दुनियाँ को दोस्ती की जरूरत है, दुनियाँ शास्त्री जी को याद रखेगी उनका नाम लेकर लोग दोस्ती करेंगे। उनका नाम लेकर रूठेंगे, उनकी दोस्ती की दुनियाँ कसम खायेगी। कोई संत कवि कह गये है—

जब तुम आये जगत में जगत हँसा तुम रोये
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसो जग रोये

और आज शास्त्री जी के लिये जग रो रहा है।

—कैफी आजमी

बात शायद १९६० की है। दिल्ली के 'भोजपुरी समाज' ने एक कवि गोष्ठी आयोजित की थी। काशी से हम लोग दिल्ली गये थे। गोष्ठियाँ कई हुई पर जो गोष्ठी श्री त्रिभुवन नारायण सिंह के आवास पर हुई उसकी अध्यक्षता शास्त्री जी ने ही की थी।

अभी हम लोग पहुँचे ही थे कि शास्त्री जी आ गये वातावरण मर्यादित एवं गंभीर हो गया। मेरे कान में फुसफुसाते हुए एक भाई ने कहा 'जरा जम के सुनाना, शास्त्री जी को सुनाना है।'

'यार! नेहरू जी को सुना चुका हूँ कैसी बात करते हो' मैंने हँसी में कहा था।

तभी शास्त्री जी पूछ बैठे, 'क्या बात है?' हम दोनों झेंप मिटा ही रहे थे कि फिर बोले 'बोलो, बोलो।'

अपने मित्र को मैं दबा रहा था पर वह छिपा नहीं सके और सब कुछ उन्होंने बता ही दिया।

—शास्त्री जी ने ... जबाव दिया 'भोजपुरी भोजपुरियों को सुनाओ तो पता चले।

—चन्द्र शेखर मिश्र

श्री लालबहादुर जी के लिए कुछ लिखना मेरे लिए बड़ा कठिन है। भारत के वे प्रधान मन्त्री थे। मैं पेट के लिए भीख मांग कर जीनेवाला एक साधारण लेखक या पत्रकार। मुझसे मिलनेवाले यह कह कर चले जाते हैं कि आप से तो कोई काम नहीं निकलता। मैं निस्सहाय उनकी निन्दा सुनकर चुप रह जाता हूँ।

तक मुझे याद आता है कि आदमी अपनी लगन तथा धुन से कितना आगे बढ़ सकता है। तपस्या चाहिए, त्याग चाहिए, सच्चाई चाहिए। अपने नेता तथा गुरु के प्रति आस्था चाहिए। और सबसे ऊपर है—धीरज चाहिए। तब लालबहादुर बना जा सकता था। मुझे याद है जब हम काशी विद्यापीठ में पढ़ते थे। बड़े बड़े धुरंधर अध्यापक थे हमारे आचार्य नरेन्द्र देव, डा० सम्पूर्णानन्द, श्री श्रीप्रकाश, श्री योगेश चट्टोपाध्याय, श्री रामशरण। एकबार मैंने खीझकर उन्हें पत्र लिखा था। आपके सहायकगण झूठा जवाब फोन पर देते हैं। टालू बातें करते हैं। तुरन्त उत्तर मिला—मिनिस्टर के यहाँ यह सब होती ही हैं। केवल सीधा, सच्चा आदमी ही यह कह सकता है। मुझे फिर याद आ गई। आज के ४७ वर्ष पूर्व की घटना। सन् १९२२ में गया कांग्रेस का अधिवेशन था। परिवर्तनवादी तथा अपरिवर्तन का झगड़ा चल रहा था। देशबन्धु चित्तरंजन दास कौंसिल प्रवेश के हिमायती थे। राजगोपालाचारी कट्टर विरोधी थे। उस समय त्रिभुवन नारायण सिंह डा० राजेद्रप्रसाद के निजी सचिव बन गये थे। विद्यापीठ के हम सभी छात्र स्वयं सेवक बन कर गये थे। उसमें मैं भी था। लालबहादुर, ज्ञानस्वरूप, अलताफ हुसेन, सभी उस दल में थे। रात को पगड़ी बांधे- हाथ में डंडा लिए लालबहादुर जी गश्त लगाया करते थे। वह भी दिन थे। याद कीजिए तो कितनी चीजें याद आ जाती हैं। एक सम्भ्रान्त परिवार की सुन्दर लड़की थी। उसके लिये अच्छा वर ढूँढा जा रहा था। लड़की सुन्दर थी। लड़का भी सुन्दर होना चाहिए? श्री लालबहादुर जो जवानी में सुन्दर थे। बचपन में और भी अधिक सुन्दर रहे होंगे। लड़का पसन्द आ गया। पर लड़की की माता को एतराज था कि लड़का बराबर जेल जा रहा है। लड़की का जीवन खराब हो जाएगा। फिर भी लड़का अच्छा था, सुशील था, पढ़ा लिखा था। शादी हो गई। माता को सन्देह बना ही रहा, वे क्या जानती थीं कि भारत के भावी प्रधान मंत्री को अपनी पुत्री सौंप रही हूँ। उनके असामयिक निधन से भारी क्षति हुई है। उनके प्रति मेरी हार्दिक शोक संवेदना है।

परिपूर्णानन्द वर्मा